अणुव्रत

अहिंसक-नैतिक चेतना का प्रतिनिधि पाक्षिक

वर्ष : 57 अंक : 04 ■ 16-31 दिसम्बर, 2011

संपादक

महेन्द्र जैन

प्रबन्ध संपादक

प्रदीप संचेती

सम्पर्क सूत्र

अणुव्रत महासमिति

अणुव्रत भवन,
210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग
नई दिल्ली--110002
दूरभाष : (011) 23233345
फैक्स : (011) 23239963
e-mail : anuvrat_mahasamiti@yahoo.com
Website : anuvratinfo.org

संपादक-सम्पर्क

अर्हम्, 118, कैलाशपुरी
टोंक रोड़, जयपुर-302018
मो.: 09828158454
e-mail : mahendrajain3@rediffmail.com

सदस्यता शुल्क :

	भारत में	*विदेश में*
वार्षिक	रु. 300	US $ 15
त्रैवार्षिक	रु. 700	US $ 35
दस वार्षिक	रु. 2000	US $ 110
पत्रिका-योगक्षेम	रु. 5100	US $ 250

विज्ञापन सहयोग :

आवरण पृष्ठ चतुर्थ 'रंगीन'	रु. 20,000
आवरण पृष्ठ 2 व 3 'रंगीन'	रु. 10,000
साधारण पृष्ठ 'पूरा'	रु. 5,000
साधारण पृष्ठ 'आधा'	रु. 3,000

इस अंक में.....

■ **दिशा-बोध**
-- तमसो मा ज्योतिर्गमय — *आचार्य महाश्रमण* — 3

■ **जीवन-दर्शन**
-- वर्तमान की समस्याएं : गीता का समाधान — *आचार्य महाप्रज्ञ* — 5

■ **अणुव्रत की बात**
-- आचार्य तुलसी और डॉ. राधाकृष्णन् की वार्ता — *साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा* — 8
-- अणुव्रत के अहिंसा-दर्शन का समर्थन — *मुनि राकेशकुमार* — 11

■ **मन्थन**
-- मानवता के मसीहा यीशु का नैतिक चिन्तन — *साध्वी परमयशा* — 13
-- करुण-हृदय फूल मुरझा जाते हैं! — *जतनलाल रामपुरिया* — 15
-- मानवता की धरती पर अपराधों के रक्तबीज — *साध्वी कनकश्री* — 18

■ **प्रेरणा के प्रतिमान**
-- निष्काम-कर्मयोगी डॉ. शरदकुमार — *अणुव्रत डेस्क* — 21

■ **जीने की कला**
-- हम अपने कर्तव्यों के प्रति कितने सजग हैं? — *डॉ. चंचलमल चोरड़िया* — 22
-- जीवन को महानता की कसौटी पर कसें — *ललित गर्ग* — 24
-- आपकी हमसफर - सम्मान की हकदार — *अनिल कुमार* — 26

■ **बाल-वाटिका**
-- अपराध के भंवर में मदहोश बाल-मन — *सुप्रिया* — 27
-- बड़े दिन का उपहार (कहानी) — *मंजुश्री* — 29

■ **काव्य**
-- होंगे सपने साकार — *शंकर सुल्तानपुरी* — 28
-- गजलें — *अक्षय गोजा* — 30

■ **लघु कथाएं**
-- मरा हुआ संन्यासी! — 4
-- वर्चस्व अपना-अपना — *रमेश कोठारी* — 20
-- जीवन देने का सुख — 23

■ **विविध**
-- बोलते-प्रसंग — 7
-- झांकी हिन्दुस्तान की — 17
-- पाठक-दृष्टि — 25
-- राष्ट्र-चिन्तन — 31
-- अणुव्रत गति-प्रगति — 33-39
-- अध्यक्ष की कलम से... — 40

अणुव्रत में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचारों से सम्पादक/प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है।

जरूरी है अहिंसा की सही समझ...

पिछले दिनों नई दिल्ली में जनता के बीच वरिष्ठ केन्द्रीय मंत्री एवं देश के कद्दावर नेता शरद पवार के गाल पर एक आक्रोशित युवक ने यह कहते हुए थप्पड़ मार दिया कि वह महंगाई और भ्रष्टाचार से तंग आ चुका है। इस थप्पड़ ने सारे देश में झनझनाहट फैला दी। पवार बिना कोई प्रतिक्रिया दिखाये पूरी संजीदगी के साथ गाल पर हाथ फेरते हुए चेहरे पर गम्भीर मुस्कान ओढ़कर चुपचाप अपनी कार में जा बैठे। चैनलों ने 'सटाक-चटाक' को बार-बार दिखाकर चटखारे लिये तो गम्भीर मीडिया और प्रबुद्धवर्ग ने इस घटना को बढ़ती महंगायी और भ्रष्टाचार से निबटने में असफल केन्द्रीय सरकार के विरुद्ध युवावर्ग में व्याप्त गहरे असंतोष और हताशा की बानगी मानते हुए इस प्रकार की अभिव्यक्ति को असभ्य, अवैध और बर्बर बताया, वहीं राजनीति से जुड़े लोगों ने प्रजातन्त्र पर हमला कहकर इसकी घोर निन्दा की। हालांकि, 'शाबाश!' कहने वाले भी कम नहीं थे।

इसी क्रम में एक महत्त्वपूर्ण बात और हुयी। गाँधीवादी अन्ना हजारे को उनके गाँव में जब इस घटना की जानकारी दी गयी तो उनके मुँह से सहसा निकल पड़ा– ''थप्पड़ मारा, क्या एक ही मारा?'' सुनकर सब चौंक उठे। यद्यपि अन्ना की तीखी टिप्पणी को शरद पवार यह चुटकी फैंककर टाल गये कि– ''शायद यह कोई नया गाँधीवाद है!'' पर, गाँधी के प्रतीक के रूप में राष्ट्र के मानस पर छाये अन्ना हजारे के ये बोल उनकी सोच पर अनेक प्रश्न-चिन्ह लगा गये। एक ओर तो अन्ना ने युवक की हिंसक वृत्ति का समर्थन किया, उसको अपर्याप्त माना, दूसरी ओर उनकी टिप्पणी 'भड़काऊ' जैसी भी लगी। हालांकि, अन्ना भी तुरन्त अपने कथन के दंश को पहचान गये और घटना की घोर निंदा करते हुए उन्होंने स्पष्ट किया कि वास्तव में वे तो यह जानना चाहते थे कि पवार को अधिक चोट तो नहीं लगी। हमें ज्ञात है– इससे पहले भी अन्ना 'भ्रष्टाचारियों को फांसी देने' की बात कह चुके हैं। वह कथन भी गाँधीवाद से मेल नहीं खाता। गाँधी की अहिंसा घोर से घोर आक्रांता पर भी हाथ उठाने की अनुमति नहीं देती है।

यहां हमें स्वतंत्रता संग्राम का एक प्रसंग याद आ रहा है। गाँधीजी ने देशव्यापी 'असहयोग आन्दोलन' की घोषणा कर दी थी। इसी बीच आन्दोलनकारियों ने चौरा-चौरी थाने में आग लगा दी। कई पुलिसकर्मी जल गये। इस हिंसक कार्यवाही से महात्मा जी इतने आहत हुए कि कांग्रेस पार्टी के भारी विरोध के बावजूद उन्होंने आन्दोलन को यह कहते हुए वापिस ले लिया कि अभी हमारा देश सत्याग्रह के लिए तैयार नहीं है। उन्हें शत्रु के प्रति भी हिंसा बर्दाश्त नहीं थी। तीखी प्रतिक्रियाएं और भड़काऊ भाषणों से जंगल में आग की तरह हिंसा कैसे फैलती है, इतिहास के पन्ने उन त्रासदियों से भरे पड़े हैं। किसी भी प्रकार के आन्दोलन की अगुवाई करने वाले नेताओं को यह सोचना-समझना चाहिए। अन्ना ने गाँधी का मार्ग चुना है, उनसे देश को बड़ी आशाएं हैं, उनका हर शब्द महत्त्वपूर्ण है, प्रभावी है।

बुद्ध ने कहा था– पापी से नहीं– पाप से घृणा करो, महावीर ने कहा था– किसी को शत्रु मत समझो, यीशु ने उनको सूली पर चढ़ाने वालों को भी निर्दोष ही माना; आचार्य तुलसी ने बुद्ध, महावीर, यीशु, गाँधी आदि महान् आत्माओं के निर्देशों को एक सूत्र में पिरोया और अहिंसक-नैतिक आन्दोलन के रूप में 'अणुव्रत' का सूत्रपात किया। उनका सुदृढ़ विश्वास था– यदि व्यक्ति सुधरेगा तो समाज स्वस्थ बनेगा और राष्ट्र भी स्वतः ही उन्नति के पथ पर अग्रसर होगा। आवेश और आक्रोश कभी समस्याओं का समाधान नहीं करते, सौहार्द, सहिष्णुता, सद्भाव मैत्री और अहिंसा की सही समझ से बड़ी से बड़ी समस्या हल हो सकती है। अणुव्रत यही सिखाता है।

मानवता के मसीहा यीशु मसीह के पावन जन्म-दिवस पर 'अणुव्रत' के इस अंक में यीशु के नैतिक चिन्तन पर विशेष लेख के साथ-साथ गीता-दर्शन में वर्तमान समस्याओं के समाधान तथा ज्ञान-ज्योति का दिशा-बोध कराने वाले चिन्तनपरक आलेख तथा राष्ट्र-निर्माता हस्तियों के साथ अणुव्रत प्रवर्तक की ऐतिहासिक वार्ताओं के क्रम में इस बार प्रस्तुत है महान् दार्शनिक पूर्व राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् के साथ 'अणुव्रत की बात'।

'मंथन', 'प्रेरणा के प्रतिमान', 'जीने की कला' तथा अन्य प्रमुख शीर्षकों के अन्तर्गत दी गयी सामग्री सुधी पाठकों को विशेष रुचिकर लगेगी, हमें विश्वास है।

'अणुव्रत' की ओर से सम्पूर्ण मानव जाति के प्रति बड़े दिन (क्रिसमस-डे) की मंगल कामनाएं!

– महेन्द्र जैन

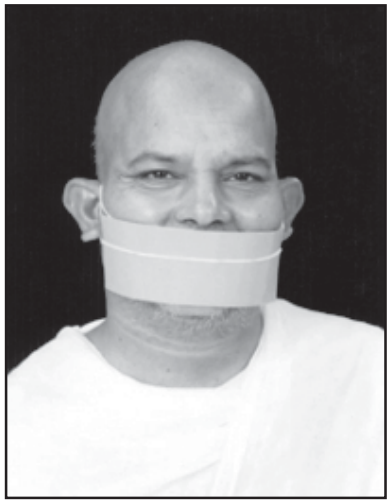

तमसो मा ज्योतिर्गमय

● आचार्य महाश्रमण ●

संसार में ऐसे अनेक प्रतिभाशाली व्यक्ति हुए हैं जिन्होंने ज्ञान के बल पर अनेक महत्वपूर्ण कार्य किए हैं। साधारण और प्रतिभाशाली व्यक्ति में यही अंतर होता है–एक बाहरी आकर्षणों में खोया रहता है, दूसरा आंतरिक यथार्थ में। एक भोग-विलास में प्रवृत्त रहता है, दूसरा ज्ञान की आराधना में। एक पदार्थों पर आश्रित रहता है, दूसरा आत्मा पर।

जैन वाङ्मय का एक सुन्दर सूक्त है **'नाणं पयासयरं।'**– ज्ञान प्रकाश करता है। प्रश्न हो सकता है, अंधकार अच्छा है या बुरा? सामान्यतः अंधकार को अच्छा नहीं माना जाता परंतु कभी-कभी अंधकार भी अच्छा लगता है। प्रकाश को प्रायः अच्छा माना जाता है; किंतु कभी-कभी प्रकाश भी मन को सुहावना नहीं लगता। जब रात को सोने का समय हो, उस समय ट्यूबलाइट या तेज पावर का बल्ब जला दिया जाए तो वह प्रकाश अच्छा नहीं लगता। यदि किसी को ध्यान की गहराई में पहुंचना है, कोई व्यक्ति तनावग्रस्त है और वह शांति पाना चाहता है, किसी को कुछ गंभीरता से चिंतन करना है तब भी अधिक प्रकाश अच्छा नहीं लगता। हां, किसी भयंकर अटवी को पार करना हो, अध्ययन करना हो या दैनंदिन कार्य संपादित करने हों तो प्रकाश की उपयोगिता होती है। उस समय अंधेरा अच्छा नहीं लगता। मूल्यांकन दोनों का होना चाहिए, अंधकार का भी और प्रकाश का भी।

हमारे भीतरी जगत में भी दोनों का अस्तित्व है अंधकार और प्रकाश। राग, द्वेष, घृणा, क्रोध, भय व अज्ञान जहां अंधकार के प्रतीक हैं वहीं क्षमा, मैत्री, करुणा, वीतरागता और ज्ञान प्रकाश के प्रतीक हैं। भीतरी अंधकार उपादेय नहीं हो सकता, किसी के लिए भी हितकारी नहीं हो सकता और न ही सुफल होता है। उसका फल हमेशा कटु ही होगा। प्रार्थना की गई

'तमसो मा ज्योतिर्गमय,
असतो मा सद्गमय,
मृत्योर्मा अमृतं गमय।'

अंधकार से मुझे प्रकाश की ओर ले जाओ, असत् से मुझे सत् की ओर ले जाओ, मृत्यु से मुझे अमरत्व की ओर ले जाओ। अज्ञान रूपी अंधकार से ज्ञान रूपी प्रकाश की ओर यात्रायित होने वाला व्यक्ति ही अमरत्व को प्राप्त कर सकता है।

'अज्ञानं खलु कष्टम्' अज्ञान को बहुत बड़ा कष्ट माना गया। जितने भी दुःख हैं उन सबका कारण अज्ञान को बताया गया। जब तक व्यक्ति में ज्ञान का विकास नहीं होता तब तक वह नश्वर को अनश्वर, अयथार्थ को यथार्थ और पराए को अपना मान लेता है। जिज्ञासा हुई, अज्ञान क्या है? संपूर्ण ज्ञान का अभाव भी अज्ञान हो सकता है और मिथ्याज्ञान का प्रभाव भी अज्ञान हो सकता है। एक मुनि अभी दशवैकालिक का अध्ययन कर रहा है और एक मुनि द्वादशांगी का पारायण कर चुका है। इन दोनों में भी दशवैकालिक पढ़ने वाला मुनि द्वादशांगी पढ़ने वाले मुनि की अपेक्षा अज्ञानी माना जाता है। जब यह ज्ञान की तरतमता भी अज्ञानता को दर्शाती है तो मिथ्याज्ञान तो न जाने कितनों के दृष्टिकोण को विपरीत बना देता है और कितनों की समस्या के उलझे धागों को और अधिक उलझा देता है।

एक बार किसी छोटे से गांव में एक व्यक्ति बीमार हो गया। गांव में चिकित्सा की समुचित सुविधा नहीं थी। वह व्यक्ति डॉक्टरी जांच के लिए पास के किसी कस्बे में पहुंचा। डॉक्टर ने कई दिनों तक इंजेक्शन लेने का परामर्श दिया। बीमार व्यक्ति ने सोचा– दवा पेट में ही तो पहुंचानी है। इंजेक्शन के माध्यम से पहुंचाऊं या मुंह से, क्या फर्क पड़ता है? उसने तत्काल दवा को पात्र में निकाला और पी गया। परिणाम यह आया कि कुछ समय बाद उस आदमी की मृत्यु हो गई। जब यह व्यावहारिक अज्ञान भी जीवन को नष्ट करने वाला बन सकता है तो आत्मिक अज्ञान तो न जाने कितने जन्मों तक हमें भव-भ्रमण कराता रहेगा! जब तक व्यक्ति को अज्ञानता की अनुभूति नहीं होगी, हेय और उपादेय का विवेक नहीं होगा, शरीर की नश्वरता और आत्मा की अमरता को वह नहीं समझेगा तब तक व्यक्ति ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता।

आकाशवाणी हुई–'सुकरात से बड़ा ज्ञानी कोई नहीं है।' जनता सुकरात को धन्यवाद देने उमड़ पड़ी। सुकरात ने कहा– किसी ने गलत भविष्यवाणी कर दी, मैं ज्ञान नहीं हूं। जनता ने सुकरात से कहा– हमारी देवी झूठ नहीं बोलती। आप इस घोषणा को स्वीकार करें। सुकरात बोला–

मैं अपने अज्ञान को जानता हूं फिर सबसे बड़ा ज्ञानी कैसे हो सकता हूं?

जनता ने देवी के समक्ष सुकरात का कथन प्रस्तुत किया। देवी बोली– 'दुनिया में सबसे बड़ा ज्ञानी वह होता है जो अपने अज्ञान को जानता है।' सचमुच, अज्ञान को जानने वाला ही ज्ञान की दिशा में प्रस्थान कर सकता है।

व्यावहारिक जीवन में ज्ञान का जितना महत्त्व होता है, आध्यात्मिक जीवन में उससे कहीं अधिक महत्त्व होता है। जीवन के प्रत्येक पहलू को आलोकित करने के लिए ज्ञान ही सर्वोत्कृष्ट है। ज्ञान चेतना का अभिन्न मित्र है। जहां-जहां चेतना का प्रकाश है वहां-वहां ज्ञान की सत्ता को अस्वीकार नहीं किया जा सकता। चेतना को अस्वीकार नहीं किया जा सकता। हां, ज्ञान में तरतमता हो सकती है। किसी के पास बहुत कम ज्ञान होता है तो किसी के पास केवलज्ञान भी हो सकता है। ज्ञान, जीव की समस्त अवस्थाओं–सिद्ध-संसारी, सुप्त-जागृत, विकसित-अविकसित आदि सभी में विद्यमान रहता है।

प्रश्न हो सकता है, ज्ञान किसे मानें? मूलाचार में बताया गया–

जेण रागा विरज्जेज्ज,
जेण सेएसु रज्जदि।
जेण मेत्ती पभावेज्ज,
तं नाणं जिणसासणे।।

- जिसके द्वारा राग से विरक्ति हो, श्रेयस में अनुरक्ति हो और मैत्री भाव की प्रवृत्ति हो, जैन दर्शन में उसे ही ज्ञान कहा गया है। तात्पर्य है– जिस ज्ञान से आत्मा का हित हो, उसे महत्त्व दिया जाना चाहिए।

तात्त्विक दृष्टि से देखा जाए तो ज्ञान के अनेक प्रकार हो सकते हैं। एक वर्गीकरण है– इंद्रिय-सापेक्ष ज्ञान और इंद्रिय-निरपेक्ष ज्ञान। इंद्रिय-सापेक्ष ज्ञान में इंद्रियों के माध्यम से ज्ञान होता है। इंद्रियों के दो काम हैं ज्ञान और भोग। जो ज्ञान सीधा आत्मा से होता है, उसे आत्म-सापेक्ष या इंद्रिय-निरपेक्ष ज्ञान भी कहा जाता है। इस ज्ञान में किसी माध्यम की अपेक्षा नहीं रहती। इसके तीन भेद किए जा सकते हैं– अवधि ज्ञान, मनःपर्यवज्ञान और केवल ज्ञान। इस अतीन्द्रिय ज्ञान से सूक्ष्मतम पदार्थों को भी बिना आंख के देखा जा सकता है। बहुत दूरी से भी जाना जा सकता है। इसमें दूरी, दीवार, आवरण, तिमिर आदि कोई बाधक नहीं बनते। अवधिज्ञानी सूक्ष्मतम पदार्थों को जान सकता है। मनःपर्यवज्ञानी दूसरों की विचारधारा को जान सकता है और केवलज्ञानी तो तमाम रूपी-अरूपी, जड़-चेतन को जान सकता है, देख सकता है और समझ सकता है। नारक, तिर्यंच, मनुष्य, देव सभी को अतीन्द्रिय ज्ञान हो सकता है किंतु मनुष्य को जितना बड़ा और विस्तृत अतीन्द्रिय ज्ञान हो सकता है उतना बड़ा किसी दूसरे प्राणी को नहीं होता।

संसार में ऐसे अनेक प्रतिभाशाली व्यक्ति हुए हैं जिन्होंने ज्ञान के बल पर अनेक महत्वपूर्ण कार्य किए हैं। साधारण और प्रतिभाशाली व्यक्ति में यही अंतर होता है– एक बाहरी आकर्षणों में खोया रहता है, दूसरा आंतरिक यथार्थ में। एक भोग-विलास में प्रवृत्त रहता है, दूसरा ज्ञान-आराधना में। एक पदार्थों पर आश्रित रहता है, दूसरा आत्मा पर।

जैनदर्शन के अनुसार ज्ञान की उत्कृष्ट स्थिति है– केवलज्ञान। केवलज्ञानी नियमतः उत्कृष्ट चारित्र (यथाख्यात चारित्र) का स्वामी होता है। केवलज्ञान का अभिप्राय है आत्मोपलब्धि होना। आत्म-उपलब्धि का अभियान जीवन में सबसे महत्त्वपूर्ण अभियान है। इससे बड़ी कोई चोटी नहीं, जिस पर आदमी कभी चढ़ा हो। इससे अधिक कोई गहराई नहीं, जिसमें मनुष्य ने कभी डुबकी लगाई हो। आत्म-दर्शन ही सबसे बड़ी गहराई है और आत्मदर्शन ही सबसे बड़ी ऊंचाई है, अपेक्षा है व्यक्ति अपनी शक्ति को पहचाने और उसका सदुपयोग करे। ■

मरा हुआ संन्यासी!

एक *सैनिक युद्ध के मोर्चे पर गया। उसकी मां ने संकल्प किया कि मेरा बेटा सानन्द घर लौट आएगा तो मैं एक संन्यासी को भोजन कराऊँगी। संयोगवश युवक सानन्द घर पहुंच गया। मां ने बेटे को अपने संकल्प से अवगत कराया। बेटे ने कहा— माँ! भोजन कराने के लिए किसी मरे हुए बाबा को बुलाना। माँ ने कहा– बेटा! कैसी पागलपन की बात करते हो, मरा हुआ संन्यासी कैसे आ सकता है? वह गई और एक संन्यासी को बुला लाई। लड़के ने बाबा को गालियां देनी शुरू कीं। बाबा रुष्ट होकर वापस चला गया। इस प्रकार कई बाबा आए और रुष्ट होकर चले गए। आखिर एक बाबा आया, वह युवक की गालियों से आहत नहीं हुआ, शान्त रहा। बेटे ने कहा– माँ! यह मरा हुआ बाबा है। इसे भोजन करा कर तुम अपना संकल्प पूरा करो। मां समझी नहीं। बेटे ने कहा– मरा हुआ संन्यासी वह होता है जिसका आक्रोश मर जाता है, वासना मर जाती है, अहंकार मर जाता है। संन्यासी को तो मरा हुआ होना ही चाहिए। गृहस्थ को भी इन विकारों को कम करने का प्रयास करना चाहिए। जब मन में विकार आता है, गलत चिन्तन आता है तब मन विकृत बन जाता है। जब आदमी झूठ बोलता है, कटु बोलता है तब वाणी विकृत बन जाती है। जब संकेत या शारीरिक क्रियाओं के द्वारा गलत कार्य किया जाता है तब कायिक विकार हो जाता है। आदमी विकारों को दूर करने का प्रयास करे तो उसे यहीं मोक्ष प्राप्त हो सकता है।*

वर्तमान की समस्याएं गीता का समाधान

● आचार्य महाप्रज्ञ ●

भारतीय साहित्य बहुत समृद्ध साहित्य है। विश्व मानस को प्रभावित करने वाले कुछ ग्रंथ हैं, उनमें गीता का स्थान प्रमुख है। गीता एक सार्वभौम ग्रंथ है। सार्वभौम वह होता है, जिसमें विभिन्न मतों, विचारों का समन्वय होता है। जो भारतीय विचार थे, विभिन्न दार्शनिक और साम्प्रदायिक मतवाद थे, गीता में उन सबका समन्वय मिल जायेगा, समाहार मिल जाएगा।

गीता एक त्रैकालिक ग्रंथ है। इसमें तीनों कालों की समस्याओं का समाधान मिलता है अतीत की समस्या, वर्तमान की समस्या और भविष्य की समस्या। जो सत्य असीम होता है उसे कोई सीमा में बांध नहीं सकता। हमें गीता के साथ न्याय करना चाहिए और उसे किसी सीमा में नहीं बांधना चाहिए। योगीराज कृष्ण ने अपने योग बल से जिन सच्चाइयों को प्रकट किया, व्यास ने उन सच्चाइयों का समाकलन किया और एक अनुपम ग्रंथ हमारे सामने आ गया, वह आज भी विद्यमान है।

समस्या बुद्धिवाद की

आज के युग की एक समस्या है बुद्धिवाद। यह बहुत बड़ी समस्या है। बुद्धि के कटघरे में रहने वाले लोगों ने सीमा मान ली कि बस जो बौद्धिक विकास है, वही सीमा है, उससे आगे कुछ भी नहीं। इसी कारण बुद्धिवादी बुद्धि से जो गम्य नहीं है, जो अतीन्द्रिय सत्य है परमार्थ सत्य है, उसको स्वीकार नहीं करते। बुद्धिवादी वर्ग हमेशा प्राचीन शास्त्रों के खंडन का काम करता रहता है। वे नास्तिकता का भी समर्थन करते हैं। बुद्धिवाद का जो उन्माद है, उसका बहुत बड़ा समाधान गीता में है

हमारी चेतना के कई रूप हैं। उनमें पहला स्तर है इंद्रिय-चेतना। उससे आगे है मानस-चेतना। मन के बाद है बुद्धि की चेतना। यह सीमा नहीं है। अगर हम बुद्धि को सीमा मान लेते हैं तो सूक्ष्म विश्व की अनन्त सच्चाइयों को नकार देते हैं और यह सत्य के साथ बड़ा अन्याय होता है।

बुद्धि को सीमा न मानें

हमारे जितने ऋषि, साधक, साधु-संन्यासी हुए हैं, उन्होंने सूक्ष्म तत्त्व का ज्ञान किया। उनके पास कोई वैज्ञानिक उपकरण नहीं था, कोई सूक्ष्मदर्शी यंत्र नहीं था। किन्तु; अपनी अतीन्द्रिय चेतना के द्वारा उन्होंने सत्यों का अनुभव किया। बुद्धि कोई सीमा नहीं है ज्ञान की। बुद्धि से आगे बहुत ज्ञान है, इतना ज्ञान है कि बुद्धि तो बहुत छोटी पड़ जाती है। इस सुंदर समाधान के द्वारा हम सूक्ष्म तत्त्व, अमूर्त तत्त्व, दूरवर्ती तत्त्व इन सब तत्त्वों को अस्वीकार करने का साहस नहीं करते अपितु सबके प्रति हमारी यह सोच रहती है कि और खोज करना है। बुद्धि को सीमा मानें तो सत्य का दरवाजा भी बंद हो जाएगा, खोज का अवकाश नहीं रहेगा।

> ***"आज के युग की एक समस्या है– बुद्धिवाद। यह बहुत बड़ी समस्या है। बुद्धि के कटघरे में रहने वाले लोगों ने सीमा मान ली कि बस जो बौद्धिक विकास है, वही सीमा है, उससे आगे कुछ भी नहीं। इसी कारण बुद्धिवादी बुद्धि से जो गम्य नहीं है, जो अतीन्द्रिय सत्य है, परमार्थ सत्य है, उसको स्वीकार नहीं करते।"***

स्वास्थ्य की समस्या

दूसरी समस्या है स्वास्थ्य की। हृदय रोग विशेषज्ञ कहते हैं 'हृदय रोग बहुत बढ़ रहा है।' इसका कारण है आहार का विवेक नहीं है। कर्म में चेष्टा उपयुक्त नहीं है। सोने-जागने का कोई नियम नहीं है। ये तीन बड़े कारण हैं बड़ी बीमारियों के या हृदय रोग के। एक सुंदर समाधान गीता में मिलता है, इस दुःख को दूर करने का

युक्ताहारविहारस्य, युक्तचेष्टस्य कर्मसु।
युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा।।

जिसका आहार और विहार युक्त है, जिसकी कर्म में चेष्टा युक्त है, अयुक्त नहीं है, जिसका सोना और जागना भी युक्त है वह योग दुःख को मिटाने वाला है। जब विनियत चित्त आत्मा में ही अवस्थित होता है तथा सब कामनाओं से निस्पृह होता है तब वह युक्त होता है।

सात्त्विक आहार का गीता में बहुत सुंदर वर्णन किया गया जो आयु, बुद्धि, बल, आरोग्य, सुख और प्रीति को बढ़ाने

वाले, रसयुक्त व स्निग्ध आहार हैं, वे सात्विक आहार हैं

आयुः सत्त्वबलारोग्यसुखप्रीतिविवर्धनाः।
रस्याः स्निग्धाः स्थिराः हृद्या आहाराः सात्त्विकप्रियाः।।

युक्त हो आहार-विहार

सात्त्विक आहार करने वाला हृदय रोग से ग्रस्त हो नहीं सकता। किन्तु; प्रवृत्ति हमारी युक्त नहीं है। इतनी ज्यादा व्यस्तता, इतनी ज्यादा प्रवृत्ति कि आदमी बीमार न हो तो आश्चर्य! शरीर भी एक यंत्र है, उसको भी विश्राम की जरूरत होती है। किन्तु; इतनी चेष्टा कि आदमी अपने तन और मन को विश्राम नहीं देता, विश्राम देना भी जानता नहीं है, शिथिलीकरण करना भी जानता नहीं है। प्रवृत्ति के साथ निवृत्ति हो प्रवृत्ति की, फिर शिथिल कर दो शरीर को तो एक संतुलन बन जाएगा, बीमार नहीं बनेंगे।

आयुर्वेद का अभिमत है प्रवृत्ति में वात, कफ, पित्त का संतुलन बिगड़ता है। ये असंतुलित होते हैं। जब भोजन करें तो इनका साम्यभाव होना चाहिए, संतुलन होना चाहिए। वह तब होगा जब खाने से पहले पांच-दस मिनट कायोत्सर्ग करें, शरीर को शिथिल करें और फिर भोजन करें तो तीनों दोषों का साम्य होगा। शरीरशास्त्रीय दृष्टि से देखें तो प्रवृत्ति के साथ एसिड बनता है। जितनी प्रवृत्ति ज्यादा उतना एसिड बनेगा, इसीलिए एसिडिटी की बीमारी तो आम हो गई।

जिस समय जो काम करना हो उस समय वही काम करें यह है युक्त चेष्टा। इसको हम प्रेक्षाध्यान के संदर्भ में कहते हैं भाव क्रिया, वर्तमान में रहना। जिस समय जो काम करना है, वही काम करो, दूसरा काम मत करो, आप कभी व्यस्त नहीं बनेंगे। जो व्यक्ति जिस समय जो काम करता है, उसमें वह तन्मय हो जाए तो बड़ा साधक आदमी है। जिसका मन पर नियंत्रण है, वह जिस समय जो काम करता है उसमें मन का नियोजन कर देता है।

जरूरी है सतत अभ्यास

अर्जुन ने श्रीकृष्ण से पूछा प्रभो! मन तो बड़ा दुर्निग्रह है इसका निग्रह करना बड़ा मुश्किल है। जैसे हवा को मुट्ठी में पकड़ना मुश्किल है वैसे ही मन को मुट्ठी में पकड़ना मुश्किल है। हम कैसे करें?

श्रीकृष्ण ने उत्तर दिया अर्जुन! इसको पकड़ने के दो साधन हैं, अभ्यास और वैराग्य :

असंशयं महाबाहो, मनो दुर्निग्रहं चलम्।
अभ्यासेन तु कौन्तेय! वैराग्येन च गृह्यते।।

एक बहुत महत्त्व की बात कही। आज की समस्या यह है कि लोग बहुत व्यस्त हैं। सतत अभ्यास करें तब कोई निग्रह हो सकता है। जो लोग दो मिनट की एक पुड़िया लेकर उपचार चाहते हैं, उनका मन एकाग्र कभी नहीं होता।

शयन और जागरण

तीसरी बात सोना-जागना जिसका युक्त है, वह स्वस्थ रहता है।

जिस समय जो काम करना हो उस समय वही काम करें यह है युक्त चेष्टा। इसको हम प्रेक्षाध्यान के संदर्भ में कहते हैं भाव-क्रिया, वर्तमान में रहना। जिस समय जो काम करना है, वही काम करो, दूसरा काम मत करो, आप कभी व्यस्त नहीं बनेंगे। जो व्यक्ति जिस समय जो काम करता है, उसमें तन्मय हो जाए तो वह बड़ा साधक आदमी है। जिसका मन पर नियंत्रण है, वह जिस समय जो काम करता है, उसी में मन का नियोजन कर देता है।

आज तो सोने का समय बदल गया और जागने का समय भी बदल गया। आदमी दिन भर काम करे और रात को विश्राम करे, समय पर सो जाए, यह स्वास्थ्य के लिए अपेक्षित है।

एक वैज्ञानिक चर्या थी कब खाना, कैसे खाना, कब सोना, कैसे सोना और कब जागना। ये बातें सामान्य लगती हैं किन्तु ये जीवन की मूलभूत बातें हैं। इनके आधार पर हमारे मस्तिष्क की सारी क्रियाएं होती हैं, आदमी का स्वभाव बनता-बिगड़ता है। इनका सम्यक् पालन नहीं होता है तो फिर गुस्सा आना, चिड़चिड़ा होना और मूड बिगड़ना यह सब होता है। जो युक्त होता है वह पहाड़ जितनी समस्या को राई बनाना जानता है, उसके लिए दुनिया में दुःख बहुत कम हैं। जो युक्त नहीं है वह राई जितनी समस्या को पहाड़ बनाना जानता है, उसके लिए दुनिया में दुःख बहुत हैं। दोनों सापेक्ष सच्चाइयां हैं।

हिंसा की जड़

आज आहार पर बहुत वैज्ञानिक अनुसंधान हुआ है। उसका निष्कर्ष यह है कि आहार हिंसा की जड़ है। रसोईघर और हिंसा-घर दोनों साथ-साथ हैं। ऐसे पदार्थ बनाये जाते हैं, जिन्हें खाने से हिंसा की वृत्ति पनपती है। हमारे भोजन से बनने वाले रसायन हमारे व्यवहार का नियंत्रण करते हैं। विज्ञान की भाषा में हमारे मस्तिष्क में ऐसे न्यूरोट्रांसमीटर बनते हैं, जो हमारी प्रवृत्तियों का, हमारे व्यवहार का नियमन करते हैं और उनमें आहार का बहुत बड़ा कारण होता है। आप किसी भी भारतीय धर्मग्रंथ को देखें, चाहे जैनों का है, बौद्धों का है, चाहे गीता का है, किसी भी ग्रंथ को देखें, सबसे ज्यादा बल और प्रथम बात मिलेगी कि सात्त्विक आहार करो पर, आज तो बिल्कुल उल्टा हो रहा है।

अमृतोपम है सात्त्विक सुख

गीता में सुख को भी तीन भागों में विभक्त किया गया है सात्त्विक, राजस और तामस। वर्तमान युग में राजस सुख ज्यादा हो रहा है और उससे भी ज्यादा तामस सुख हो रहा है।

गीता में सुंदर कहा गया जो सात्त्विक सुख है, वह प्रारंभ में कठिन लगता है; किन्तु उसका परिणाम होता है अमृतोपम। प्रारंभ में जो अमृत की तरह लगता है किन्तु परिणाम में जहर बन जाता है, वह राजस होता है। तामस वह होता है जो प्रवृत्ति और परिणाम दोनों में अच्छा नहीं होता।

हमारी चेतना या मस्तिष्क की अवधारणा, हमारा कंसेप्ट ऐसा बन गया कि राजस अथवा तामस सुख की खोज ही चल रही है। इस खोज ने भारतीय चिंतन को, भारतीय जीवन की प्रणाली को, स्वास्थ्य और सुख की अवधारणा को बहुत तिरोहित किया है। वास्तव में हम सुख को सही अर्थ में समझने का प्रयत्न करें तो सुख वह है जिसका परिणाम अच्छा हो। आज भारतीय जीवन की स्थिति बहुत अच्छी है, यह नहीं कहा जा सकता। वह बहुत अच्छी बन सकती है अगर हमारा सही पुरुषार्थ हो। सम्यग् दिशा में हमारी गति हो तो बहुत परिवर्तन आ सकता है। हम रूढ़िवादी न रहें, परिवर्तन की बात को हमेशा याद रखें कि हमें बदलना है। अगर बदलने की बात मन में आ जाए तो सब कुछ है और नहीं बदलेंगे तो धर्म भी क्या करेगा?

बदलना सीखें

मैं इस बात को संपन्न करूं एक छोटी सी कहानी के साथ। आम के वृक्ष पर कोयल बैठी थी। कौआ तेजी से जा रहा था। कोयल ने पूछ लिया 'भैया! इतनी तेजी से उड़ते हुए कहां जा रहे हो?'

बोला 'मैं इस देश को छोड़कर जा रहा हूं।'

'क्यों?'

'मैं जहां भी बैठता हूं, लोग मुझे उड़ा देते हैं।'

कोयल ने कहा 'भैया! एक बात तो बता दो कि यह कांव-कांव करना छोड़ा कि नहीं?'

'नहीं, यह तो नहीं छोड़ा।'

'फिर कहीं भी जाओ, उड़ा दिये जाओगे।'

हम बदलते ही नहीं हैं तो फिर यही दशा होगी। हम रूढ़िवादी न रहें, बदलना सीखें, परिवर्तन को महत्त्व दें तो मैं समझता हूं कि आज भी भारतीय चेतना में क्षमता है, भारतीय साहित्य में क्षमता है कि वह एक अच्छे समाज का निर्माण कर सकता है।

राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम ने आह्वान किया है कि सन् 2020 तक भारत विश्व का प्रथम कोटि का देश बन जाएगा। कोरे यंत्रों से, आर्थिक विकास से नहीं बनेगा। जब तक अहिंसा और नैतिक मूल्यों का विकास नहीं होगा, प्रथम कोटि का नहीं बनेगा। अपितु हो सकता है और अधिक दलदल में फंस जाए। इसलिए हम एक संतुलन के साथ ऐसा कर सकें, वर्तमान पीढ़ी और भावी पीढ़ी को नया दर्शन दे सकें तो विश्व के लिए यह बहुत कल्याणकारी होगा। इस दिशा-दर्शन में गीता आदि सार्वभौम ग्रंथों का बहुत महत्त्वपूर्ण योग हो सकता है। ■

बोलते-प्रसंग...

मौलिक सृजन भी प्रार्थना है

विश्व प्रसिद्ध चित्रकार पिकासो एक बार चित्र बना रहा था। एक मित्र उसके पास आया। उसने उसको चित्र बनाते हुए देखा तो उसकी एकाग्रता में व्यवधान नहीं डाला। वापस लौट गया। जब वह चित्र बाजार में बिकने के लिए आया तो उस व्यक्ति ने उसे खरीद लिया; क्योंकि बाज़ार में पिकासो के नकली चित्र बिक रहे थे और वह तो असली चित्र था, क्योंकि उसने वह चित्र स्वयं पिकासो को बनाते हुए देखा था। उसने उस चित्र की भारी कीमत चुकाई। एक बार वह व्यक्ति उस चित्र को लेकर पिकासो के पास गया और पूछा 'पिकासो! यह चित्र तो प्रामाणिक है ना? मैंने स्वयं तुम्हें इस चित्र को बनाते हुए देखा था।' पिकासो ने कहा 'बनाया तो मैंने ही है, लेकिन प्रामाणिक नहीं है।' वह मित्र बड़ा हैरान हुआ; क्योंकि प्रामाणिक का तो अर्थ यही होता है कि चित्रकार ने उसे स्वयं बनाया है। किसी की नकल और कॉपी नहीं की है। पूरी तरह ऑथेंटिक है।

पिकासो ने कहा 'यह सही है कि मैंने यह चित्र बनाया है, पर मेरी दृष्टि में यह प्रामाणिक नहीं है, क्योंकि मैंने अपने पहले बनाए गए चित्रों की प्रतिकृति की है। इस चित्र को बनाते समय मैं रचनाकार नहीं था, मैं सिर्फ अपने ही चित्रों की कॉपी कर रहा था। अतः मैं सृष्टा नहीं रहा था।

मित्र बड़ा हैरान हुआ। इतनी बड़ी राशि व्यय करके उसने चित्र खरीदा था और चित्रकार स्वयं कह रहा है कि चित्र प्रामाणिक नहीं है। उसने झल्लाकर पूछा सृष्टा से तुम्हारा अर्थ क्या है? तो पिकासो ने कहा सृष्टा मैं तभी होता हूं जब मैं अद्वितीय बनाता हूं, बेजोड़ बनाता हूं। और, जब मैं अपनी ही कृतियों की नकल करता हूं, तब सृष्टा कैसे हो सकता हूं? इसलिए कवि, चित्रकार, मूर्तिकार वस्तुतः जब कोई मौलिक चीज बनाते हैं, तब परमात्मा के निकटतम होते हैं, स्रष्टा होते हैं। उतने ही निकट जितने कि भक्त और संत होते हैं। जब हम किसी चीज का सृजन करते हैं और सृजन यदि मौलिक है, नकल या कॉपी नहीं, तो वह भी एक प्रकार की प्रार्थना ही होती है।

त्रिभुवननाथ चतुर्वेदी

आचार्य तुलसी और राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन् की वार्ता

● साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ●

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य तुलसी दक्षिण यात्रा में चेन्नई प्रवास पर थे। वहां भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् ६ जुलाई, १९६८ को (ट्रिप्लीकेन में) उनसे मिले। इससे पूर्व फरवरी १९५७ में उपराष्ट्रपति के रूप में नई दिल्ली में तथा ३० नवम्बर, १९६४ को राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन् एवं आचार्य तुलसी के बीच अणुव्रत आन्दोलन एवं राष्ट्रीय गतिविधियों पर लम्बे वार्तालाप हुए थे। चेन्नई में दोनों महापुरुषों की लम्बी वार्ता संक्षिप्त/संकलित रूप में यहां प्रस्तुत है महाश्रमणी साध्वी प्रमुखा कनकप्रभाजी द्वारा। - *सम्पादक*

राधाकृष्णन्– अणुव्रत का कार्य कैसा चल रहा है?

आचार्यश्री– अच्छा चल रहा है। समाज में धीरे-धीरे इसकी जड़ें फैल रही हैं।

राधाकृष्णन्– कहां-कहां चल रहा है?

आचार्यश्री– सारे हिन्दुस्तान में चल रहा है। देश से बाहर नेपाल, भूटान तथा अन्य देशों में भी अणुव्रत-कार्य चल रहा है। अभी दक्षिण भारत में हो रही मेरी यात्रा से यहां सघन रूप में अणुव्रत का कार्य हो रहा है। यहां की जनता भी इस आन्दोलन में अपना सक्रिय सहयोग कर रही है।

राधाकृष्णन्– यह तो ठीक है; किन्तु देश में हिंसा, उपद्रव, अनैतिकता का जिस ढंग से विस्तार हो रहा है, उसको दूर करने के लिए तीव्र प्रयास होना आवश्यक है। अणुव्रत का सारे विश्व में जोरों से प्रचार होना चाहिए।

आचार्यश्री– हमारा धर्मसंघ अपनी शक्ति और सामर्थ्य के अनुसार काम कर रहा है। यह कार्य किसी एक व्यक्ति और संघ से पूरा होने वाला नहीं है। इसके लिए आप जैसे सभी व्यक्तियों का सहयोग आवश्यक है।

राधाकृष्णन्– मेरी ओर से जो कुछ बन सकता है, मैं सदैव करता हूं और करता रहूंगा।

आचार्यश्री– दक्षिण भारत में आने के बाद मुझे अनुभव हुआ कि यहां मुझे बहुत पहले आना चाहिए था। यहां के लोगों में श्रद्धा और भक्ति का सुन्दर योग है। तमिलनाडु और कर्नाटक प्रदेश में जैन साहित्य भी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है।

राधाकृष्णन्– मैसूर विश्वविद्यालय में प्राचीन साहित्य पर अच्छा कार्य हो रहा है।

आचार्यश्री– जनता में हिंसा की वृत्ति का ह्रास हो, उसमें अहिंसा की भावना जगे, आज इसका प्रयत्न होना अत्यन्त आवश्यक है।

राधाकृष्णन्– हां, यह बहुत जरूरी है। मैं कुछ वर्ष पूर्व कृष्ण जन्माष्टमी पर कलकत्ता गया था। तब मैंने कहा था कि देवी के लिए खून चढ़ाना अच्छा नहीं है। देवी फूल-फल से ही संतुष्ट हो जाती है। मेरी बात सुनकर नवयुवकों ने कहा- हम लोग इसके लिए तैयार हैं; किन्तु बुजुर्ग लोग मानते ही नहीं। मैंने उनको सलाह दी कि आप इसे शुरू करें। वे एक दिन अपने आप मान जाएंगे।

आचार्यश्री– भावना में परिवर्तन होने के बाद हिंसा अपने आप छूट जाती है।

राधाकृष्णन्– मन में क्रोध या घृणा का भाव आते ही हिंसा शुरू हो जाती है। जब तक मन से निषेधात्मक भाव दूर नहीं होगा, अहिंसा का विकास नहीं हो सकता।

आचार्यश्री– आज विश्व में हिंसा का खुला नृत्य हो रहा है, यह चिन्तनीय है। अहिंसावादी डॉ. किंग एवं दो कैनेडियों की हत्या के संवाद से सबकी आंखें खुल जानी चाहिएं।

राधाकृष्णन्– हमारे यहां भी हिंसा की कमी कहां है? प्रत्यक्षतः, इस प्रकार की हत्या नहीं होती है, पर मन में कितनी कलुषता भरी रहती है। उसे कम करने के लिए भी प्रेरणा देना आवश्यक है।

आचार्यश्री– कुछ लोगों ने मुझसे पूछा- आपके इस काम से क्या समूचे समाज में परिवर्तन हो जाएगा? मैंने उनसे कहा- मैंने समूचे समाज को सुधारने का कोई बीड़ा नहीं उठा रखा है। मैं जो कुछ कर रहा हूं, उसे आत्मधर्म समझ कर रहा हूं। इसमें मुझे आनन्द मिलता है। मुझे आनन्द मिलता है तो दूसरों को भी आनन्द मिलेगा।

राधाकृष्णन्– किसी भी परिवर्तन के लिए पहले विचार, फिर आचार तब प्रचार किया जाना चाहिए।

आचार्यश्री– यह क्रम बिल्कुल ठीक है। आचरण के बिना प्रचार का कोई मूल्य नहीं है।

राधाकृष्णन्– सब दर्शनों ने बताया तो यही है, लेकिन चलते उसके विपरीत हैं।

आचार्यश्री– रामायण के सम्बन्ध में आपका क्या मंतव्य है? क्या यह उत्तर भारत के कवियों की कल्पना है?

राधाकृष्णन्– कथा या कल्पना कुछ भी हो, हमें तो उसके आदर्श को पकड़ना है। रामायण का आदर्श बहुत ऊंचा है। उसमें आई हुई बातें आज भी प्रेरक हैं। वाल्मीकि रामायण का यह पद्य कितना मार्मिक है :

''रामं दशरथं विद्धि, मां विद्धि जनकात्मजां।
अयोध्या अटवीं विद्धि, गच्छ तात! यथासुखम्।।''

राम के साथ वनवास में जाने के लिए

उत्सुक लक्ष्मण को सम्बोधित कर सुमित्रा ने कहा– हे पुत्र! तू सुखपूर्वक जा। इस यात्रा में राम को दशरथ समझना। सीता में मेरा रूप देखना और अटवी को अयोध्या मानकर रहना। वे उच्च आदर्श को उपस्थित करने वाले हैं–

"केयूरं नैव जानामि, नैव जानामि कुण्डलं।
नूपुरं तु विजानामि, नित्यं पादाभिः वन्दनात्।।"

रावण ने सीता का अपहरण किया। सीता विवश थी और कोई उपाय न देख उसने मार्ग में अपने आभूषण गिरा दिए। राम को कुटिया में सीता नहीं मिली। उसे खोजने के लिए उन्होंने चप्पा-चप्पा छान डाला। उस अवधि में उन्हें सीता द्वारा गिराए गए कुछ आभूषण मिले। उन्होंने लक्ष्मण को वे दिखाए। इस पर लक्ष्मण ने कहा– भैया! मैं न तो भाभी के कयूर- बाजूबन्द पहचानता हूं और न कुण्डलों को जानता हूं क्योंकि मैंने उनकी ओर कभी आंख उठाकर देखा तक नहीं। मैं प्रतिदिन भाभी के चरणों में प्रणाम करता था, इसलिए मैं उनके नूपुरों को अवश्य पहचानता हूं।

रामायण के इस प्रसंग में भारत की प्राचीन एवं शालीन संस्कृति का सुन्दर निरूपण हुआ है। रामायण के जो आदर्श हैं, वे ही हमारे लिए आदेय हैं। हमें तो पाठ के सार से मतलब है। फिर यह कथा उत्तर या दक्षिण कहीं की भी क्यों न हो। जैन कहानियां भी काफी प्रचलित हैं। श्रवणबेलगोला जैनों का केन्द्र है। उसकी भी अनेक कहानियां प्रचलित हैं। उनका आदर्श अनुकरणीय है। कथा में पात्रों की अपेक्षा उनका आदर्श ही ग्राह्य है।

आचार्यश्री– यहां के अनेक चिन्तकों ने मुझे दक्षिण भारत को अपना प्रचार-क्षेत्र बनाने का अनुरोध किया है।

राधाकृष्णन्– आपको तो उत्तर भारत में ही बहुत काम करना है। आप नहीं तो आपके अनुयायियों को इसमें लगना चाहिए। जैन लोग बड़े-बड़े व्यापारी हैं और संपन्न हैं। उनकी शक्ति कल-कारखानों में ही नहीं लगे, कुछ लोगों को ऐसे नैतिक कार्यों में भी जुटना चाहिए। (इसके लिए डॉक्टर साहब ने कस्तूरभाई लालभाई, अम्बालाल साराभाई का नामोल्लेख किया)

आचार्यश्री– आज सारा युग अर्थ के पीछे लगा हुआ है। सरकार भी यही चाहती है। तब जनता तो उस ओर अपने आप बढ़ेगी। राजा के विचारों के अनुसार प्रजा का निर्माण होता है।

राधाकृष्णन्– राजा लोगों को भी प्रजा ठीक कर सकती है।

आचार्यश्री– जनता का राज्य हो तब। आपने तो बहुत युग देखे हैं। क्या सचमुच जनतंत्र का स्वरूप यही है?

राधाकृष्णन्– देखे तो बहुत हैं, उनसे अब क्या?

आचार्यश्री– भारत के बाहर भी रंग और जाति-भेद आदि समस्याएं हैं। क्या यह परंपरा काफी प्राचीन है?

राधाकृष्णन्– भारत के बाहर ये विचार और नीतियां हो सकती हैं; क्योंकि उनका आदर्श भिन्न है। हमारा आदर्श हमें सिखाता है कि चाण्डाल और ब्राह्मण में कोई अंतर नहीं है। सब ब्रह्म के ही अंश हैं। यहां यह अन्तर नहीं रहना चाहिए।

आचार्यश्री– प्राचीन युग में यह भेद-प्रभेद नहीं था। जैनधर्म में तो बिल्कुल था ही नहीं; किन्तु अब जैनों में भी दूसरों के अनुकरण से इस प्रकार के संस्कार आ गए।

राधाकृष्णन्– भारत में जितने भी धर्म आए, वे यहां आकर एक-दूसरे के साथ मिल गए लेकिन मुसलमानों के समय से यह काम बंद हो गया। आज तक भी यही स्थिति है। कोई भी हिन्दुस्तानी बाहर जाएगा, उसके संबंध यहीं अपने समाज में होंगे। विदेशों में रहने वाले सैकड़ों वर्षों के प्रवासी हिन्दू भी वहां के जनजीवन से अलग-थलग हैं। अगर वे अपना संबंध वहां स्थापित कर लेते हैं तो हमारे देश के धर्मनेता उनको स्वीकार नहीं करेंगे। उन्हें धर्मभ्रष्ट समझने लग जाएंगे।

आचार्यश्री– जो धर्म इतना व्यापक और उपयोगी था, उसको लोगों ने इन छोटी-छोटी प्रवृत्तियों से जोड़ दिया। इसलिए उसकी तेजस्विता धूमिल हो गई और वह सर्वत्र फैल नहीं सका। एक-दूसरे को काटने वाला धर्म कैसे हो सकता है?

राधाकृष्णन्– धर्म तो वह है जो एक-दूसरे को जोड़े।

आचार्यश्री– सामाजिक रीति-रिवाजों को धर्म का रूप मिलने से क्या उसका अहित नहीं हुआ है?

अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी एवं डॉ. एस. राधाकृष्णन

राधाकृष्णन्– अहित तो हुआ है; किन्तु मनुष्य की कुछ दुर्बलताएं हैं। वह अच्छी परंपराओं को भी अपने अनुकूल ढालने का प्रयास करता हैं; सिख, बौद्ध, जैन आदि मूलतः धर्म है। लेकिन आज उनकी भी जातियां बन गई हैं।

आचार्यश्री– सामाजिक रस्मों को धर्म का रूप देने से दोनों की मर्यादाएं खण्डित होती हैं। समाज की रस्मों का अपना क्षेत्र है और धर्म का अपना क्षेत्र। इसलिए इनका मिश्रण नहीं होना चाहिए।

राधाकृष्णन्– धर्म के दो तत्त्व हैं- सत्य और अहिंसा। अहिंसा पर नहीं चलने वाला धार्मिक हो ही नहीं सकता।

आचार्यश्री– अणुव्रत सत्य और अहिंसा के आचरण पर ही बल देता है।

राधाकृष्णन्– दुनिया के कई देशों में घूम आया। जहां भी गया, मैंने इनके आचरण पर काफी बल दिया। शाकाहार पर भी मैंने कई भाषण दिए। मैं जहां भी गया मैंने पूर्ण शाकाहार लिया। दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित करता रहा हूं।

आचार्यश्री– आपके भाषणों से भारतीय संस्कृति का विदेशों में गौरव बढ़ा है।

आप दृष्टि उठाकर देखें, सर्वत्र भेद की एक अभेद्य दीवार मिलेगी। युवक सुनता है एकता एवं आदर्श की बात और व्यवहार में उसके विपरीत देखता है। उसका गर्म खून यह सब नहीं देख सकता। यह सब आज ही नहीं हो रहा है, पहले भी होता था। जब मैं युवक था, तब भी फ्रांस में नई क्रांति हुई थी। ये विस्फोट सत्ता, संपत्ति और व्यवहार को समान करने के ही प्रयत्न हैं। हां, यह आवश्यक है कि युवकों को ऐसे कार्यों को करने में अपने विवेक को जागृत रखना चाहिए। उसके लिए संगठनों आदि में अच्छे विचारों का प्रचार आवश्यक है।

राधाकृष्णन्– आप सब लोग यही काम कर रहे हैं। उसी से कुछ आशा होती है। आप अपने ज्ञान का अधिक से अधिक प्रकाश फैलाएं।

(पार्श्व में बैठे साधुओं की ओर इशारा करते हुए) आप कोई सवाल करना चाहें तो कर सकते हैं।

मुनि बुधमल्लजी– अभी आपने मांसाहार-परिहार की चर्चा की, क्या सरकार भी मांसाहार को बढ़ावा नहीं दे रही है?

राधाकृष्णन्– सरकार आखिर जनता की ही तो है। जनता की जैसी अभिरुचि देखती है, वह वैसा ही करती है। वह कुछ भी करे, हमें तो अपने विचारों को जनता तक फैलाना है। सरकार भी गलत काम करती है तो हमें उसको भी कहना चाहिए। मैं पचास वर्षों तक संसार में घूमा। मांस और शराब को मैंने छूआ तक नहीं। सरकार आज जनता की नहीं, बहुमत की है। वह तो बहुमत के पसन्द की बात कहेगी। शाकाहारी दस प्रतिशत होंगे और मांसाहारी नब्बे प्रतिशत हैं। ऐसी स्थिति में सरकार क्या करेगी?

मुनिश्री– आप जैसे मनीषी इस विषय में बराबर दिशा-दर्शन देते रहें तो उसका जनता पर अच्छा असर हो सकता है।

राधाकृष्णन्– अवसर मिलने पर मैं सर्वत्र कहता आया हूं और कहता रहूंगा।

आचार्यश्री– राष्ट्रपतिकाल में आपके विदेशी मेहमान भी आते, उनको आप कैसा भोजन देते थे?

राधाकृष्णन्– सरकारी भोजन तो उनकी आदत या रुचि के मुताबिक दिया जाता है। मैं व्यक्तिगत तौर से किसी को बुलाता तो उसको शाकाहार ही देता।

मुनि रूपचन्द्र– युवक विद्यार्थियों के सम्बन्ध में चल रही विध्वंसात्मक प्रवृत्तियों के निरसन के सम्बन्ध में आप क्या सोचते हैं?

राधाकृष्णन्– युवकों की यह हलचल केवल भारत में ही नहीं, विश्वभर में है। हम सोचते हैं कि जनतंत्र आ गया। वस्तुतः जनतंत्र अभी तक आया ही नहीं। यदि जनतंत्र आता तो क्या ये भेद रह सकते हैं? मनुष्य-मनुष्य में भेद है। जाति का भेद है। राष्ट्र का भेद है। निर्धन और धनिक का भेद है। उच्चता और नीचता में भेद है। शिक्षा में भेद है। आप दृष्टि उठाकर देखें, सर्वत्र भेद की एक अभेद्य दीवार मिलेगी। युवक सुनता है एकता एवं आदर्श की बात और व्यवहार में उसके विपरीत देखता है। उसका गर्म खून यह सब नहीं देख सकता। यह सब आज ही नहीं हो रहा है, पहले भी होता था। जब मैं युवक था, तब भी फ्रांस में नई क्रांति हुई थी। ये विस्फोट सत्ता, संपत्ति और व्यवहार को समान करने के ही प्रयत्न हैं। हां, यह आवश्यक है कि युवकों को ऐसे कार्यों को करने में अपने विवेक को जागृत रखना चाहिए। उसके लिए संगठनों आदि में अच्छे विचारों का प्रचार आवश्यक है।

आचार्यश्री– इस प्रकार हिंसा से कार्य हुआ तो मानवता और अहिंसा का नाश हो जाएगा।

राधाकृष्णन्– सारे कार्य अहिंसा से नहीं होते हैं। हमारा जीवन और सृष्टि का क्रम 'जीवो जीवस्य भोजनम्' के आधार पर ही है। हां, इतना अवश्य है कि मनुष्य को कम से कम हिंसा से कार्य करना चाहिए।

आचार्यश्री– अमन और शान्ति तो अहिंसा और नैतिकता से ही आ सकती है।

राधाकृष्णन्– आचार्यश्री! आप यहां कब तक रहेंगे?

आचार्यश्री– इस वर्ष का चातुर्मास्य मद्रास में है। अतः चार महिने तक यहां रहने का विचार है।

राधाकृष्णन्– तब तो बहुत खुशी की बात है, दो-चार बार और मिलना हो सकेगा।

चेन्नई (ट्रिपलीकेन)
6 जुलाई 1968

उच्चस्तरीय संगोष्ठी में

अणुव्रत के अहिंसा-दर्शन का समर्थन

● मुनि राकेशकुमार ●

मानव की पारिवारिक और सामाजिक व्यवस्था का आधार है अहिंसा। अहिंसा के अभाव में न पारिवारिक जीवन सुखी हो सकता है और न सामाजिक व्यवस्था सुचारुरूप से संचालित हो सकती है। आज तक विश्व में जितना विकास हुआ है उसका आधार अहिंसा है। यदि अहिंसा और करुणा के संस्कार जागृत नहीं होते तो मानव की बुद्धि और शक्ति का उपयोग रचनात्मक दिशा में नहीं होकर विध्वंसात्मक दिशा में होता। समाज में शांति, सहयोग, समन्वय, सद्भावना व सहअस्तित्व का जो दर्शन होता है वह अहिंसक चेतना का ही परिणाम है। घृणा, ईर्ष्या, विद्वेष और प्रतिशोध आदि निषेधात्मक वृत्तियां हिंसक मनोवृत्ति के फलित हैं। धरती के रंगमंच पर हजारों वर्षों के इतिहास में जब-जब हिंसा का नग्न नृत्य हुआ है, उसके मूल में घृणा आदि निषेधात्मक प्रवृत्तियां प्रमुख कारण रही हैं।

सभी धर्म प्रवर्तकों और अहिंसावादी विचारकों ने अहिंसा की यशोगाथा मुक्त कण्ठ से गाई है। पर कई विषयों पर हिंसा और अहिंसा की व्याख्या में उनमें मतभेद है। उनमें एक विषय है समाज और राष्ट्र की सुरक्षा का। श्रीमद्भगवद्गीता आध्यात्मिक रहस्यों से परिपूर्ण एक दार्शनिक ग्रंथ है। उसमें अनासक्त योग व निष्काम कर्म योग पर बहुत बल दिया है। उसके साथ ही समाज व राष्ट्र की रक्षा के लिए जो युद्ध किया जाता है, वह उचित बताया गया है। गीता में कहा है *''हतो वा लप्स्यसे स्वर्ग, जितोवा भोक्स्यसे मही''* न्याय के लिए युद्ध करते हुए मर भी जाओगे तो स्वर्ग की लक्ष्मी वरमाला पहनाएगी, यदि विजेता बनोगे तो धरती की लक्ष्मी का उपभोग करोगे।

महात्मा गांधी भगवद्गीता के परम भक्त थे। वे गीता को मां के समान मानते थे, पर अहिंसा की व्याख्या में साध्य और साधन की शुद्धि पर बल देकर उन्होंने गीता के अहिंसा दर्शन से थोड़ा भिन्न विचार प्रकट किया है। उन्होंने यहां तक कहा **यदि हिंसात्मक अशुद्ध साधनों से स्वतंत्रता भी मिले तो मुझे मान्य और स्वीकार्य नहीं है। साध्य-साधन-शुद्धि का उनका विचार जैन दर्शन की अहिंसा संबंधी अवधारणा के निकट प्रतीत होता है।**

जैन तत्त्व ज्ञान में हिंसा के तीन प्रकार बतलाए गए हैं आरंभजा, विरोधजा और संकल्पजा। जीवन-निर्वाह के लिए जो हिंसा होती है वह आरंभजा हिंसा है। जो समाज व राष्ट्र की रक्षा के लिए हिंसा होती है वह विरोधजा हिंसा है। जो निरपराधी जंगम प्राणियों की संकल्पपूर्वक हिंसा होती है वह संकल्पजा हिंसा है। अणुव्रत के लिए संकल्पजा हिंसा का त्याग अनिवार्य है। आरंभजा और विरोधजा हिंसा से जितना बचा जा सके उससे बचना चाहिए। अणुव्रत की आचार संहिता में संकल्पजा हिंसा से दूर रहने का संकल्प निर्दिष्ट है। यदि यह जन-जन के मानस में रम जाए तो समाज को आतंकवाद व हिंसा संबंधी उन्मादों से मुक्ति मिल सकती है।

भगवान महावीर के समय में अनेक राजा व सेनापति भी अहिंसा व्रतधारी जैन श्रावक थे। उन्होंने न्याय की रक्षा के लिए संग्राम भी किए। जहां परिग्रह है वहां हिंसा की अनिवार्यता है। अपरिग्रही व्यक्ति ही पूर्ण अहिंसक बन सकता है।

अहिंसा के विरोध में उठे स्वर

महात्मा गांधी के स्वर्गवास के कई वर्ष पश्चात सन् 1962 में हिंसा और अहिंसा की चर्चा सारे देश में बहुत प्रखरता के साथ हुई। इसका कारण था, भारत और चीन का संग्राम। यह संग्राम भारत के लिए बिल्कुल अप्रत्याशित था। इसलिए पराजय का मुख देखना पड़ा। इससे चारों ओर निराशा का कोहरा छा गया। देश के **मूर्धन्य विचारकों और पत्रकारों ने इस पराजय के लिए गांधीजी की अहिंसा नीति तथा नेहरूजी की पंचशील नीति से संबंध जोड़ दिया। उन्होंने कहा अहिंसा के अति आग्रह के कारण राष्ट्र की सुरक्षा-व्यवस्था मजबूत नहीं हो सकी।** समाचार पत्रों में प्रतिदिन अहिंसा और पंचशील के सिद्धांतों पर आलोचनात्मक और व्यंग्यात्मक टिप्पणियां लिखी जाने लगीं।

उस समय दिल्ली के सार्वजनिक वातावरण में अणुव्रत आंदोलन का व्यापक प्रभाव था। प्रमुख नेताओं व पत्रकारों से हमारा मिलना होता तो यह चर्चा उनकी ओर से मुख्य रूप से होती। उनके मानस पर पराजय का गहरा भार प्रतीत होता था। इसके साथ ही अहिंसा और राष्ट्र की सुरक्षा के विषय में नाना प्रकार की जिज्ञासाएं प्रस्तुत होती थीं। कई पत्रकारों ने व्यंग्यात्मक भाषा में कहा मुनिजी! अब अहिंसा और अणुव्रत की बात छोड़ो, अब तो तलवार और बन्दूक की चर्चा करो। राष्ट्र की सुरक्षा से बड़ा कोई धर्म नहीं है।

दिल्ली प्रदेश अणुव्रत समिति तब बहुत सक्रिय थी। तत्कालीन परिस्थितियों को देखते हुए समिति ने अणुव्रत के कार्य को तीव्र गति से आगे बढ़ाने का निर्णय किया। उस निर्णय के अनुसार शिक्षकों, राज्य कर्मचारियों व व्यापारियों आदि विभिन्न वर्गों में व्यवस्थित और सफल कार्यक्रम आयोजित हुए। हिन्दुस्तान, नवभारत टाइम्स आदि समाचार पत्रों में प्रतिदिन प्रमुखता से समाचार प्रकाशित

होते थे। इन कार्यक्रमों में अणुव्रत दर्शन पर प्रकाश डालते हुए लोगों के चरित्र बल को सबल बनाने की प्रेरणा दी जाती थी। चरित्र बल के बिना सैनिक बल कभी सफल नहीं हो सकता। हजारों व्यक्तियों ने इस अभियान से अणुव्रत के नियम ग्रहण किए थे। हर कार्यक्रम में एक दो विशिष्ट व्यक्ति उपस्थित रहते थे। आयोजनों की इस शृंखला में लगभग तीस-चालीस कार्यक्रम आयोजित हुए।

इसी क्रम में दिल्ली के किंग्सवे कैम्प में पुलिस विभाग का एक विराट आयोजन सम्पन्न हुआ, जिसमें लगभग तीन हजार पुलिस के लोगों ने भाग लिया। उस कार्यक्रम में कांग्रेस पार्टी के तत्कालीन अध्यक्ष श्री यू. एन. ढेबर ने मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया। ढेबर भाई इस कार्यक्रम से बहुत प्रभावित हुए। कार्यक्रम के पश्चात अणुव्रत के प्रबल समर्थक श्री गोपीनाथ अमन व मोहनलाल कठोतिया के साथ सब्जी मंडी स्थित कठोतिया भवन आ गए। हम भी वहां पहुंच गए। ढेबर भाई ने हमारे पास बैठते ही कहा मुनिजी! आज कल चारों ओर चीन से पराजय के कारण अहिंसा की आलोचनाएं हो रही हैं। मैं अहिंसा के संबंध में एक गोष्ठी आयोजित करना चाहता हूं। उस गोष्ठी में आपकी उपस्थिति जरूरी है। मैं दो-तीन दिन में कार्यक्रम की सूचना दूंगा।

अहिंसा पर विशेष संगोष्ठी

सूचना प्राप्त होने पर ढेबर भाई के निवास स्थान पर मैं और मेरे सहयोगी मुनि गुलाबचंद 'निर्मोही' ठीक समय पर पहुंच गए। गोष्ठी में श्री ढेबर भाई के अलावा श्री अटल बिहारी वाजपेयी, श्री जयसुखलाल हाथी (केन्द्रीय उपमंत्री), श्री बी.एस. मूर्ति (केन्द्रीय उपमंत्री), डॉ. हरेकृष्ण मेहताब, श्री सादिक अली, सेठ गोविन्ददास, श्री मैथिलीशरण गुप्त, श्री रामेश्वर टांटिया, श्री महावीर त्यागी, श्री प्रकाशवीर शास्त्री, श्रीमती सावित्री निगम आदि अनेक मंत्रियों, सांसदों एवं देश के प्रमुख व्यक्तियों ने भाग लिया।

श्री यू.एन. ढेबर ने संयोजकीय वक्तव्य में कहा चीन से युद्ध के बाद चारों ओर निराशा का वातावरण छाया हुआ है। जनता के मानस में अहिंसा के सम्बन्ध में नाना प्रकार की भ्रांतियां उत्पन्न हुई हैं। अहिंसा हमारी एकता और संस्कृति का आधार है। उसकी शक्ति पुनः तेजस्वी कैसे बने, हमें इस विषय पर चिंतन करना है।

इस अवसर पर श्री अटलबिहारी वाजपेयी ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा अहिंसा का महत्व धार्मिक क्षेत्र में है, साधु-संतों के लिए है। जहां तक राष्ट्र की रक्षा का प्रश्न है हमें अहिंसा पर निर्भर नहीं रहना चाहिए। राष्ट्र की रक्षा शास्त्र से नहीं शस्त्र से होती है। अहिंसा के अति आग्रह के कारण सुरक्षा की व्यवस्था में कमी रही है। इसके कारण ही हमारे सिर पर पराजय के कलंक का टीका लगा। डॉ. प्रकाशवीर शास्त्री ने भी अटलजी के विचारों का समर्थन किया।

सेठ गोविन्ददास, जयसुखलाल हाथी, डॉ. डी.एस. राजू, सादिक अली इत्यादि ने कहा अहिंसा का महत्व धार्मिक साधना के लिए ही नहीं स्वस्थ समाज की रचना के लिए भी है। अहिंसा के अभाव में राष्ट्र का मौलिक आधार सबल नहीं बन सकता। पराजय के अन्य कई कारण हैं। हमें आत्म-निरीक्षण कर उनका निराकरण करना चाहिए। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने कहा राष्ट्र की रक्षा करना हमारा परम कर्तव्य है। अहिंसा के नाम पर उसमें शिथिलता नहीं होनी चाहिए। इस प्रकार गोष्ठी में नाना प्रकार के विचार प्रस्तुत हुए। अंत में ढेबर भाई ने कहा हमारे मध्य आचार्य तुलसी के शिष्य विद्वान् संत मुनि राकेशकुमार और मुनि गुलाबचंद 'निर्मोही' उपस्थित हैं। मैं मुनि राकेशकुमार से निवेदन करता हूं कि गोष्ठी में प्रस्तुत विचारों का सार प्रस्तुत करते हुए हमारा मार्गदर्शन करें।

मैंने अपने वक्तव्य में कहा अहिंसा के कारण भारत की पराजय हुई है, यह कहना उचित नहीं है। यह अहिंसा के स्वरूप को सही नहीं समझने का परिणाम है। अनैतिकता, भ्रष्टाचार व साम्प्रदायिकता हिंसा के ही रूप हैं। ये बुराइयां राष्ट्र की सुरक्षा को कमजोर करती हैं। देश में अहिंसा के सैद्धान्तिक स्वरूप का बहुत यशोगान होता है, पर अनैतिकता और भ्रष्टाचार के कीटाणु राष्ट्र की आंतरिक शक्ति को निर्बल बना रहे हैं। देश के चरित्रबल को मजबूत बनाए बिना सैनिक बल भी सफल नहीं हो सकता।

हिंसा के आरंभजा, विरोधजा और संकल्पजा इन तीनों प्रकारों की व्याख्या करते हुए मैंने आगे कहा अणुव्रती व्यक्ति के लिए संकल्पजा हिंसा का त्याग आवश्यक है, पर आरंभजा और विरोधजा हिंसा से बचना उसके लिए संभव नहीं है। भारत आक्रांता राष्ट्र नहीं है। राष्ट्र की सुरक्षा में सहयोग देना हर नागरिक का राष्ट्र धर्म है। जिस प्रकार सैनिक युद्ध के मोर्चे पर लड़कर राष्ट्र की रक्षा करता है उसी प्रकार अपने कर्तव्य का प्रामाणिकता से पालन कर हर व्यक्ति को राष्ट्र की रक्षा में सहयोगी बनना चाहिए। जब तक देश के नागरिकों का चरित्र बल ऊंचा नहीं होगा तब तक सैनिक बल भी सफल नहीं होगा। इसके साथ ही मैंने पिछले दो महीनों से राजधानी में संपन्न हुए अणुव्रत के कार्यक्रमों की चर्चा की, जिससे उपस्थित सभी लोग बहुत प्रसन्न और प्रभावित हुए।

अंत में ढेबर भाई ने आभार व्यक्त करते हुए कहा मैं भाग्यशाली हूं कि मेरे निवास स्थान पर अहिंसा के संबंध में इतनी अच्छी चर्चा हुई है। इस अवसर पर मुनिश्री ने यहां आकर हमारा बहुत सुंदर मार्गदर्शन किया है। उनके वक्तव्य से अहिंसा के संबंध में व्याप्त भ्रांतियों का निराकरण हुआ है। मुनिश्री ने अणुव्रत आदोलन के अहिंसा संबंधी जो विचार प्रकट किए हैं, वे बहुत उचित हैं। हम सभी उनका समर्थन करते हैं। महात्मा गांधी के बाद आचार्य तुलसी के नेतृत्व में अहिंसा की शक्ति तेजस्वी बनेगी, आज मुझे यह विश्वास हो गया है। ■

मानवता के मसीहा यीशु का नैतिक चिन्तन

● साध्वी परमयशा ●

महात्मा यीशु दो हजार से अधिक वर्ष पहले धरती पर आये। उन्होंने पीड़ित मानवता के उद्धार के लिए कड़ा संघर्ष किया; किन्तु सत्ताधीशों ने ईश-निन्दा का आरोप लगाते हुए उन्हें 'क्रूस' पर चढ़ा दिया। कहते हैं सूली पर लटकाये जाने के तीसरे दिन (रविवार) यीशु पुनः जीवित हो उठे। उन्होंने स्वयं को ईश्वर का पुत्र बताते हुए लोगों को ईश्वरीय संदेश पहुंचाया और पुनः स्वर्गारोहण कर गये।

सफलता का राजमार्ग सहिष्णुता

ईसाई धर्म संसार के प्रमुख धर्मों में एक है। ईसाई धर्म के प्रवर्तक ईसा मसीह थे। उनके उपदेश बाइबिल में संकलित हैं। महात्मा यीशु ने धैर्य, गांभीर्य और सहिष्णुता को जीवन का भूषण मानते हुए कहा– यदि तुम्हारे दाहिने गाल पर कोई थप्पड़ मार दे तो तुम अपना बायां गाल उसके सामने कर दो। यदि कोई तुम्हारा कोट छीन ले तो तुम उसे अपना लबादा भी दे दो। तुम अपने शत्रुओं से प्रेम करो, उनसे घृणा नहीं, उन पर उपकार करो।

यदि तुम्हें कोई सताए तो तुम उसके कल्याण के लिए प्रभु से प्रार्थना करो। बाइबिल नीति-वचन में ज्ञानी की महत्ता प्रतिपादित करते हुए कहा गया है– ''ज्ञानी गौरव प्राप्त करते हैं और मूर्ख तिरस्कार; अतः मूर्खता बढ़े ऐसे कोई भी कार्य न करो।'' ''दुष्टजनों के मार्ग में प्रवेश मत करो और पापी मनुष्यों के पथ पर मत चलो''– क्योंकि संगति का असर हुए बिना नहीं रहता। ''जहां अज्ञानी अग्रगामी होता है, वहां अनुगामी जन खड्डे में गिर जाते हैं और जहां विचारशील ज्ञानी आगे होता है, वहां सब सुरक्षित रहते हैं।''

अन्तःकरण की पवित्रता

ईसा ने कहा– जिनका अन्तःकरण शुद्ध है, वे धन्य हैं; क्योंकि उन्हीं को ईश्वर का साक्षात्कार होता है। चैतसिक निर्मलता बिना ईश्वर के साथ संवाद स्थापित नहीं किया जा सकता। जो दूसरों के लिए खड्डा खोदता है, वह स्वयं उसमें गिरता है। जो पत्थर फैंकता है, वह पत्थर उसी को आकर लगता है। जो शिक्षा से मुंह फेरता है, शिक्षा नहीं सुनता, वह स्वयं अपनी आत्मा की अवहेलना करता है। जो शिक्षा को आत्मसात् करता है, उसका ज्ञान विशद बनता है।

क्षमा का अमृत

क्षमाशीलता से बड़ा कोई अमृत नहीं होता। शांति चाहने वालों को क्रोध से दूर रहना चाहिए। बिना विचारे बोलना तलवार के घाव जैसा है। ''शब्दों की प्रचुरता से-बहुत अधिक बोलने से दोषों की कमी नहीं होती। जो व्यक्ति अपने होठों पर नियंत्रण रखता है, वही बुद्धिमान है।''

सदाचार की महक

सम्पन्नता सदाचार की प्रेरणा देती है। सदाचार से सम्पन्नता बढ़ती है। यह दोनों का अन्योन्याश्रय संबंध है। ''सदाचारी का उद्यम जीवन-साधक है और दुष्ट का अर्जन पापकारक है।'' ''सद्गुणी मनुष्य की सहनशीलता सद्गुणशीलता-सच्चाई उसका मार्ग-दर्शन करती है। दुर्जन की दुर्जनता उसके पतन का कारण बनती है।'' सत्पुरुष की महत्ता प्रतिपादित करते हुए बाइबिल में प्रसंग आया है कि सत्पुरुष सात बार गिरता है फिर उठ जाता है, किन्तु दुर्जन विपत्ति से आहत होकर सदा के लिए अनुचित आचरण में पड़ जाता है।

दयालुता का पाथेय

ईसा का उपदेश है– दयालु व्यक्ति धन्य हैं, क्योंकि वे भगवान की दया को प्राप्त कर सकते हैं। दया को इतिहास के पन्नों में बहुत ऊँचा दर्जा प्राप्त है। यहां तक कह दिया गया है कि दया और सच्चाई से पाप का प्रायश्चित हो जाता है। चित्त और चेतना को अनाविल करनेवाले दयाभाव को अन्तःकरण में बसाने की सार्थकता ही ईसा का संदेश है।

अहंकार-विसर्जन

ईसा के मन्तव्य में वे व्यक्ति धन्य हैं, जिनमें अहंकार-विसर्जन की भावना प्रखर रहती है। बाइबिल में अहंकार निरसन की दृष्टि से कहा गया है–अहंकार मनुष्य को नीचे गिराता है और विनय सम्मान प्राप्त कराता है। विनय के द्वारा विश्व पर विजय प्राप्त की जा सकती है, पर अहंकार के द्वारा नहीं। जैसे आग की भट्टी चांदी और सोने को गला डालती है, प्रशंसा भी मनुष्य के लिए वैसी ही है। प्रशंसा भी मनुष्य को नष्ट कर देती है।

पर्वत शिखर पर महामनीषी ईसा के अमृत-पाथेय

महात्मा ईसा ने उपदेश दिया– कभी गलीली झील के तट पर, कभी शांत कंदरा में, कभी पहाड़ी उपत्यका में तो कभी पर्वत

शिखर पर। पर्वत पर महायोगी ईसा ने जो नैतिक मानवीय मूल्यों से सम्बद्ध उपदेश दिए, वे इस प्रकार हैं–

- ''धन्य हैं वे, जो अपने को हीन-दीन समझते हैं, स्वर्ग-राज्य उन्हीं का है।'' यहां समर्पण भाव से ईश्वर के आश्रय का संकेत है।

- ''धन्य हैं वे, जो विनम्र हैं, उन्हें प्रतिश्रुत देश प्राप्त होगा।'' विनम्र व्यक्ति की प्रतिश्रुत यानी स्वर्गीय राज्य का प्रतीक बताया गया है।

- ''धन्य हैं वे, जो शोक करते हैं, उन्हें सान्त्वना मिलेगी।'' शोक के साथ मुनष्य ईश्वर को याद करता है और आनन्द को उपलब्ध होता है।

- ''धन्य हैं वे, जो धार्मिकता के भूखे और प्यासे हैं– वे तृप्त किए जाएंगे।'' ऐसे लोग जो ईश्वरीय विधान का पालन करते हैं, वे भौतिक आवश्यकताओं के अभाव में संतुष्ट रहते हैं।

ईसा कहते हैं– ''तुम संसार की ज्योति हो। पहाड़ पर बनाया गया नगर छिप नहीं सकता। लोग दीप जलाकर दीवट पर रखते हैं, जिससे घर के लोगों को प्रकाश मिले। उसी प्रकार तुम्हारी ज्योति मनुष्यों के सामने प्रकाशित रहे, जिससे वे तुम्हारे भले कृत्यों को देखकर तुम्हारे स्वर्गिक पिता की महिमा का अनुभव करें।'' यहां ईसा ने अपने शिष्यों को सबके सामने आदर्श उपस्थित करने वालों के रूप में प्रस्तुत किया है।

प्रेम-करुणा का निर्झर

ईसा के अभिमत में– अपने शत्रुओं से प्रेम करो। इससे तुम अपने स्वर्गिक पिता की सन्तान बन जाओगे; क्योंकि वह भले और बुरे दोनों पर सूर्य उगाता है। ईसा ने परित्याग का उच्च आदर्श पेश करते हुए कहा– ''तुम लोगों ने सुना है–आँख के बदले आँख और दांत के बदले दांत....। परन्तु; मैं तुमसे कहता हूँ– दुष्ट का सामना न करो। यदि कोई आधा कोस बेगार में ले जाए तो उसके साथ कोस भर चले जाओ। जो तुमसे माँगता है, उसे दे दो और जो तुमसे उधार लेना चाहता है, उससे मुँह मत मोड़ो।'' ईसा यहां उच्चतम नैतिक मूल्यों की प्रस्थापना करते हैं। यदि तुम अपने भाइयों को नमस्कार करते हो तो कौनसा-सा महत्व का काम करते हो? क्या गैर यहूदी भी ऐसा नहीं करते? इसलिए तुम पूर्ण बनो, जैसे तुम्हारा स्वर्गिक पिता पूर्ण है। इन वचनों में मानवीय मूल्यों की सर्वोत्तम भूमिका के द्वारा ईश्वरीय पूर्णता की प्रेरणा है।

धर्म का आन्तरिक परिवेश

आत्मदर्शन का संबोध देते हुए ईसा ने कहा–''सावधान रहो। लोगों का ध्यान आकर्षित करने के लिए अपने धर्म-कार्यों का प्रदर्शन मत करो, नहीं तो अपने स्वर्गिक पिता के पुरस्कार से वंचित रह जाओगे। जब तुम दान देते हो तो उसके ढिंढोरा मत पिटवाओ।''

प्रदर्शन और अहंकार भाव से किए गए दान या उपवास को ढकोसला बताते हुए महाप्रभु ईसा कहते हैं– ''ढोंगियों की तरह मुंह उदास कर उपवास नहीं करो। वे अपना मुंह मलिन कर लेते हैं, जिससे लोग यह समझें कि वे उपवास कर रहे हैं। जब तुम उपवास करते हो तो अपने सिर में तैल लगाओ और अपना मुंह धो लो, जिससे लोग नहीं, केवल तुम्हारे पिता देखे, जो अदृश्य को भी देखता है, वह तुम्हें पुरस्कार देगा।''

मानवीय एकता का सिंहनाद

व्यापक मानवीय मूल्यों को व्यवहार के नैतिक आदर्शों के सांचे में ढालते हुए ईसा कहते हैं– ''दोष न लगाओ, ताकि तुम पर दोष न लग जाए। क्षमा करो, तुम भी क्षमा कर दिए जाओगे।''

ईसा कहते हैं– ''झूठे नवियों से सावधान रहो। वे भेड़ों के भेस में तुम्हारे पास आते हैं, किन्तु वे खूंखार भेड़िए हैं। उनके व्यवहार-फलों से तुम उन्हें पहचान पाओगे। हर अच्छा पेड़ फल देता है और बुरा पेड़ बुरे फल देता है। इसलिए तुम उन्हें उनके फलों से पहचान पाओगे।'' इन पंक्तियों में ढोंगी के लिए कहा गया है कि कुछ समय के लिए वे अपने को छिपा सकते हैं, पर उसके आचरण से उनकी पहचान स्वल्प समय में हो जाती है।

स्वर्ग-राज्य का लाइसेंस

सूर्यास्त के समय अपने प्रवचन को अन्तिम मोड़ देते हुए ईसा ने कहा– ''जो लोग ''हे प्रभु! हे प्रभु!' यह कहकर मुझे पुकारते हैं, उनमें से सबके सब स्वर्ग-राज्य में प्रवेश नहीं करेंगे। जो मेरे स्वर्गिक पिता की इच्छा पूरी करता है, वही स्वर्ग-राज्य में प्रवेश करेगा। जो व्यक्ति केवल प्रभु नाम की तोता रटन करते हैं वे ईश्वर पद के अधिकारी नहीं हो सकते; क्योंकि ईसा के अभिमत में प्रभु की (पिता की) इच्छा के अनुसार काम करना 'स्वर्ग-राज्य-प्रवेश' का लाइसेंस है।''

ईश्वरीय आज्ञा के पद-चिन्ह

ईसा कहते हैं– ''जो मेरी ये बातें सुनता और उन पर चलता है, वह उस समझदार मनुष्य के समान है, जिसने चट्टान पर अपना घर बनवाया हो। पानी बरसा, नदियों में बाढ़ आयी, आंधियां चलीं और उस घर से टकरायीं, तब भी वह घर नहीं बहा, क्योंकि उसकी नींच चट्टान पर डाली गयी थी।'' ढलते सूर्य पर दृष्टिपात करते हुए वे कहने लगे, ''जो मेरी बातें सुनता है; किन्तु उन पर चलता नहीं, वह उस मूर्ख के समान है, जिसने बालू की नींव पर अपना घर बनवाया है। पानी बरसा, नदियों में बाढ़ आयी, आंधियां चली और उस घर से टकरायीं। वह घर बह गया और उसका सर्वनाश हो गया।''

इस तरह ईसा के उपदेश में प्रेम, स्नेह, सद्भाव, अहिंसा, सत्य, क्षमा आदि सद्गुणों को अपनाने का संकेत मिलता है। महात्मा ईसा को जब सूली पर चढ़ाया गया तब उन्होंने प्रभु से प्रार्थना करते हुए कहा– 'प्रभो! इन लोगों को क्षमा कर दो; क्योंकि ये बेचारे नहीं जानते हैं कि हम क्या कर रहे हैं?''

करुण-हृदय फूल मुरझा जाते हैं!

● जतनलाल रामपुरिया ●

एक कवि-हृदय व्यक्ति ने फूलों के संदेश का अनुवाद करके उसे हम तक पहुंचा दिया ''जहां कहीं भद्दापन देखो, वहां सौंदर्य की सृष्टि करो।'' बात बहुत सुंदर है, पर उतनी सहज नहीं, जितनी वह लगती है।

''मृत्यु जीवन में सबसे बड़ी क्षति नहीं है। सच तो यह है कि जब हम जी रहे होते हैं उस समय हमारे भीतर जो मरता है, वह मृत्यु से बड़ी क्षति है।''

नॉर्मन् कजिन्स

अनिल पंख पर उड़ता वह जो,
जिसके स्वयं शरीर नहीं है।
किन्तु छूने जिसकी काया,
किसकी सांस अधीर नहीं है।

कन्हैयालाल सेठिया

लगभग 25-30 वर्ष पूर्व की बात है। पोद्दार कोर्ट (कोलकाता) स्थित आयकर विभाग में हर दिन मेरे दो-चार घंटे बीतते थे। वहां तीन तल्ला में एक तिपाई पर रखे एक बोर्ड पर सुंदर अक्षरों में यह पंक्ति लिखी थी Wherever you see ugliness, create some beauty. इस कथन के हार्द को हृदय तक पहुंचाने के लिए उस वाक्य की पृष्ठभूमि में गुलाब का एक फूल अति कलापूर्ण रूप से चित्रित था। मैं उस छोटे से वाक्य को रोज पढ़ता। केवल पढ़ता ही नहीं, कई बार विवश-सा एक-दो मिनट के लिए उसके पास खड़ा रह जाता। वह गुलाब मुझे कुछ कहता-सा प्रतीत होता और संभवतः मैं धीरे-धीरे अपने अवचेतन मन में यह मानने लगा था कि यह बात उस गुलाब के फूल ने ही लिखी है। इसमें संदेह नहीं कि फूलों की भी अपनी भाषा है और आदमी को कुछ कहने का उनका अपना अंदाज है। मुझे तो यह भी लगता है कि कवि अपना जितना कुछ कहते हैं, उससे अधिक फूलों की बातों का अनुवाद करते हैं।

पंचतंत्र की एक कहानी का सार है 'बिना मांगे उपदेश मत दो'। फूलों ने इस बात को नहीं माना। कोई मांगे न मांगे, कोई सुने न सुने, वे जब-तब कुछ अच्छी बात कह देते हैं। अपनी सुगन्ध भी वे बिना मांगे ही हमें सौंप देते हैं। कितने प्रयत्न से फूल अपनी सुरभि हमारी सांसों तक पहुंचाते हैं, पढ़ें

सुमनों की सुवास मनुष्य को तृप्ति प्रदान करती है और उसकी सांसों में नया विश्वास भरती है। हंसते-खेलते फूल कुछ अच्छा कहते रहते हैं। इसके लिए आदमी को उनका उपकृत होना चाहिए।

एक कवि-हृदय व्यक्ति ने फूलों के संदेश का अनुवाद करके उसे हम तक पहुंचा दिया 'जहां कहीं भद्दापन देखो, वहां सौंदर्य की सृष्टि करो।' बात बहुत सुंदर है, पर उतनी सहज नहीं, जितनी वह लगती है। 'जहां कहीं' वाली बात 'हर कहीं' पहुंच चुकी है। भद्दापन अब हर कहीं है, इसलिए 'देखो' वाली बात पर मन नहीं ठहरता।

मैं इस भ्रम में था कि 'देखो' वाली बात पर मेरा मन वहां नहीं ठहरा है, जहां उसे ठहरना चाहिए था। मगर ऐसा हुआ नहीं था। अभी की एक घटना से मुझे इस बात की प्रतीति हुई।

दृश्य-1

मैं कहीं जा रहा था। रास्ता जाम था। गाड़ी खड़ी हो गई। मेरी दृष्टि फुटपाथ की ओर गई। वहां वृक्ष का सहारा लिए एक महिला बैठी थी। पास में दो से लेकर 8-9 वर्ष तक के पांच बच्चे खड़े थे। किसी के भी तन पर पूरे वस्त्र नहीं थे। मुझे वह दृश्य भद्दा लगा और फुटपाथों पर जन्म लेने व अड़ोस-पड़ोस की भर्त्सना एवं प्रताड़ना के बीच वहीं पर पलने वाले अधनंगे और अधभूखे वे सारे बच्चे अकस्मात् मेरी आंखों में समा गये जिनसे इस महानगर का कोई कोना खाली नहीं। मेरे मन का भी अब कोई कोना खाली नहीं था। उसमें एक साथ वे सब दृश्य उभर रहे थे जो भद्दे थे, जिन्हें मैंने देखा था और जो मेरे मन में घर किये हुए थे, पर जैसे मुझे इस बात का भान नहीं था।

दृश्य-2

मैं अपने गांव में मकान बनवा रहा था। एक 10-11 साल का बच्चा भी काम पर आता था। एक दिन दोपहर को कुल्फी बेचने वाला आया। बच्चे घर में थे। मैंने सबको कुल्फी दिलवा दी। वह बाल-मजदूर भी वहां आकर खड़ा हो गया और कुल्फी खाते मेरे बच्चों की ओर ललचाई आंखों से एकटक देखता रहा। मैं उसे देख रहा था, पर मन है कि कभी नहीं होता तो नहीं ही होता। मैंने उस बच्चे को कुल्फी नहीं दिलाई और सौन्दर्य की जगह सदा-सदा के लिए मन को बोझिल बना देने वाले भद्देपन की सृष्टि कर डाली।

दृश्य-3

कुछ माह पूर्व जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं में कुछ दिन रहा। शाम को दो बच्चे दूध देने के लिए आते। दोनों सगे भाई थे। एक दिन मैंने उनसे पूछा ''पढ़ते हो?'' बोले ''हां, स्कूल जाते हैं। इसीलिए सुबह आपको दूध देने पिताजी आते हैं।'' इतनी-सी बात के साथ ही उनका संकोच दूर हो गया। वे ठहर गये। फिर अचानक बड़ा भाई मेरे पास चला आया और धीरे से बोला चीज? मेरे यह पूछने पर कि क्या कुछ खाने को चाहिए, उसने हां की मुद्रा में सिर हिलाया। मैंने एक केला उसे दिया। हाथ में आते ही वह दरवाजे की ओर दौड़ा। मैंने छोटे भाई को भी एक केला दे दिया। उसने मेरी ओर देखा। उसकी आंखों में खजाना पा लेने जैसी खुशी थी और उतने ही तीव्र आश्चर्य के भाव थे। मुझे लगा कि केले जैसा सस्ता फल भी उन्हें यदा-कदा ही नसीब होता है और इतने अनपेक्षित रूप से उसे पा लेने की बात तो उनके लिए अविश्वसनीय थी। वे प्रसन्नमना घर चले गए, पर मैं खोया-सा अपने मन में कुछ खोज रहा था। वहां वह खुशी नहीं थी जो एक बच्चे को पुलकता देखकर होती है। वहां निर्धनता और अभाव के वे भद्दे दृश्य थे जो हर कहीं हैं और जो भीतर ही भीतर सजा-सी देते रहते हैं।

एक अन्तहीन भद्दापन

अपने देश में सबसे अधिक अधभूखे बच्चे हैं। पांच वर्ष से कम आयु वाले 40 प्रतिशत से अधिक बच्चों को, जिनकी संख्या लगभग 5 करोड़ है, पर्याप्त पोषण नहीं मिलता। वे चिंताजनक रूप से 'अंडरवेट' हैं। यह सब 'सहारन' अफ्रीका से भी बदतर स्थिति है। मुंबई, कोलकाता, दिल्ली, इन तीनों महानगरों में 1,00,000 से 1,25,000 'स्ट्रीट चिल्ड्रेन' हैं और बैंगलुरु में करीब 45,000। यह भी विश्व की सर्वाधिक संख्या है। पुलिस की दृष्टि में ये आवारा हैं, समाज की दृष्टि में भिखारी और मानव-तस्करों के लिए आसान शिकार।

एक पूर्व प्रकाशित समाचार के अनुसार सन् 2004 में 45,000 बच्चे खो गये थे जिनमें से 11,000 लापता ही रहे। काम का लोभ देकर लाखों बच्चों को देशान्तरित-प्रदेशान्तरित कर दिया जाता है। उनमें से हजारों बच्चे पुनः अपने परिवार को नहीं देख पाते। अनेक माता-पिता नहीं जान पाते कि उनकी लड़कियां कहां हैं, क्या कर रही हैं? केवल काम की जगह में ही ये बच्चे रात-दिन का कठोर श्रम, दुर्व्यवहार, गाली-गलौज और शारीरिक यातना नहीं भोगते, अपने घरों में भी गरीब परिवारों के बच्चे निरंतर भयभीत और आतंकित रहते हैं।

अभाव के दयनीय दृश्यों को चित्रित करना सहज नहीं, पर इतना समझ लेना सहज है कि भूखे पेट, नंगे बदन, नंगी जमीन और खुला आकाश गरीबी का अभिशाप यहीं समाप्त नहीं हो जाता। यहां से शुरू होता है। दरिद्रता से उत्पन्न भद्दापन बहुमुखी है और अंतहीन भी। अशिक्षा और अंधविश्वास से लेकर, 'बिलो पॉवर्टी लाइन' में जीवन काटते करोड़ों लोग, प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से, समाजगत और देशगत सारी समस्याओं की जड़ में हैं।

नैतिक मूल्यों में आस्था और मनुष्योचित आचरण का घोर निर्धनता के बीच निर्वाह बहुत मुश्किल होता है। अभाव में स्नेह और ममत्व के धागे भी टूट जाते हैं। जब सब चीजों के केन्द्र में रुपया आ जाता है तब मां की ममता और पिता की वत्सलता भी दम तोड़ देती है। परिणामतः हम रोजी-रोटी से वंचित, हताशा और निराशा के वशीभूत अपने बच्चों को मारकर आत्महत्या करने वाले परिवारों और लड़कियों को बेच देने या रुपयों के लिए उनका अनचाहा जबरन विवाह कर देने वाले माता-पिता को देखते हैं। स्कूल जाने की जगह पेट पालने की चिंता से ग्रसित घरों, चाय की दुकानों, ढाबों, कारखानों आदि में डाँट-फटकार और शारीरिक सजाओं के बीच 12-15 घंटा कड़ा श्रम करने वाले अल्पवय बच्चे, किसी तरह दस-बीस रुपया पैदा करने का लक्ष्य लिए दुर्गन्ध भरे कूड़े के ढेर में से कागज, प्लास्टिक आदि बीनने वाले असहाय लोग और दूसरी तरफ सामान्य व्यापार, व्यवसाय व व्यवहार में बढ़ता छल-कपट और घटता पारस्परिक विश्वास समूची व्यवस्था के खोखलेपन के भद्दे दृश्य हैं।

अमानुषता की सीमा

दूसरा रूप नृशंसता की सीमाएं लांघती रोज सामने आती जघन्य घटनाओं का है जो उसी अव्यवस्था और दूषित परिवेश की उपज है। दया, करुणा, सहानुभूति, सहिष्णुता एवं संवेदना के लोप ने किस तरह सम्पूर्ण जाति को एक साथ अमानुष बना दिया है। निर्दयता की एक घटना देखिए

कुलसुम 9 वर्ष की वह बच्ची अपनी सहेली के साथ बकरियां चराने चरागाह जा रही थी। गर्मी का दिन था। बाजार से गुजरते हुए तरबूजों के ढेर में से कुलसुम ने एक तरबूजा उठा लिया। बिजली के खम्भे से बांधकर तीन दुकानदारों ने उसे निर्दयता से पीटना शुरू किया। ट्रक ड्राइवर भी इस क्रूर कृत्य में शामिल हो गया। भारी तरबूजों से माथे पर बार-बार चोटें! मासूम कुलसुम रोई, चिल्लाई, चुप हुई और मर गई। इसके अलावा देश और दुनिया में इस जैसी न जाने कितनी घटनाएं घटित होती रहती हैं।

करुणा जीवन के दर्शन का मूल सूत्र है। करुणा मनुष्य की पहली पहचान है। वही उसका अन्तिम परिचय भी है। सद्चिंतन, सद्वाणी और सद्आचरण की कोंपलें उस बीज से ही निकलती हैं। करुणा का स्रोत ही जब सूख जाता है, तब न आदमी के अंतस्तल में कुछ हरा-भरा बचता है और न ही धरती के अंतस्तल में।

अमेरिकन विद्वान हेनरी डेविड थोर्यू के इन शब्दों में फूलों का ही संवाद है ''There is no odour so bad as that which arises from goodness tainted.'' जब हम अक्रोध, सहिष्णुता, क्षमाशीलता जैसे गुणों को भूलते हैं, जब हम मानवीय आचार-संहिता को कलंकित करते हैं, जब हम अपने भीतर मनुष्य कहलाने का अधिकार देने वाली सद्वृत्तियों और संवेदनाओं को मरने देते हैं, तब जो क्षति होती है, वह सचमुच मृत्यु से भी बड़ी क्षति होती है।

परार्थ की स्फुरणा

श्री रतन टाटा से लंदन में एक पत्रकार ने मुम्बई स्थित विश्व के सबसे कीमती

भवन 'एन्टिल्ला' के विषय में पूछा। टाटा ने कहा "मुझे आश्चर्य है कि अरबों रुपये के भवन की भव्यता के बीच कोई क्यों रहने की इच्छा रखता है। चारों ओर जो दिखता है, उससे उसे चिंतित होना चाहिए और क्या वह कुछ अंतर ला सकता है, इस पर उसे सोचना चाहिए।..... देश को ऐसे लोगों की आवश्यकता है, जो साधारण आदमियों की कठिनाइयों को समझें और अपने विशाल वैभव के कुछ अंश को उन कठिनाइयों को कम करने के लिए नियोजित करें।..... विषमता को घटाने के लिए हम लोग बहुत कम कर रहे हैं।.... हम केवल चाहते भर हैं कि वह दूर हो, बस।"

टाटा के ये उद्‌गार चिंतन हेतु एक बड़ा प्रश्न सामने रखते हैं। अर्जन का आनन्द विसर्जन से जुड़कर और विस्तृत हो जाता है। गरीबी सबसे बड़ा अभिशाप है और शिक्षा सबसे बड़ा वरदान। बेघर परिवार के बच्चों के लिए निःशुल्क आवासीय स्कूलें बनाने हेतु एक राष्ट्रीय नीति बने तथा इस लक्ष्य की प्राप्ति हेतु उद्योग, व्यापार और व्यवसाय द्वारा उदारमना सहयोग मिले, एक सामाजिक कर्तव्य का निर्वाह हो तो एक साथ बहुत कुछ पाया जा सकता है।

परार्थ से मिलने वाला सुख अधिक तृप्तिदायक होता है। सम्पन्नता की सार्थकता विपन्नता के कष्टों को हरने में है। समृद्धि की सुगन्ध परिधि में भी रहनी चाहिए और आस-पास भी फैलनी चाहिए। मगर यह धरती स्वयं ही इतनी ज्यादा घूमती है कि बाकी सब यहां स्थिर हो चला है। अंधेरों के साथ कुछ इस तरह हम लोग रच-बस गये हैं कि प्रकाश की ओर बढ़ने की, भद्दापन मिटाने की, सौंदर्य की सृष्टि करने की मन में कोई स्फुरणा ही नहीं होती, कोई इच्छा ही नहीं जागती।

फूल अपनी बात कह देते हैं। उसे दोहरा भी देते हैं, पर आदमी फूलों की बात नहीं सुनता। सुन लेता है तो समझता नहीं। समझ लेता है तो उस पर अमल नहीं करता। कोमल, करुण-हृदय फूल यह देखते हैं और मुरझा जाते हैं।

15, नूरमल लोहिया लेन, कोलकाता - 700007

झांकी हिन्दुस्तान की

लाएंगे राज्यों के लिए लोकायुक्त मॉडल

देहरादून : केन्द्र सरकार लोकपाल विधेयक के साथ-साथ राज्यों के लिए लोकायुक्त का मॉडल भी लाएगी। सरकार का मानना है कि इससे राज्यों में समान लोकायुक्त कानून बनाया जा सकेगा। केन्द्रीय संसदीय राज्यमंत्री हरीश रावत ने यहां बताया कि संसद के शीतकालीन सत्र में ही लोकायुक्त कानून के विधेयक का मॉडल पेश किया जाएगा। प्रस्तावित लोकपाल बिल में संसद की स्थायी समिति, अन्ना हजारे, उदितराज सहित कई बुद्धिजीवियों के सुझाव शामिल किए गए हैं। रावत ने कहा कि विदेशों से काला धन वापस लाने के लिए ४८ देशों के साथ समझौते पर हस्ताक्षर करने के बाद भारत जल्द ही ४२ अन्य देशों के साथ भी समझौते करेगा।

शिक्षा से बदल सकता है जीवन

सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश ए.के. गांगुली ने स्कूली बच्चों के बीच में स्कूल छोड़ने पर चिंता जताते हुए कहा है कि देश में शिक्षा का अधिकार होने के बाद भी बड़ी संख्या में बच्चे स्कूल नहीं पहुंचे रहे हैं और जो बच्चे स्कूल जा रहे हैं, वे भी बीच में ही पढ़ाई छोड़ देते हैं। सरकार और अभिभावकों को इस दिशा में प्रयास करने चाहिएं, ताकि बच्चे स्कूल पहुंचें। उन्होंने बच्चों को देश का भविष्य बताते हुए कहा कि शिक्षा के माध्यम से ही जीवन में परिवर्तन लाया जा सकता है।

उत्तरप्रदेश के चार भाग : प्रस्ताव पारित

लखनऊ, २१ नवम्बर : उत्तरप्रदेश विधानसभा में मुख्यमंत्री मायावती ने प्रदेश को चार छोटे राज्यों में बांटने की एक लाइन का प्रस्ताव रखा जो ध्वनिमत से मात्र २५ सेकण्ड में पास हो गया। प्रस्ताव वास्तव में प्रदेश के लिए कितना जरूरी है, यह कहना मुश्किल है, लेकिन मोटे तौर पर आभास यही होता है कि मायावती ने राजनीतिक फायदे के लिए उत्तर प्रदेश को बांटने का दाव खेला है। अब गेंद कांग्रेस के पाले में है और उस भाजपा के भी पाले में, जिसने मायावती के प्रस्ताव का विरोध किया है। विधानसभा के इस शीतकालीन सत्र में प्रदेश को चार राज्यों-पूर्वांचल, अवध प्रदेश, बुंदेलखंड और पश्चिमी प्रदेश में विभाजित करने का प्रस्ताव पारित कराने को मायावती का संकल्प केवल राजनीतिक रूप से ही नहीं, बल्कि सामाजिक और आर्थिक रूप से भी पूरे देश के लिए महत्वपूर्ण है। देखना है, अब केन्द्र सरकार इस पर क्या रुख अपनाती है! वैसे सावधान रहना होगा कि सिर्फ राजनीतिक आधार पर किसी नये राज्य का गठन नहीं हो। व्यापक जनकल्याण और विकास के दृष्टिकोण से बने।

मानवता की धरती पर अपराधों के रक्तबीज

● साध्वी कनकश्री ●

विश्व में जब से पूंजी, प्रौद्योगिकी, बाजार, नशा और टी.वी. की संस्कृति प्रतिष्ठित हुई है, आदर्शों और मूल्यों की संस्कृति आवरण में सिमटने लगी है। मूल्य टूट रहे हैं। जीवन की बुनावट बिखर रही है। उपभोक्ता-संस्कृति जड़ें जमा रही है। संयम, सादगी की फसलें सूख रही हैं। समाज में जब पैसे की कीमत बढ़ती है तो इंसान की कीमत घटती है और बंदूक की ताकत बढ़ने लगती है। आज ऐसा समूची दुनिया में हो रहा है।

समाचार पत्र या अन्य पत्र-पत्रिकाओं में जब यह समाचार पढ़ते हैं कि पांच-सात वर्ष के बच्चे ने इतनी हत्याएं कर दीं। 13-14 वर्ष के किशोरों ने मिलकर एक ही परिवार के पांच सदस्यों की निर्मम हत्या कर दी। संभ्रांत परिवारों के पढ़े-लिखे नौजवानों का गिरोह कारों की चोरी के आरोप में पकड़ा गया... तो सहज ही सवाल उठता है कि क्यों हो जाते हैं ये बच्चे, ये किशोर और ये युवक इतने खूंखार और अपराधी? आश्चर्य तो यह है कि ऐसी घटनाएं शहरों, महानगरों के लिए आम बात हो गयी हैं।

हिंसा और युवा मानसिकता विषय पर गठित अमरीकी मनोवैज्ञानिक संगठन ने जो अपनी अध्ययन रिपोर्ट प्रस्तुत की वह तो और अधिक चौंकाने वाली है। उसके अनुसार अमेरिका के स्कूली छात्र हर रोज अपने साथ दो लाख सत्तर हजार बंदूकें लेकर जाते हैं। इनमें 80 प्रतिशत की उम्र 20 वर्ष से कम आंकी गयी है। यह रिपोर्ट बताती है कि अमेरिकी विद्यालयों में हर साल हिंसक अपराध और चोरी की 30 लाख घटनाएं घटती हैं। इस अध्ययन के अंतर्गत छठी से बारहवीं कक्षा के 2508 छात्रों का सर्वे किया गया था।

अपराधी मानसिकता के कारणों की मीमांसा से ज्ञात हुआ कि उन छात्रों में से 40 प्रतिशत ने अनेक लोगों को गोली से मरते हुए या घायल होते देखा है। इसलिए उनमें से 35 प्रतिशत के मन में यह भय बैठ गया कि वे भी एक न एक दिन ऐसे ही मारे जाएंगे। यह भय उन्हें बंदूक रखने को विवश करता है। सुना है, वहां हर दूसरा छात्र एक घंटे में बंदूक हासिल कर लेता है। वहां छोटे-छोटे बच्चे भी अपना गेंग बनाकर रखते हैं। सन् 92 में वहां 25 हजार हत्याएं हुईं, उनमें से 30 प्रतिशत हत्याओं के लिए कम उम्र वाले किशोर जिम्मेदार थे।

भारतवर्ष में भी पिछले कुछ वर्षों में युवा मानसिकता जिस तेजी के साथ अपराधों और हिंसक घटनाओं की ओर बढ़ रही है, उसे देखते हुए लगता है, देश बारूद के ढेर पर खड़ा है। उसमें कभी भी विस्फोट हो सकता है। विद्यालय/विश्वविद्यालय हिंसक गतिविधियों के केन्द्र बन रहे हैं। छोटे बच्चों की तो बात ही क्या स्वयं प्रोफेसर भी उन हिंसक विद्यार्थियों से डरे/सहमे से रहते हैं।

आधुनिक विकास-बोध

इन बाल अपराधों या युवा अपराधों के पीछे अनेक कारण हो सकते हैं। उनमें प्रमुख हैं सामाजिक, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक कारण।

अपराध-विशेषज्ञों तथा मनश्चिकित्सकों की आज तक यह परंपरित राय रही है कि आदमी जीवन की प्राथमिक अपेक्षाओं की पूर्ति के अभाव में अपराधी या हत्यारा बनता है। लेकिन इस 'पोस्ट डेवलपमेंट ऐज' विकासोत्तर युग में मनोविज्ञान की यह परंपरित मान्यता भी लड़खड़ा गयी है। इस तथ्य को ऐसे भी प्रस्तुत किया जा सकता है कि विज्ञान और तकनीकी के विकास के युग में प्राथमिक जरूरतों की सीमाओं का विस्तार हो गया है। वे सीमाएं नयी हो गई हैं। आज प्राथमिक जरूरतों के खाते में आ गये हैं मौजमस्ती, पिकनिक और अधिक से अधिक सुविधावादी दृष्टिकोण।

अभाव या बेकारी ही यदि अपराध की जड़ है तो यह बात भारत जैसे गरीब देश में लागू हो सकती है, पर अमेरिका जैसे समृद्ध देशों में, जहां जीने के प्राथमिक संसाधन हर व्यक्ति को उपलब्ध हैं, आखिर युवा पीढ़ी इतनी संवेदनहीन और हिंसक क्यों हो रही है? पर, केवल भारत या अमेरिका का ही प्रश्न नहीं है, संपूर्ण विश्व की युवा चेतना आज दिग्भ्रमित हो रही है। उसकी पहचान बन गयी है चोरी, डकैती, हत्या, आतंक, वासना और विलासिता। इसका सबसे प्रमुख कारण है- आधुनिक विकास-बोध।

संचार माध्यम मनोरंजन के नाम पर जो कुछ परोस रहे हैं, उनमें उपभोक्ता संकृति ही काम कर रही है। फिल्म निर्माताओं को यह नैतिक प्रश्न कभी व्यथित नहीं करता कि उनके कार्यक्रमों का समाज पर क्या प्रभाव पड़ रहा है। उनका एकमात्र उद्देश्य रहता है अधिक से अधिक पैसा कमाना। पहले अधिकांश फिल्में सामाजिक, ऐतिहासिक और धार्मिक आधार पर बनती थीं, पर आज दूरदर्शन के व्यापक प्रभाव के कारण लड़खड़ाते हुए फिल्म उद्योग को कायम रखने के लिए उसमें हिंसा, मारधाड़ और विकृत मानसिकता वाले तत्त्वों की घुसपैठ हो गई है।

प्रसिद्ध समाजशास्त्री अल्विन टॉफ्लर का मानना है कि युवा पीढ़ी के इस पतन का प्रमुख कारण है उपभोग केन्द्रित जीवन-व्यवस्था। अधिक से अधिक भोग और सुविधा की लालसा ने सामाजिक संबंधों का अतिक्रमण किया है, संवेदनाओं को शुष्क बना दिया है।

आधुनिक विकास-बोध ने इच्छाओं को जिस तरह विस्तारित किया है उसने मानवता की धरती पर अपराधों के रक्तबीज बोए हैं। आसुरी शक्तियों को और अधिक प्रखर बनाया है। युवा पीढ़ी इसके प्रभाव क्षेत्र से अधिक जुड़ी हुई है। भारत के कुल अपराधों में भी आधे से अधिक अपराधों में तीस वर्ष से कम उम्र के युवा ही लिप्त पाये गये हैं।

भावनात्मक संरक्षण का अभाव

आर्थिक प्रतिस्पर्धा के इस युग में आधुनिक माता-पिता अपने बच्चों के प्रति पर्याप्त ध्यान नहीं दे पाते। बच्चों को भावनात्मक संरक्षण देने की जगह वे या तो कामकाज में अधिक व्यस्त रहते हैं या अपने व्यक्तिगत सुख-भोग में इतने लीन रहते हैं कि बचपन एकदम उपेक्षित हो जाता है। इससे बाल मन कुंठित हो जाता है। ये ही कुंठाएं आगे चलकर अनेक प्रकार की मानसिक विकृतियों को जन्म देती हैं। उन्हीं की परिणति है- युवा विद्रोह या युवा अपराध।

पश्चिमी समाज की संरचना जिस दायित्वहीनता के आधार पर हुई है, उसके अंतर्गत हर रिश्ता एक कमोडिटी-एक वस्तु का आकार ले चुका है। कोई किसी के प्रति जिम्मेदारी नहीं महसूसता। स्नेह और आत्मीयता प्रवासी बन गये हैं, सारी मानवीय प्राथमिकताएं निजी स्वार्थों के इर्द-गिर्द घूम रही हैं, व्यक्तिगत स्तर पर भी और सामूहिक स्तर पर भी। सर्वत्र बाजार या अर्थ का गणित है, आर्थिक प्रतिबद्धता है। व्यक्तिगत स्तर पर बच्चे की स्वस्थ अभिरुचियों को पुष्ट करने की दिशा में न तो अभिभावकों का ध्यान है, न उनके पास समय है।

टी.वी. के दायरे में सिमटती कल्पना शक्ति

माता-पिता के स्नेह से वंचित और उपेक्षित बच्चे अपना अधिक समय टी.वी. के साथ बिताना शुरू कर देते हैं। यह स्थिति आने वाली पीढ़ी को किस तरह खोखला बना देती है, इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। अधिक समय तक टी.वी. देखने से बच्चों का बौद्धिक स्तर गिर जाता है। कल्पना शक्ति क्षीण हो जाती है। टी.वी. देखने से बच्चों के 'आई क्यू स्कोर'- बौद्धिक स्तर में भी गिरावट आती है। डेढ़ वर्ष के शोध के पश्चात् एक वैज्ञानिक रिपोर्ट में बताया गया कि निरंतर टी.वी. से चिपके रहने वाले बच्चों का औसत 'आई क्यू स्कोर' जो प्रारंभ में 102 था, घटकर 64.5 हो गया। इसके विपरीत पढ़ने में रुचि रखने वाले बच्चों का 67 से बढ़कर 110.5 हो गया। टी.वी. ग्रुप को पुस्तकें दी गयीं तो रुचि नहीं जागी। उनकी कल्पना शक्ति भी तुलनात्मक रूप से क्षीण पायी गयी। सोचने-समझने की शक्ति भी नष्ट हो गयी। इससे वे पढ़ाई में भी पिछड़ गये। इससे वे हीनता-ग्रंथि से आक्रांत हो जाते हैं। यही त्रासदी एक उम्र के बाद उन्हें अपराधों के गुमनाम अंधेरे में धकेल देती है।

पश्चिमी सभ्यता के बढ़ते प्रभाव के कारण समाज में जिस गति से अनुशानहीनता, अवज्ञा और हिंसा बढ़ रही है, उसमें दूरदर्शन की प्रमुख भूमिका है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, केबल और डिश के आगमन ने युवा पीढ़ी के बहुमुखी पतन के द्वार खोल दिये हैं। संचार माध्यम मनोरंजन के नाम पर जो कुछ परोस रहे हैं, उनमें उपभोक्ता संस्कृति ही काम कर रही है। फिल्म निर्माताओं को यह नैतिक प्रश्न कभी व्यथित नहीं करता कि उनके कार्यक्रमों का समाज पर क्या प्रभाव पड़ रहा है। उनका एकमात्र उद्देश्य रहता है अधिक से अधिक पैसा कमाना। पहले अधिकांश फिल्में सामाजिक, ऐतिहासिक और धार्मिक आधार पर बनती थीं, पर आज दूरदर्शन के व्यापक प्रभाव के कारण लड़खड़ाते हुए फिल्म उद्योग को कायम रखने के लिए उसमें हिंसा, मारधाड़ और विकृत मानसिकता वाले तत्त्वों की घुसपैठ हो गई है।

एक सर्वे के अनुसार 16 की उम्र तक पहुंचते-पहुंचते बच्चा दूरदर्शन के माध्यम से 30 हजार हिंसक घटनाएं एवं अश्लील चित्र देख चुका होता है। सुना है, अमेरिका में प्राथमिक स्कूल तक आने वाला बच्चा दूरदर्शन पर आठ हजार हत्याएं एवं एक लाख हिंसक दृश्य देख चुका होता है। एक नये शोध के अनुसार अमेरिका के 16 चैनल हर तीसरे मिनट पर एक हत्या और 60 सेकंड पर एक हिंसक दृश्य दिखाते हैं। इससे बच्चों के मन-मस्तिष्क पर इतना बुरा प्रभाव पड़ता है कि उनकी संवेदनाएं क्षीण हो जाती हैं। प्रेम, करुणा, सहिष्णुता जैसे मानवीय मूल्य लुप्त हो जाते हैं। उनके मस्तिष्क एवं ग्रंथितंत्र के स्राव बदल जाते हैं। फलस्वरूप वे कम उम्र में ही क्रूर, खूंखार और अपराधी बन जाते हैं। इसीलिए स्कूलों का 15 प्रतिशत बजट बच्चों की हिंसा से निपटने में ही व्यय हो जाता है।

इससे स्पष्ट हो जाता है कि आधुनिक विकास-बोध समाज और देश को विनाश की ओर ले जा रहा है।

जो युवा देश की धड़कन, हर क्रांति का अगुआ और सामाजिक परिवर्तन का सूत्रधार होता है, वही यदि पथभ्रष्ट हो जाएगा तो देश की आशा का आधार कौन बनेगा?

अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी ने प्रारंभ से ही इस समस्या पर ध्यान दिया। उन्होंने अणुव्रत के माध्यम से विद्यार्थियों का सही पथ-दर्शन किया। छात्र हिंसा, उपद्रव, तोड़फोड़ आदि विध्वंसक प्रवृत्तियों से मुक्त रहें, इस दृष्टि से उन्होंने विद्यार्थी जीवन में संयम और अनुशासन की प्रतिष्ठा का तीव्र प्रयत्न किया। परिणामस्वरूप देश के लाखों विद्यार्थी अणुव्रती बने हैं, जगह-जगह अणुव्रत-छात्र- परिषदें गठित हुई हैं। नैतिक क्रांति की मशालें हाथ में थामे वे विद्यार्थी संस्कारी जीवन के प्रतीक बन गये हैं।

प्रेक्षाध्यान और जीवन विज्ञान के

पुरस्कर्ता आचार्यश्री महाप्रज्ञ के शब्दों में **'हिंसा की समस्या से पूरा विश्व संत्रस्त है। अहिंसा का उपदेश किसी को हिंसा से रोक नहीं सकता। आज जरूरत है, देश के नागरिकों को अहिंसा का प्रशिक्षण दिया जाए। इसका पहला पगथिया है, शिक्षा प्रणाली को अहिंसा और शांति के प्रशिक्षण के साथ जोड़ा जाए। विद्यार्थी को पहले से ही यदि अहिंसा और संयम प्रधान जीवन शैली का प्रशिक्षण दिया जाए तो उसके दिमाग में हिंसा के संस्कार पनप ही नहीं सकते। अपेक्षा है नयी पीढ़ी को सृजनात्मक स्वस्थ विकल्प दिया जाए।'**

इसी चिंतन के आधार पर आचार्य महाप्रज्ञ ने एक नया शिक्षा-दर्शन प्रस्तुत किया। मूल्यपरक शिक्षा के तहत उन्होंने जीवन विज्ञान का पूरा पाठ्यक्रम निर्मित कर दिया। वह पाठ्यक्रम मात्र पुस्तकीय या सैद्धांतिक ही नहीं है, प्रायोगिक है। संपूर्ण व्यक्तित्व विकास की वैज्ञानिक प्रविधि है। इसके प्रायोगिक प्रशिक्षण द्वारा मस्तिष्कीय रसायन बदलते हैं। आवेगों और संवेगों पर नियंत्रण स्थापित कर स्वस्थ और सृजनशील व्यक्तित्व का निर्माण किया जा सकता है।

भगवान महावीर ने कहा

न चित्ता तायए भासा
कओ विज्जाणुसासणं।

आत्मानुशासन और स्वनियंत्रण की क्षमता जगाए बिना, न विभिन्न भाषाओं का ज्ञान त्राण बनता है न नाना विद्या-शाखाओं का अध्ययन। आत्मा, विद्या और सदाचार ही ऐसे सशक्त उपक्रम हैं, जिनके माध्यम से हिंसा और अपराधों के रक्तबीज अस्तित्वहीन हो सकते हैं। संयम, सादगी, करुणा, सहानुभूति और सहअस्तित्व के संस्कार बीज पल्लवित हो सकते हैं। ■

जिसने जिंदगी में कोई गलती नहीं की, उसने कभी कुछ नया भी नहीं सीखा
– अल्बर्ट आइंस्टीन –

बोध-कथा

वर्चस्व अपना-अपना

● रमेश कोठारी ●

एक पथिक महाअरण्य से गुजर रहा था। राह में उसे चार महिलाएं मिलीं। पथिक ने उनसे पूछा– ''बहिनों! कहां रहती हो, तुम्हारे नाम क्या हैं?''

बहिनों ने पथिक की जिज्ञासा समाहित करते हुए कहा– ''भैया! हमारे नाम हैं''– ''बुद्धि, लज्जा, हिम्मत व तन्दरुस्ती और हम रहती हैं– मनुष्य के मस्तिष्क में, आंख में, हृदय में तथा उदर में।''

पथिक उन्हें नमस्कार कर आगे बढ़ा ही था कि उसे सामने से आते हुए चार पुरुष मिले। अभिवादन कर पथिक ने उनसे भी वही पूछा। पुरुषों ने बड़े गर्व के साथ अपने नाम और निवास क्रमशः यों प्रस्तुत किये – महाशय! हमारे नाम हैं– क्रोध, लोभ, भय और रोग तथा हम व्यक्ति के मस्तिष्क, आंख, हृदय व उदर में प्रवास करते हैं।

कुछ देर तक पथिक किंकर्त्तव्यविमूढ-सा विचारों में खो गया। उसको इस प्रकार के हावभाव में डूबा देख, उन पुरुषों ने पूछा– अरे! आप कहां खो गये?

पथिक ने अपना मौन तोड़ते हुए कहा– महानुभावों! मैंने सुना है और मुझे विश्वास है कि वहां तो वे चार महिलाएं रहती हैं जो मुझे अभी-अभी आप लोगों के पहले मिली थीं। फिर आप लोग वहां कैसे रहते हैं?

इस पर पुरुषों ने इठलाते हुए पथिक के प्रश्न का यों उत्तर दिया– ''देखो, हर व्यक्ति व परिवार में अपने-अपने संस्कारों व संस्कृति का प्रभाव होता है। जब तक व्यक्ति अपने मूल स्वभाव और आत्म-भाव को नहीं जानेगा, नहीं समझेगा तब तक यह बिगाड़ व आपाधापी का झमेला चलता रहेगा। आदमी के विचारों में विकृति के कारण ही हमें शासन करने का अवसर मिलता है। फिर हमारे साम्राज्य के माहौल में वे अबलाएं, बेचारी कैसे टिक सकती हैं? उन्हें तो वहां से नौ-दो ग्यारह होना ही पड़ता है।''

उन्होंने आगे समझाया– क्रोध का बुद्धि पर, लोभ का लज्जा पर, भय का हिम्मत पर एवं रोग का तन्दरुस्ती पर सदा आधिपत्य हुआ करता है। हमारे प्रवेश के साथ ही वे अबलाएं चुपके से निकल जाती हैं।

अब बस, समझ लीजिये– सबका अपना-अपना संस्कार, स्वभाव, प्रभाव और वर्चस्व होता है।

666/2 वास्तु निर्माण सोसायटी,
सेक्टर- 22, गांधीनगर (गुजरात)

ढाई लाख चेहरों को मुस्कान देने वाले

निष्काम-कर्मयोगी डॉ. शरदकुमार

एक निष्काम कर्मयोगी की तरह अन्तिम समय तक अपने जादुई कौशल से लाखों गरीबों की सेवा करते-करते विश्व प्रसिद्ध प्लास्टिक सर्जन डॉक्टर शरदकुमार दीक्षित का इसी 15 नवम्बर को न्यूयार्क में निधन हो गया।

आधा शरीर लकवाग्रस्त, गले के कैंसर ने आवाज छीन ली। दो बार हार्ट अटैक आया। बाईपास सर्जरी करवानी पड़ी। दिल ने 80 प्रतिशत काम करना बन्द कर दिया। यह सब एक डॉक्टर का अपने ही शरीर के साथ अनवरत संघर्ष था; किन्तु भयंकर बीमारियां और अपंगता भी उनको कर्तव्य से विमुख नहीं कर पायीं। डॉ. शरद ने पूरी सेवा भावना से ढाई लाख गरीबों की मुफ्त प्लास्टिक सर्जरी कर उनके चेहरों पर मुस्कान गढ़ी।

पंढ़रपुर (महाराष्ट्र) के एक मध्यमवर्गीय परिवार में जनमे शरदकुमार की प्रारम्भिक पढ़ाई वर्धा में हुयी। मेडीकल की शिक्षा उन्होंने नागपुर में ली। 1958 में अमेरिका से सिविल सर्जन की डिग्री ली। उनकी निस्वार्थ सेवाओं का मूल्यांकन करते हुए उन्हें पांच बार नोबेल पुरस्कार के लिए नामांकित किया गया। भारत सरकार ने 2001 में उन्हें पद्मश्री अलंकरण से सम्मानित किया।

पुणे में रहने वाली बड़ी बहन लीला ताई के अनुसार डॉ. शरद का बचपन महाराष्ट्र के वर्धा की एक चाल (घर) में गुजरा। दो कमरों के उस घर में छह भाई-बहिन और माता-पिता साथ रहते थे। परिवार के पास मेडिकल की पढ़ाई के लिए पैसे नहीं थे। स्कॉलरशिप की मदद से शरदकुमार ने 1956 में मेडिकल ग्रेजुएशन पूरा किया। दो साल बाद उनका चयन अमेरिका जाने के लिए हो गया। वहां जाकर प्लास्टिक सर्जरी में महारत हासिल की। वे गरीबी में बिताए अपने दिनों को कभी नहीं भूले। जब उनको लगा कि गरीब भारतीयों के लिए प्लास्टिक सर्जरी का खर्च उठाना लगभग नामुमकिन है तो उन्होंने निःशुल्क प्लास्टिक सर्जरी करने का अपना मिशन शुरू कर दिया।

देशभर में उनके हजारों मेडिकल केम्प आयोजित हुए। पहला केम्प 1968 में मुम्बई–वर्ली में हुआ। गरीबों की मदद का यह अनूठा सिलसिला पिछले वर्ष राजकोट तक चला। 42 वर्षों तक वे हर साल छः महिनों के लिए न्यूयार्क से भारत आकर चिकित्सा शिविरों में गरीब लोगों की चिकित्सा करते रहे। जब भी आते अपने खर्च से दवाइयां और ऑपरेशन के लिए जरूरी अन्य सामान, औजार आदि लेकर आते। चिकित्सा शिविरों में लगातार 18-18 घंटों तक ऑपरेशन आदि करते। डॉ. शरद ने एक साक्षात्कार में बताया कि मुझे रात-दिन काम करते देखकर कभी-कभी लोग रो देते हैं। वे मुझसे कहते हैं कि आप हमें इतना क्यों दे रहे रहे हो? तब मैं उनसे कहता हूं कि ईश्वर भी तो हम सबके लिए 24 घंटे काम करता है, फिर मैं तो इंसान हूं, यदि इतना-सा करता हूं तो कौन सी बड़ी बात है?

प्लास्टिक सर्जरी के एक ऑपरेशन पर लगभग 25,000 रुपये का खर्च आता है; किन्तु जरूरतमंदों के लिए डॉ. शरद यह सर्जरी निःशुल्क करते थे। अपने मिशन के लिए पैसों की कमी न रहे इसलिये वे अमेरिका में रहना ही उन्होंने पसंद किया। भारत में बसने का विचार ही नहीं किया। उनके सहयोगी इन्दौर के अनिल भंडारी बताते हैं– डॉ. दीक्षित इतनी शीघ्रता से सर्जरी करते हैं कि प्रशिक्षु डॉक्टरों को उनकी प्रक्रिया सीखने के लिए पहले उसकी वीडियो रिकार्डिंग करनी पड़ती है तथा फिर स्लो-मोशन में वी.सी.डी. चलाकर समझनी पड़ती है। एक सर्जरी में उन्हें 30 मिनिट से भी कम समय लगता है।

मिनटों की सर्जरी बदल देती जीवन

डॉ. दीक्षित द्वारा की गई सर्जरी मरीज का जीवन बदलकर रख देती थी। कटे होंठ की वजह से जो बच्चे दूध नहीं पी पाते, उन्हें मिनटों की सर्जरी से ठीक कर देते। 15 मिनट के ऑपरेशन से आंखों का भेंगापन ठीक कर देते। वे फेशियल करेक्टिव सर्जरी के विशेषज्ञ थे। सर्जरी के लिए छोटे बच्चों और शादी योग्य युवक-युवतियों का विशेष ध्यान रखते थे। वे कहते थे कि मेरी परेशानियां उन बच्चों के कष्ट के सामने कुछ नहीं हैं जो चेहरे पर विकृतियां लेकर सर्जरी की उम्मीद लेकर मेरे पास आते हैं।

सर्जरी के लिए डॉ. दीक्षित महाराष्ट्र के अलावा गुजरात, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, दिल्ली, उत्तरप्रदेश, राजस्थान, तमिलनाडु, कर्नाटक आदि प्रदेशों में भी प्रायः जाते रहते हैं।

एक निःस्वार्थ, निरभिमानी, ईश्वर भक्त मानवता के सेवक डॉ. शरदकुमार दीक्षित चिकित्सा जगत में एक दैदीप्यमान नक्षत्र के रूप में सदा चमकते रहेंगे।

अणुव्रत डेस्क

हम अपने कर्तव्यों के प्रति कितने सजग हैं?

● डॉ. चंचलमल चोरड़िया ●

आज चारों तरफ तनाव, असंतोष एवं अशान्ति का वातावरण है। चाहे गृहस्थ हो या साधक, नौकर हो या मालिक, कर्मचारी हो या पदाधिकारी, जनता हो या नेता, परिवार हो या समाज, सामाजिक संस्थाएं हों या संगठन। हमारी दूसरों से अपेक्षाएं बढ़ती जा रही हैं, परन्तु हम अपने कर्तव्यों एवं दायित्वों के प्रति उदासीन होते जा रहे हैं। अधिकार सभी चाहते हैं, परन्तु उसके लिए सेवा, त्याग, तपस्या, समर्पण, निष्ठा व विश्वसनीयता का आचरण करना आवश्यक नहीं समझते। हम बिना परिश्रम किये अथवा बहुत कम मेहनत करके सब कुछ अथवा अधिक से अधिक लाभ प्राप्त करना चाहते हैं, भले ही उसके लिए हमें प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष रूप से अकरणीय अथवा गलत आचरण ही क्यों न करना पड़े।

प्रायः सभी परिवारों में अभिभावक, सम्प्रदायों में आचार्य, राष्ट्र में नेता, कार्यालयों में पदाधिकारी, अनुशासन चाहते हैं, परन्तु उनमें से अधिकांश स्वयं निष्ठापूर्वक बिना पक्षपात सबके साथ सद्भाव से अपने कर्तव्यों का निर्वाह नहीं करते। आदेशों का पालन सभी चाहते हैं, परन्तु अपने आश्रितों का हृदय कैसे जीता जाये, उनकी कठिनाइयों, दुःखों अथवा अशांति का निवारण कैसे किया जाये, इसके प्रति सजगता नहीं दिखाते। सास अपनी बहू से अपेक्षाएं तो बहुत करती है, परन्तु उसको बेटी के समान स्नेह देना आवश्यक नहीं समझती। मालिक नौकर से अधिकाधिक कार्य तो लेना चाहते हैं, परन्तु उसकी निम्नतम आवश्यकताओं का ख्याल भी नहीं करते। गुरु शिष्य से सेवा व आज्ञा पालन की तो आशा करते हैं, परन्तु शिष्य को अपने लक्ष्य में बढ़ाने हेतु वांछित सहयोग नहीं करते, शिष्य की मनःस्थिति एवं क्रिया-कलापों का सजगतापूर्वक ध्यान नहीं रखते, जिससे शिष्य साधना के पावन-पथ से भटक जाता है। नेता अपने सुख और स्वार्थ का ही ध्यान रखें, प्राप्त अधिकारों का दुरुपयोग करें, परन्तु प्रजा की समस्याओं के प्रति उपेक्षा रखें तो वे भी अपने कर्तव्यों का ईमानदारीपूर्वक पालन नहीं करते। इसी कारण आज आपसी भेदभाव एवं विश्वास कम होता जा रहा है।

अपने से बड़ों की आज्ञा का पालन करना, सेवा सुश्रूषा करना, उनके अनुभवों का लाभ उठाने हेतु मार्गदर्शन लेना, व्यक्तिगत स्वतंत्रता एवं स्वाभिमान में बाधक समझा जा रहा है। **भारतीय संस्कृति की पावन परम्परा में माता-पिता एवं गुरु को देवता माना गया है किन्तु इसके गूढ़ रहस्य को हम नहीं समझ पा रहे हैं, जो हम अपने प्रति चाहते हैं वैसा ही आचरण दूसरों के प्रति करना चाहिए। पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव हमारे मन-मस्तिष्क पर हावी होता जा रहा है। हमारी मान्यताएं बदल रही हैं, चिंतन में आध्यात्मिकता गौण होती जा रही है एवं स्वच्छन्द मनोवृत्ति बढ़ रही है। पारिवारिक एवं सामाजिक बन्धन समयानुकूल भी नहीं लग रहे हैं। अपनी क्षणिक उपलब्धियों के फलस्वरूप लोक-मर्यादाओं के विरुद्ध कार्य करते हुए हमें तनिक भी संकोच नहीं हो रहा है। करणीय एवं अकरणीय के भेद का बोध समाप्त होता जा रहा है।** व्यक्ति को जो अनुकूल एवं प्रिय लगता है वह उसी को करना चाहता है। यदि उसको ऐसा करने से रोका जाता है तो परिवारों में, समाज एवं सम्प्रदायों में शांति भंग होते देर नहीं लगती। विभिन्न परिस्थितियों में हमारे कर्तव्यों की प्राथमिकताएं क्या हैं उसका सही चिंतन नहीं हो पा रहा है, तब सारी जिम्मेदारियों को निभाने का तो प्रश्न ही कहां?

हमारे क्या कर्तव्य हैं और उनका हम कितनी निष्ठापूर्वक प्राथमिकताओं के आधार पर पालन करते हैं; यह चिंतन का विषय है। हमारा दृष्टिकोण व्यापक हो, हम समाज के लिए हितकारी बनें एवं सभी का अधिकाधिक सहयोग प्राप्त करें यही सफलता का मूलमंत्र है। अभिभावक का कर्तव्य है कि परिवार का सुव्यवस्थित रूप से लालन-पालन करने के साथ सभी सदस्यों में आपसी सद्भाव एवं प्रेम बनाये रखना, बच्चों को स्वावलम्बी एवं सुसंस्कारित बनाना तथा उन्हें व्यसनों से मुक्त रखना। इसके लिए आवश्यक है, अभिभावक बच्चों को सद्पुरुषों के सम्पर्क में लाते रहें, सत्साहित्य पढ़ने, स्वाध्याय करने, व्रत-नियम लेने की निरन्तर प्रेरणा देते रहें। बच्चों की गतिविधियों एवं संगति पर ध्यान रखे। जो अभिभावक बच्चों को अत्यधिक लाड़-प्यार देते हैं एवं अन्य बातों की उपेक्षा करते हैं या ध्यान ही नहीं देते हैं तो उनके बच्चों में मानवीय गुणों का विकास कैसे संभव हो सकता है? ऐसे अभिभावक भविष्य में बच्चों के आचरण एवं व्यवहार के कारण तनावग्रस्त रहें तो आश्चर्य नहीं। परिवारों में स्थायी एवं मधुर सम्बन्ध बनाये रखने के लिए अभिभावकों का विवेक, अनुशासन व पक्षपात रहित अपने कर्तव्यों का पालन करना सबसे महत्वपूर्ण होता है।

आज कर्तव्यों की उपेक्षा के कारण कहीं-कहीं पर दाम्पत्य जीवन में भी दरारें पड़ जाती हैं। जहां पति पत्नी को अपनी सेविका मात्र समझे, उसको वांछित स्नेह नहीं दे, उत्पीड़ित करे या उसके स्वाभिमान पर चोट पहुंचाये, उसके सुख-दुःख का भागीदार न

बने एवं उसकी स्थिति व भावना की उपेक्षा करे तो वे पति अपने कर्तव्यों के प्रति उदासीन ही कहे जायेंगे। पत्नी का भी कर्तव्य है कि वह ससुराल पक्ष के सभी सदस्यों को यथोचित सम्मान दे। बड़ों की सेवा-सुश्रूषा करे। उनके प्रति विनय का व्यवहार कर उनके मार्गदर्शन एवं अनुभवों का लाभ उठाये। अपने 'धर्म-पत्नी' कथन को सार्थक बनाने के लिए उसे पति को धर्म के मार्ग पर बढ़ाने का नियमित प्रयास तथा सहयोग करना चाहिए।

यह भी चिंतन करना चाहिये कि जो अधिकार मांगने से नहीं मिलते वे निष्ठा, विश्वसनीयता एवं समर्पण से स्वतः मिल जाते हैं। सुखी दाम्पत्य जीवन के लिए दोनों के द्वारा अपने कर्तव्यों का विवेकपूर्ण पालन आवश्यक होता है।

परिवार में पति-पत्नी के अन्य सदस्यों के प्रति भी कर्तव्य होते हैं। आने वाले अतिथियों के प्रति विवेकपूर्ण आचरण आवश्यक होता है। आज विवेक के अभाव में दायित्वों की प्राथमिकताएं निश्चित नहीं हो पा रही हैं। पति-पत्नी एक-दूसरे से इतने अधिक प्रभावित होते हैं कि परिवार के अन्य सदस्य उन्हें अपने सुख में बाधक जैसे लगते हैं। वे कोई न कोई बहाना ढूंढ कर अपने को अलग रहने का मार्ग प्रशस्त कर लेते हैं। वे भूल जाते हैं कि माता-पिता की भी उनसे अपेक्षाएं हैं, उनको सुख पहुंचाना, उनकी सेवा व सहयोग करना भी उनका परम कर्तव्य है।

परिवार के सदस्यों में आपसी सद्भाव, प्रेम, सहिष्णुता, मधुरता प्रायः लुप्त होती जा रही है। अपने स्वाभिमान की रक्षा के नाम पर परिवार में विघटन को प्रोत्साहित करने वालों को चिंतन करना होगा कि 'स्वाभिमान' क्या है? यदि बड़ों के आदेशों-निर्देशों से, उनके प्रति विनय, सेवावृत्ति एवं मानवीयता के आचरण में स्वाभिमान को कोई चोट पहुंचती है तो वह स्वाभिमान नहीं, अपितु व्यक्ति का अहम् ही होता है। अहम् व्यक्ति की प्रगति अवरुद्ध कर देता है।

पहले स्वयं हमें अपने कर्तव्यों का निर्वाह करना होगा तभी हम दूसरों को सुधारने व कर्तव्य-निर्वाह की प्रेरणा देने के हकदार हो सकते हैं। जहां-जहां कर्तव्यों का निष्ठापूर्वक पालन होता है, वे परिवार, समाज, धार्मिक संगठन तथा राष्ट्र, शान्त, सुखी, तनावरहित होकर समृद्ध एवं शक्तिशाली बनते हैं, विकास करते हैं, अपने उद्देश्यों को सरलता से प्राप्त कर सकते हैं। इसके विपरीत जितनी-जितनी कर्तव्यों की उपेक्षा होगी, उतनी अशान्ति, असन्तोष, विघटन व तनाव बढ़ेगा एवं प्रगति अवरुद्ध हो जायेगी।

प्रायः अधिकांश संस्थाओं में व्यापकता के नाम पर सदस्यों का चयन करते समय आचार-संहिता स्पष्ट न होने से विवादास्पद, अविवेकपूर्ण आचरण करने वाले व्यक्ति भी संस्था से जुड़ जायें तो आश्चर्य नहीं। ऐसी संस्थाओं के उद्देश्य चाहे जितने आदर्शवादी एवं उत्कृष्ट हों, कार्यक्रमों का विज्ञापन, प्रचार-प्रसार धुंआधार क्यों न हो, कठोर अनुशासन के अभाव में किसी सदस्य द्वारा सार्वजनिक रूप से उद्देश्य के विपरीत आचरण होता है तो संस्था की छवि धूमिल होते देर नहीं लगती। सदस्यों का सद्आचरण ही संस्था की छवि का द्योतक होता है। चिंतन के अभाव में ऐसी संस्थाओं में यदि कोई कार्यक्रम उद्देश्यों के विपरीत हो तो भी आश्चर्य नहीं। अपने उद्देश्यों के विपरीत सदस्यों की आचार-संहिता की उपेक्षा करने वाली संस्थाओं को भी कर्तव्यों के प्रति सजग रहना होगा।

चोरडिया भवन,
जालोरी गेट, जोधपुर - 342003

बोध-कथा

जीवन देने का सुख

एक राजा शिकार का बड़ा शौकीन था। राजकार्य से जब भी अवकाश मिलता, वह मंत्री, सेनापति और सिपाहियों को लेकर शिकार पर निकल जाता। उसने अपने महल की दीवारों को मारे गए जानवरों की खालों से सजा रखा था। जब भी उसके राज्य में कोई अतिथि आता, वह गर्व के साथ इन खालों का दर्शन उसे कराता और अपनी शिकार संबंधी उपलब्धियाँ बताता। एक बार राजा शिकार करने गया तो खूब भटकने के बाद भी उसको शिकार नहीं मिला। वह और उसका पूरा काफिला थक गया। शाम को जब राजा खाली हाथ लौट रहा था तो उसे एक हिरणी और उसका बच्चा घास चरते हुए दिखाई दिए। राजा को यकायक जाने क्या सूझा कि उसने तीर चलाने के स्थान पर चुपचाप हिरणी के बच्चे को पकड़ लिया और महल की ओर लौटने लगा। कुछ दूर जाकर सहसा उसने पीछे मुड़कर देखा। हिरणी भी उसके पीछे-पीछे आंखों में आंसू लिए चली आ रही थी। यह देखकर राजा का दिल पिघल गया। वह रुक गया। हिरणी उसके पास आकर खड़ी हो गयी। उसकी आंखों में आंसू भरी कातरता थी। राजा ने हिरणी के बच्चे को छोड़ दिया। हिरणी अपने बच्चे को पाकर खुशी से उसे चाटने लगी और राजा को कृतज्ञताभरी दृष्टि से उसके ओझल होने तक देखती रही। राजा को महसूस हुआ कि उसने हाथ आया शिकार भले ही खो दिया हो, लेकिन बदले में एक ऐसी गहरी आत्मसंतुष्टि पा ली है, जो हिरणी के बच्चे का वध करने पर उसको कभी नहीं मिलती। सच ही कहा है कि जीवन देने में जो सुख है, वह लेने में कदापि नहीं मिल सकता।

जीवन को महानता की कसौटी पर कसें

सोना आग की आंच में तप्त होकर शुद्ध बनता है, हीरा तराशने पर चमकता है, पत्थर हथौड़े की मार सहन करता है तभी प्रतिमा का रूप लेता है, बीज का समर्पण ही उसे वृक्ष का विस्तार देता है, नींव का बलिदान भवन का अस्तित्व है, निरोगता के आकांक्षी को कटुक दवा का आसेवन करना जरूरी है, सागर की गहराई का तलस्पर्शी अभ्यास करने वाला रत्नों को उपलब्ध करता है। महानता की ऊंचाइयां बलिदानों की बुनियाद पर अवस्थित है।

● ललित गर्ग ●

महान् व्यक्ति कौन होता है? महानता की कसौटी क्या है? महानता लेबल नहीं है, न कोई आवरण है। व्यक्ति की कार्यशैली, व्यवहार, कर्म, वाणी, रहन-सहन और प्रकृति-स्वभाव ही उसके मापदंड हैं। महानता भाग्य की फसल और पुरुषार्थ की निष्पत्ति है। हर किसी को वह नसीब नहीं होती, यह सतत जागरूकता, जीवन के प्रति सकारात्मकता एवं अच्छाई की ग्रहणशीलता से संभव है। कुछ अलग पहचान बनाने या महानता को हासिल करने के लिए जरूरी है कि हम जिस चेहरे पर जिस विशेषता की गरिमा को देखें, उसे आदर से जीना सीखें; क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति चाहता है अच्छा बनना, महान बनना। हमें उन भूलों को लगाम देनी होगी, जिनकी स्वच्छंदता आत्मविकास में बाधक बनती है।

उनका फौलादी व्यक्तित्व होता है जो वे बिना सोचे-समझे जल्दबाजी में जीवन का कोई निर्णय नहीं लेते। ऐसे व्यक्ति अन्याय और शोषण को सहते नहीं, उनका दमन भी नहीं करते, अपितु उनका मार्गान्तरीकरण करते हैं। मानवीय संवेदना के कारण वे सबके सुख-दुःख को अपना सुख-दुःख मानते हैं। उनकी सम्पूर्ण जिन्दगी औरों के लिये समर्पित हो जाती है। ऐसे व्यक्ति श्रेष्ठता का प्रमाण नहीं देते, बल्कि वे स्वयं प्रमाण होते हैं। यही उनकी सोच, कर्मशीलता उनकी महानता को प्रदर्शित करती है।

भगवान महावीर की भाषा में व्यक्ति जन्म से नहीं, कर्म से महान् बनता है। अग्नि पुराण में महापुरुषों के विशिष्ट गुणों का उल्लेख मिलता है जो कर्तव्यनिष्ठ है, ईर्ष्या, डाह, निंदा-आलोचना से दूर रहता है, संपूर्ण मानव-जाति के प्रति सद्व्यवहार करता है। ''णो हीणे नो अइरत्ते'' न किसी को हीन, न किसी को अतिरिक्त समझने वाले व्यक्ति कुछ अलग हटकर होते हैं। क्योंकि; उनमें मानवता के प्रति सम्मान होता है, अंतःकरण में पवित्रता का पावन नाम होता है। प्रेम और परोपकार जिसकी भुजाएं होती है, निर्मल चरित्र जिनका जीवन मंत्र है, धैर्य, शील, सौजन्य, सदाचार से महकता है उनका व्यक्तित्व और जो स्वयं समादरणीय बन जाते हैं।

विपत्ति में धैर्य, उत्कर्ष में विनम्रता, सभा में वाक्-चातुर्य, युद्ध में वीरता, यश में समता, वाणी में सत्यता महामानव के स्वाभाविक गुण हैं। नीतिशतक में भर्तृहरि ने महानता की परिभाषा इस रूप में प्रस्तुत की है निंदा-प्रशंसा, संपत्ति-विपत्ति, जीवन-मरण की स्थिति में भी महापुरुष कभी अपने संतुलन को नहीं खोते तथा ''वज्रादपि कठोराणि कुसुमादपि कोमलानि''- उनका व्यक्तित्व मृदुता और कठोरता का संगम होता है। जहां अपेक्षा होती है वहां मृदुता का प्रयोग करते हैं और अपेक्षा हो तो कठोरता का। सफल नेतृत्व की यही कसौटी है।

कोई भी व्यक्ति सत्ता, सम्पत्ति और शक्ति के द्वारा महानता को अर्जित करना चाहता है, यह कल्पना ही आधारहीन है। राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर, गांधी, आचार्य तुलसी विश्व क्षितिज पर सूर्य की तरह चमक उठे। यह सत्ता शक्ति की परिणति नहीं है, बल्कि उनकी मर्यादा, कर्मयोग, करुणा और अहिंसा ने उन्हें आकाशीय ऊंचाइयां दी थीं।

अपनी क्षमता से अधिक प्रदर्शन समय आने पर खतरा पैदा कर देता है। महानता आरोपित नहीं होती, नैसर्गिक क्षमता है। फ्रांस के एक शीर्षस्थ राजनीतिज्ञ से किसी ने पूछा 'आप इतना अधिक काम करने के साथ ही सामाजिक हित के अन्य कार्यों में भाग लेने के लिए कैसे समय निकाल लेते हैं? उनका उत्तर था 'मैं आज का काम आज ही कर लेता हूं।' जो व्यक्ति एक-एक पल को कीमती समझकर उसका सही उपयोग करता है, समय को बिल्कुल नष्ट नहीं करता, वह अपने सौभाग्य का निर्माण कर सकता है।

भगवान महावीर ने गौतम से कहा गौतम! क्षण भर भी प्रमाद मत करो अर्थात् एक 'समय' भी व्यर्थ मत करो। काल की सबसे छोटी इकाई 'समय' होती है। एक निमेष में असंख्य समय बीत जाता है। इतने सूक्ष्म समय का जो सम्मान करना जानता है, इस अमूल्य निधि को संजोना जानता है और समय की कद्र करना जानता है, वह अवश्य ही ऊंचाइयों को छू सकता है, उच्चता के शिखर तक पहुंच सकता है और महानता का वरण कर सकता है।

सोना आग की आंच में तप्त होकर

शुद्ध बनता है, हीरा तराशने पर चमकता है, पत्थर हथौड़े की मार सहन करता है तभी प्रतिमा का रूप लेता है, बीज का समर्पण ही उसे वृक्ष का विस्तार देता है, नींव का बलिदान भवन का अस्तित्व है, निरोगता के आकांक्षी को कटुक दवा का आसेवन करना जरूरी है, सागर की गहराई का तलस्पर्शी अभ्यास करने वाला रत्नों को उपलब्ध करता है। महानता की ऊंचाइयां बलिदानों की बुनियाद पर अवस्थित है।

एक ही खान में से निकले हुए दो पत्थरों में से एक पत्थर जो कम सहन करता है वह सीढ़ी के ऊपर जड़ दिया जाता है, लोग उसके ऊपर बूट-चप्पल घिसते हैं। दूसरा पत्थर हथौड़ी की मार सहन करता है, वह प्रतिमा का आकार-रूप ग्रहण करता है और जन-जन के द्वारा पूजा जाता है। जैसे सुगंध के कारण चंदन, सौम्यता के कारण चन्द्रमा और मधुरता के कारण अमृत जगतप्रिय हैं ऐसी ही विशिष्टताओं से व्यक्ति महान् बनता है।

आचार्य महाप्रज्ञ के शब्दों में ''बड़ा वह नहीं है जो धनवान है, बड़ा वह है जिसमें त्याग की चेतना है। बड़ा वह नहीं जो तथाकथित उच्च कुल में जन्मा है, बड़ा वह है जो सच्चरित्री है। बड़ा वह नहीं है जो शास्त्रों का पंडित है, बड़ा वह है जो संयमी है। महानता और लघुता सापेक्ष मूल्य हैं।''

महान् बनने की अदम्य आकांक्षा रखने वाले व्यक्ति को त्याग और बलिदान की वेदी पर अपने प्राणों की आहुति देनी होती है, दीपक बनकर जलना होता है, फूल बनकर खिलना होता है और जीवन शैली को बदलना होता है।''

ई-253, सरस्वती कुंज अपार्टमेंट
25, आई.पी. एक्सटेंशन,
पटपड़गंज, दिल्ली-92

आप कुछ देखते हैं, तो कहते हैं,
'क्यों?' लेकिन मैं असंभव से सपने
देखता हूं और कहता हूं, 'क्यों नहीं?'
- जॉर्ज बर्नार्ड शॉ

आपका पत्र मिला...

- अणुव्रत का 'परिवार सौष्ठव' अंक मिला। इस अंक ने विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के द्वार खोल दिए हैं। आपके इस प्रयास से पूरा परिवार अणुव्रत से जुड़ता जा रहा है।

लक्ष्मी रानी लाल, *(आदित्यपुर-जमशेदपुर)*

- अणुव्रत पाक्षिक 1-15 नवंबर, 2011 का अंक पढ़ा। संपादकीय लेख ''समरस परिवार - सुखी राष्ट्र'' पढ़ा। अत्यन्त ही अच्छा लिखा है। प्रस्तुत अंक में पारिवारिक परिवेश के विविध पहलुओं पर गवेषणा की गई। दसवीं कक्षा की बालिका कविता ने परिवारों के विघटन के कारण एवं परिणामों पर विशेष प्रकाश डाला। धन्यवाद।

नानालाल बापना, *(भीलवाड़ा-राजस्थान)*

- अणुव्रत पाक्षिक ''परिवार-सौष्ठव'' अंक मिला। संपादकीय पढ़कर खुशी हुई। आचार्य महाप्रज्ञ, आचार्य महाश्रमण के लेख बहुत प्रेरणा-प्रद लगे। गुरुदेव का लेख नारी शक्ति को आगे बढ़ाने की प्रेरणा देने वाला है। प्रो. दयानन्द भार्गव के लेख में अणुव्रत को व्यापक बनाने के अच्छे सुझाव दिये गए हैं। समणी डॉ. कुसुमप्रज्ञा ने 'पर्दा-प्रथा उन्मूलन में गुरुदेव का योगदान' बहुत खोजपूर्ण लेख लिखा, वे साधुवाद की पात्र हैं।

विजय सिंह कोठारी, *(गांधीनगर-दिल्ली)*

- 'अणुव्रत' का 16-30 नवम्बर अंक मिला। मुख पृष्ठ पर्यावरण चेतना को समर्पित अंक के अनुरूप है, विश्व शान्ति एवं हरी भरी दुनिया का संदेश वाहक।
  सम्पादकीय में प्रथम पर्यावरणविद् तीर्थंकर महावीर तथा आचार्य महाप्रज्ञ के पर्यावरण दर्शन को समेटते हुये यह स्पष्ट कर दिया गया है कि प्रदूषण ऐसी हिंसा है जो मृत्यु और नरक का द्वार है। सृष्टि संतुलन एवं पारिस्थितिकी संतुलन के शाश्वत सम्बन्ध को समझना ही होगा अन्यथा हम विनाश की ओर बढ़ते ही रहेंगे। संपादकीय का सम्प्रेष्य संक्षित पर संपूर्ण है।
  'जीवन है मधुर गीत' एक अमृत कलश है जो पठनीय, पालनीय एवं उपयोगी है। 'बाल वाटिका' की प्रस्तुति, पारिवारिक, सामाजिक एवं सुखी जीवन तथा सार्थक दिशाबोध की रचनायें स्वागत योग्य हैं।

रूपनारायण
वैशाली नगर, जयपुर-302021

- यह जानकर बेहद खुशी हुई कि आप अब अणुव्रत का सम्पादन कर रहे हैं। आपकी साहित्यिक अभिरुचि और पत्रकारिता से मैं भली-भांति परिचित हूं। 'अुणव्रत दिवस अंक' (16-31 अक्टूबर, 2011) मेरे सामने है। 'अणुव्रत' में सकारात्मक बदलाव आ रहा है, जो सराहनीय है। आशा है, आने वाले समय में 'अणुव्रत' आपके कुशल सम्पादन में नई ऊँचाइयां छूने में सफल होगा। बधाई!

फारुक आफरीदी
उप निदेशक (जन सम्पर्क)
मुख्यमंत्री-राजस्थान

- प्रसन्नता की बात है कि 'अणुव्रत' का रूप हर बार निखर कर सामने आ रहा है। बधाई! *(दूरभाष पर)*

डॉ. हीरालाल छाजेड़ (जैन)
कटक-उड़ीसा

आपकी हमसफर सम्मान की हकदार

● अनिल कुमार ●

एक जमाना था कि किसी घर की दहलीज ही नारी की सीमा-रेखा थी। तन ढकने के लिए कपड़ा, रहने के लिए मकान, पेट भरने के लिए दो वक्त की रोटी– यही उसकी जरूरतें थीं। धीरे-धीरे वक्त बदला और समय ने करवट ली। नारी ने घर की दहलीज पार कर बाहर की दुनिया में कदम रखा। वह अपने करियर के प्रति और सजग हो गई।

कामकाजी महिलाओं की संख्या लगातार बढ़ रही है। परिवार के सामाजिक और आर्थिक उत्थान में पति के साथ उनकी भूमिका भी बहुत महत्वपूर्ण है। पर कामकाजी स्त्रियों को पुरुषों की अपेक्षा अधिक शारीरिक और मानसिक श्रम करना पड़ता है। उन्हें बच्चों की शिक्षा, उनकी देखभाल, सास-ससुर की सेवा और परिवार के अन्य सदस्यों की अपेक्षाओं को भी पूरा करना पड़ता है।

कामकाजी महिलाओं को घर व बाहर की दोहरी भूमिकाएं निभानी तो पड़ती हैं परन्तु इसका सीधा असर उनके दाम्पत्य जीवन पर पड़ता है, कामकाजी स्त्रियों के लिए पति तथा परिवार के अन्य सदस्यों का सहयोग आवश्यक हो जाता है। हालांकि कुछ परिवारों में कामकाजी स्त्रियों को उनके पति तथा परिवार की तरफ से पर्याप्त सम्मान तथा सहयोग मिलता है, परन्तु कुछ परिवारों में बच्चों की जिम्मेदारी, पारिवारिक तथा सामाजिक दायित्वों के निर्वहन, आर्थिक अपेक्षा तथा अनेक छोटी-छोटी बातों को लेकर पति-पत्नी के बीच तनाव पैदा हो जाता है। कुछ महिलाएं ऐसी भी हैं जो घर वालों या पति की इच्छा के विरुद्ध नौकरी करती हैं। ऐसी स्थिति में किसी से सहयोग की अपेक्षा व्यर्थ हो जाती है। अगर आप अपने पति और परिवार को विश्वास में लेकर काम करती हैं तो आपको काम करने में कोई दिक्कत नहीं होगी, बल्कि आपको अपने काम करने में परिवार का पूरा सहयोग मिलेगा।

मनोवैज्ञानिकों का मत है कि कामकाजी महिलाओं को पर्याप्त भावनात्मक संबल, स्नेह और संरक्षण की आवश्यकता होती है। परिवार में उनका सम्मान उनके आत्मबल और कार्यक्षमता को बढ़ाता है। खासतौर से कामकाजी महिलाओं के पतियों को कुछ बातों पर ध्यान देना चाहिए ताकि उनके दाम्पत्य जीवन में तनाव के क्षण न आएं।

पत्नी को अपना प्रतियोगी न समझें तथा सामाजिक जीवन में उनकी प्रतिष्ठा को सहर्ष स्वीकार करें। अगर आपकी पत्नी आपसे ज्यादा कमाती है या आपसे ऊँचे पद पर है तो यह उनकी योग्यता के कारण संभव हुआ है। यह आपके लिए परेशानी की बजाय गर्व का विषय है कि इतनी योग्य स्त्री आपकी पत्नी है।

यदि पति-पत्नी घर और बच्चों की जिम्मेदारियों को आधा-आधा बांट लेते हैं तो काम करने में कोई दिक्कत नहीं होगी। जैसे बच्चों को स्कूल भेजना, उनका होमवर्क कराना पति के जिम्मे कर दें, लेकिन चिढ़कर या लड़कर मत पूछिए कि आपने बच्चों का होमवर्क क्यों नहीं कराया है, बल्कि आराम से पूछिए। अगर उनके पास उस दिन समय न हो तो आप करा दीजिए। इस तरह आप उनकी मजबूरी समझेंगी तो निश्चित ही वो भी आपकी मजबूरी समझेंगे।

आपके लिए आपका ऑफिस जाना जितना महत्वपूर्ण है, आपकी पत्नी के लिए भी उनका ऑफिस जाना उतना ही महत्वपूर्ण है। अतः जरूरी काम पड़ने पर उन्हें बार-बार छुट्टी लेने के लिए विवश न करें। आवश्यकता पड़ने पर कभी-कभी पत्नी के स्थान पर आप भी छुट्टी ले सकते हैं।

थोड़ा समय बच्चों के लिए भी निकाल कर रखें ताकि वे अपने आपको उपेक्षित महसूस न करें। आप अपने बच्चों को भी अपना काम स्वयं करने की आदत डालें। जैसे बच्चों को बोलिए कि स्कूल से आने के बाद बैग, जूते और ड्रेस उतार कर इधर-उधर न फेंके। सबको अपने-अपने स्थान पर रखें। इससे उनमें काम करने और चीजों को यथास्थान रखने की आदत हो जाएगी।

चूंकि कामकाजी महिलाएं आत्मनिर्भर होती हैं इसलिए उनकी मानसिकता और वैचारिक दृष्टिकोण भी अन्य घरेलू महिलाओं से भिन्न होता है। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक मामलों में उनके विचार आपसे भिन्न हो सकते हैं, अतः अपने विचार उनके ऊपर लादने की कोशिश न करें। उनके स्वतंत्र विचारों का सम्मान करें। ऑफिस में काम करते हुए पुरुष सहकर्मियों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध बन जाना स्वाभाविक है, अतः सहकर्मी पुरुष मित्रों के साथ पत्नी के मैत्री सम्बन्धों को अन्यथा न लें।

परिवार में जब महिलाएं भी नौकरी कर रही हों तो आर्थिक स्वतंत्रता बढ़ने के साथ-साथ समाज में प्रतिष्ठा भी बढ़ जाती है, अतः पत्नी के योगदान को कभी अनदेखा न करें। पति-पत्नी भी आपस में मिलकर एक-दूसरे की बातों को सुनें। अगर कोई समस्या है तो उसका मिलकर समाधान करें। जरूरत है बस संतुलन बैठाने की।

क्वार्टर नं. एफ - 80
पोस्ट - सिन्दरी
जिला : धनबाद - 828122

बाल-मनोविज्ञान

अपराध के भंवर में मदहोश बाल-मन

● सुप्रिया ●

अनेक घरों में ऐसे बच्चे मौजूद हैं जो मां-बाप और अभिभावकों के कष्टों का कारण बने हुए हैं। कोई चोरी करते हैं तो कोई नशेबाज बन गए हैं तो, कोई स्कूल नहीं जाते, बुरी संगत में पड़कर गन्दे काम करते हैं।

सिरिलवर्ट ने अपनी पुस्तक में एक ऐसे सात वर्ष के बालक का उल्लेख किया है, जो खूनी था। इस बालक ने उस छोटी और भोली अवस्था में कैसे खून किया, क्या वह जन्म से अपराधी बन कर आया था? भाव, संवेग, चरित्र, सब परिस्थितियों और वातावरण द्वारा निर्मित होते हैं। जिस सात वर्ष के बालक का अभी जिक्र किया गया, वह भी परिस्थितियों की उपज था। नौकरी करने वाली अपनी गरीब मां की अवैध संतान था वह। विपरीत परिस्थिति और घर का खराब वातावरण ही उसे अपराधी बनाने के लिए उत्तरदायी था।

बालकों में कई प्रकार के अपराध पाए जाते हैं। एक बालक आग लगाने के अपराध में कई बार पकड़ा गया। कभी किसी के घर में कपड़ों में आग लगा देता, कभी कागजों में आग लगा देता। परिवार अथवा मां-बाप की दृष्टि में वह बदमाश और गुंडा बन गया था। पता लगाने पर मालूम हुआ कि सबसे पहले उसने केवल खेल-खेल में छोटे भाई के कुर्ते में आग लगा दी थी। नौकर के देख लेने के कारण भाई तो बच गया, पर पिता ने उसे इतना मारा कि उसके शरीर पर सदा के लिए निशान बन गए। और इसके बाद जब देखो, वह आग लगा देता, लोगों की जेबों से पैसे और रूमाल चुरा लेता। ऐसे बच्चों की इज्जत परिवार की दृष्टि में गिर जाती है। पिता मार-पीट कर गुस्सा शान्त कर लेते हैं और मां परेशान और दुःखी रहती है। क्या आपने कभी सोचा है कि बच्चे ऐसा अपराध क्यों करते हैं?

हर कार्य का कोई-न-कोई कारण होता है। एक अच्छे परिवार की सुन्दर और सुशील लड़की के लापता होने की कथा सुनकर सबको आश्चर्य होगा, पर उसको इस दशा तक पहुंचाने का कारण, उसकी बचपन में भाग जाने वाली मां थी और उसके घर का वह वातावरण था, जिसने उसकी तीव्र मानसिक उलझन को अन्तिम शिखर तक पहुंचा दिया था। एक मनोविज्ञान की पुस्तक में एक ऐसे लड़के का उल्लेख पढ़ा जो बहुत ही शांत और कोमल प्रवृत्ति का होते हुए भी कभी-कभी विनाशकारी और क्रूर प्रवृत्ति का हो जाता था। उसका मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करने पर पता चला कि उसका बाप बड़ी क्रूर प्रवृत्ति का था। वह सदैव उसकी मां के साथ क्रूर व्यवहार करता था। यह लड़का आवेश में आकर अपने बाप के ही पाठ को दोहराता था।

बच्चे को सुधारने के लिए पहले उसे समझिए, उसकी मानसिक क्रियाओं, रचना को समझिए। उसके जीवन के इतिहास की गहराई में जाकर जीवन के प्रति उसकी प्रतिक्रियाओं को समझिए। मानसिक रोगों का इलाज कारणों के पता चलने पर ही हो सकता है। उदाहरण के लिए बच्चों के आग लगाने के अपराध के विषय में मनोवैज्ञानिकों ने कई कारण बताए हैं। वैसे तो आग से खेलने की बच्चों की स्वाभाविक प्रवृत्ति है, पर इससे जो विनाशकारी प्रवृत्ति उत्पन्न हो जाती है, उसके कई कारण हो सकते हैं। शायद बच्चे में शक्ति पाने की इच्छा है, जिसे वह सन्तुष्ट नहीं कर पाता। अक्सर किशोर अवस्था और बाल अवस्था के सन्धिकाल में भी बच्चे अपने अन्दर की नई शक्ति को न समझ कर अनेक बेतुके काम करना सीख जाते हैं। अक्सर अपने ही विषय में जिज्ञासा इन्हें गलत रास्ते पर ले जाकर खड़ा कर देती है।

आपने किशोर अवस्था वाले बालकों को रुपया-पैसा चुराकर मुम्बई, कोलकाता भागते सुना होगा। जरा गौर से सोचिए कि लड़के यह अपराध क्यों करते हैं?

भागने की बहुत-सी वजहें हो सकती हैं। उन्हें घर में तकलीफ होगी, जो आराम चाहते होंगे वह मिलता नहीं होगा या उनके अभिभावक अधिक मारते-पीटते होंगे, जिससे घर के वातावरण से उनकी तबीयत ऊबी रहती होगी। पर, इन सब कारणों के अलावा ऐसे अपराधों का वास्तविक कारण दूसरा ही होता है। इस तरह भागने वाले बालक अधिकतर किशोर अवस्था के होते हैं। यह अवस्था बालक के जीवन में खास महत्त्व रखती है। शारीरिक परिवर्तन के साथ ही सारा शरीर शक्ति से व्याप्त हो उठता है। मन असंख्य संवेगों और भावनाओं से परिपूर्ण रहता है। ऐसी अवस्था में उन्हें बाहरी संसार रंगीन और चमत्कार-पूर्ण मालूम होता है। ऐसे समय कोई कठिनाई भारी नहीं मालूम पड़ती है। बच्चों के भागने पर परिवार और मां-बाप को सिर्फ यह चिन्ता रहती है कि लड़के मिल जाएं और वे बच्चे के वापस आने पर मार-पीट, खरी-खोटी सुनाकर अपने कर्तव्य की पूर्ति समझते हैं। पर, मुश्किल तब आती है जब बच्चा बार-बार भागने की ताक में रहता है और

सच्चा अपराधी बन बैठता है। माता-पिता का कर्तव्य है कि इस अवस्था में बच्चों के प्रति सतर्कता से व्यवहार करें। प्रकृति के तकाजे को समझें। बच्चों के स्वभाव को कुचलना बिल्कुल बेकार और हानिकारक होता है। मनोवैज्ञानिकों ने यह मान लिया है कि आदमी की दो मूल प्रवृत्तियां हैं– क्षुधा संबंधी और काम संबंधी। यह एक ऐसा सत्य है जो आंख मूंदकर छिपाया नहीं जा सकता। अच्छा यही होगा कि आप स्वयं वैज्ञानिक ढंग से सच्चाई के साथ सब बातें बताएं। अक्सर बचपन में गन्दे खेल खेलने पर मां-बाप इसे भारी अपराध समझकर कड़ी सजा दे कर उन्हें गलत रास्ते पर जाने को अग्रसर करते हैं।

बच्चों को नशा करने की आदत दो परिस्थितियों में पड़ती है : जब घर में कोई नशा करता हो, या साथी नशा करते हों।

चोरी का अपराध करने के पीछे जो लाचारी और प्रलोभन हैं उनके विषय में भी सोचना आवश्यक है। गरीबी में भूखा व्यक्ति चोरी करने के प्रलोभन को रोक नहीं पाता। यद्यपि यह सत्य है कि सभी बच्चे प्रलोभनों में पड़कर चोर नहीं बन जाते, पर हर परिस्थिति में हर व्यक्ति की प्रतिक्रिया भिन्न होती है।

बचपन में बच्चे की जो स्वेच्छाचारिता साधारण मालूम होती है, वही बड़े होने पर अपराधी होने का कारण बन जाती है। फिर माता-पिता के लिए यह अपराधी बच्चे एक समस्या बन जाते हैं। बच्चे को अपराधी बनाने के उत्तरदायी उनके मां, बाप, सगे-संबंधी, पास-पड़ोसी, संगी-साथी, घर तथा स्कूल का वातावरण और जीवन की परिस्थितियां हैं। हम स्वयं भी अनजाने में बच्चे के व्यक्तित्व में उलझनें पैदा करके उन्हें अपराधी बनाते हैं। सच बात तो यह है कि हमने इस महान उत्तरदायित्व को समझा ही नहीं है। अधिकतर मां-बाप बच्चों को अपने ही सांचे में ढालना चाहते हैं। उनका यह दृष्टिकोण सर्वथा गलत है। हो सकता है, हमारा प्रोग्राम उनके व्यक्तित्व के अनुकूल न हो या हम जो कुछ उन्हें बनाना चाहते हैं, उसके वे योग्य न हों।

हम बच्चों के संबंध में जितनी चिंता करते हैं, उनके वैज्ञानिक और मनोवैज्ञानिक पालन-पोषण पर यदि उसका चौथाई हिस्सा भी परिश्रम करें तो बच्चे अपेक्षाकृत अधिक अच्छे बन सकते हैं। बच्चों का व्यक्तित्व बिजली के बटन के इशारे पर काम नहीं करता। ऐसा नहीं होता कि जो बटन दबाया जाए वही बल्ब जल जाए। एक ही परिस्थिति बच्चों पर अलग-अलग प्रभाव डालती है। बच्चों की प्रत्येक कठिनाई, उलझन और अपराध का उनके व्यक्तित्व और परिस्थितियों के साथ गहरा संबंध है। उन उलझनों का हल और अपराधों का निवारण उनके व्यक्तित्व विशेष के अनुसार होना चाहिए। उसके लिए माता और परिवार को अपराधी बालक के प्रति अपना दृष्टिकोण बदलना होगा। चोरी करने वाले, नशा करने वाले तथा आग लगाने वाले बालक का एक ही इलाज नहीं होगा।

मन की गहरी तहों तक पहुंचकर अपराधी बालकों के मानसिक रोगों का निदान विशेषज्ञों का काम है। इन मानसिक रोगों का इलाज मनोविज्ञान के वास्तविक विशेषज्ञों से कराना चाहिए। पर, शुरू की छोटी-मोटी अपराध की प्रवृत्ति मां-बाप और परिवार के सदस्य भी अनुभव और अध्ययन के सहारे कुछ हद तक सुधार सकते हैं। दंड दे देने या केवल रिफारमेटरी में भेज देने से इन अपराधी बालकों का हम कल्याण नहीं कर सकते। हमारा कर्तव्य उन्हें समाज से अलग करना नहीं, सामाजिक प्राणी बनाना है। इस ओर काफी ध्यान दिया जा रहा है और अब हमारे देश के कई नगरों में ऐसी समस्याओं को हल करने के लिए मनोवैज्ञानिक क्लीनिक बन गए हैं।

- 'विभावरी', जी-9, सूर्यपुरम्, नन्दनपुरा, झांसी-284003 (उ.प्र.)

कविता

होंगे सपने साकार

• शंकर सुल्तानपुरी •

हरा-भरा हो यह संसार,
एक दूसरे से हो प्यार।

धरा हमारी माता जैसी,
पर्वत हैं इसके शृंगार।

गगन हमारा पिता सरीखा,
पवन बांटता शुद्ध बयार।

वृक्ष, फूल, फल-अन्न, वायु, जल,
ये जीवन के प्राण-आधार।

वन, उपवन, तरु, वेलि, वाटिका,
लाते हैं अनमोल निखार।

जीवन की सूखी क्यारी में,
छा जाती है सुखद बहार।

प्रकृति लुटाती रहती निश-दिन
अपना यह अनुपम उपहार।

पशु-पक्षी और प्राणि-मात्र को,
बांटें अपना नेह-दुलार।

'जियें और जीने दें सबको,'
ऐसा हो सब में उद्‌गार।

भारतमाता शस्य-श्यामला,
पहने नदियों का गलहार।

हम धरती के धरती अपनी,
मन में हो ये नेक विचार।

रंग-बिरंगे फूलों जैसा,
सारा भारत इक परिवार।

सच मानें जब ऐसा होगा,
तब होंगे सपने साकार।

साहित्य वाटिका,
13/362, इंदिरा नगर,
लखनऊ - 226016 (उ.प्र.)

बड़े दिन का उपहार

● मंजुश्री

निधि ने अपना होमवर्क पूरा कर लिया था। बेचैनी से उसने घड़ी की ओर देखा, साढ़े पांच बज रहे थे। काम वाली बाईजी अब तक नहीं आई थीं। न जाने क्या हुआ? क्यों नहीं आईं? लॉन में आकर दादी मां से पूछा तो वे बोलीं. ''शायद डॉक्टर को दिखाने गई होगी, उसे हल्का बुखार था।'' ''ओह!'' कहकर निधि अंदर चली आई।

दरअसल कामवाली बाई की बेटी नेहा के लिए वह इंतजार कर रही थी। उसके मम्मी-पापा दफ्तर से देर से आते हैं। आने के बाद भी उन्हें कुछ न कुछ काम करने होते हैं। दादी मां के घुटनों में दर्द रहता है, अतः बाईजी के साथ आती उसकी हमउम्र बेटी नेहा के साथ ही तो वह लॉन में खेल पाती है। नेहा है भी बड़ी प्यारी! उसके साथ खेलना तो उसे हमेशा अच्छा लगता है। अक्सर वह अपनी मां के कामों में भी हाथ बंटाती है, लेकिन बीच में कुछ देर मेरे साथ खेलने के लिए आ जाती है। खेल में कई बार वही जीतती है। पढ़ने-लिखने में उसकी काफी दिलचस्पी है। तभी तो वह मेरी किताबों-कॉपियों को कितने चाव से, ध्यान देकर देखती रहती है। उस दिन मैंने नेहा से स्कूल जाने के बारे में पूछा था तो वह कितनी उदास होकर बोली थी- ''पता नहीं, कब जाऊंगी? जा पाऊंगी भी या नहीं!'' मैं तुरंत बाईजी के पास गई थी। नेहा को स्कूल ले जाने के लिए जब मैंने उनसे पूछा तो वे दुःखी होकर बोली थीं– ''बिटिया, हर अच्छी चीज अगर सबको मिल जाए तो फिर कहना ही क्या! पढ़ना-लिखना शायद हमारे भाग्य में नहीं है।'' निधि यह सोच ही रही थी कि तभी बाईजी आ गईं। आते ही दादी मां से बोलीं- ''माताजी, डॉक्टर से दवा ले आई हूं। बड़ी भीड़ थी, देर हो गई।'' दादी बोलीं–''कोई बात नहीं, बाई! सुन, मैं चाय बना रही हूं, पहले पी ले। दवा तो ले ली है न? और हां,

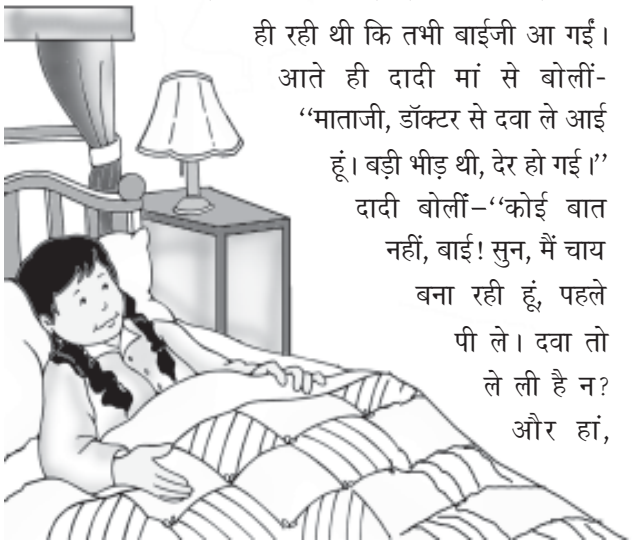

काम कर पाए तो करना, नहीं तो कल हो जाएगा।''

नेहा ने मां का हाथ पकड़कर उसको दादी मां के पास बिठा दिया और खुद बर्तन साफ करते हुए बोली- ''दादी मां, दो-चार बर्तन ही तो हैं, मैं अभी कर देती हूं।'' निधि भी नेहा के पास आ गई और साफ बर्तनों को पोंछकर उनकी जगह पर रखने लगी। दादी मां मुस्कराती हुई दोनों को एकटक देखती रहीं।

रात को खाना खाने के बाद भी निधि नेहा के बारे में ही सोचती रही। काश! वह भी स्कूल जा पाती। क्या पता, पढ़-लिखकर वह एक बड़ी अफसर बन जाए! सोचते-सोचते उसे न जाने कब नींद आ गई।

अचानक उसने देखा कि चांदनी रात की दमकती रोशनी में नीले आकाश के बीच सफेद बादलों के झुण्ड से बग्घी में बैठे लाल ड्रेस पहने सांताक्लॉज उसी की ओर बढ़ रहे हैं। रूई से सफेद बालों पर उन्होंने लम्बे तुरंग की लाल टोपी लगा रखी है। चेहरे पर सफेद-झक दाढ़ी है। निधि के पास आकर वे बग्घी से नीचे उतरते हैं और मुस्कराते हुए स्नेह से उसके सिर पर हाथ फेरते हैं। निधि की खुशी का तो मानो ठिकाना ही नहीं था। वह अचंभित-सी बोली– ''ओह! सांताक्लॉज! क्या सचमुच आप मेरे पास हैं?''

''हां निधि, मैं तुम्हारे पास ही हूं। बोलो, तुम्हें हैप्पी क्रिसमस का क्या उपहार चाहिए?''

''सच! आप मेरे लिए कोई गिफ्ट लाए हैं?''

''बिल्कुल, बोलो, क्या चाहिए, ढेर सारी चॉकलेट्स, खिलौने, ड्रेसेज या फिर कुछ और?''

निधि कुछ सोचने लगी, तभी नेहा का उदास चेहरा उसके सामने आ गया। वह पढ़ना चाहती है, स्कूल जाना चाहती है। मुझे तो सारी चीजें बिना मांगे ही मिल जाती हैं, पर उसको तो जरूरी चीजें भी नहीं मिल पातीं। उसने तुरंत निर्णय लिया और सांताक्लॉज को अपनी इच्छा बता दी- ''बाबा! मैं चाहती हूं, मेरी

सहेली नेहा स्कूल जाकर खूब पढ़े।''

सांताक्लॉज मुस्कराते हुए बोले– ''बेटी निधि! मैं तुमसे बहुत खुश हूं; क्योंकि तुमने अपने बदले नेहा की खुशी, उसकी जरूरतों के बारे में सोचा। तुम्हारी यह इच्छा अवश्य पूरी होगी। बस, थोड़ी-सी कोशिश करनी होगी।''

''सच, सांताक्लॉज! मुझे क्या करना होगा?''

''निधि! सरकारी स्कूलों में तो बच्चों के लिए फीस है नहीं, प्राइवेट स्कूलों में भी प्रतिभावान गरीब बच्चों से फीस नहीं ली जाती। किताबों-कॉपियों, स्कूल ड्रेस आदि की व्यवस्था भी वहां हो जाती है। नेहा भी इस तरह किसी स्कूल में पढ़ सकती है।'' सांताक्लॉज ने उसे कुछ खिलौने, चॉकलेट्स देते हुए कहा–''उसकी इच्छा जरूर पूरी होगी।''

''वाह! फिर तो मैं कल ही मम्मी-पापा से कहूंगी, वे बाईजी को राजी कर लेंगे। कल ही हम लोग स्कूल जाएंगे, नेहा को लेकर। सांताक्लॉज आपको बहुत-बहुत धन्यवाद!'' निधि खुश होकर बोली।

''वेलकम माई चाइल्ड!'' कहते हुए सांताक्लॉज बग्घी में बैठे और बादलों में जाकर छुप गए।

तभी उसे लगा कि मम्मी प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरते हुए जगा रही हैं। ओह! सवेरा हो गया। स्कूल जाना है। मन ही मन उसने दोहराया– नेहा को भी तो स्कूल ले जाना है।

58, विनोबा विहार,
मालवीयनगर, जयपुर - 302017

दो गजलें

एक

मत कभी तुम निराश हो जाना
सद्-कर्म से गुनाह धो जाना।

शांत निद्रा में तुम सो जाना
सुनहरे स्वप्न में न खो जाना।

फल तो खा लेता हर कोई लेकिन
है बड़ी बात बीज बो जाना।

भूलकर क्लेश सारी दुनिया के
शुभ है यही खुदा में खो जाना।

योग-विद्या को मानकर चलना
चिर-सफलता के पथ पे जो जाना।

मौत होती है न जिंदगी का अंत
स्वर्ग कैसा, ये तभी तो जाना।

दुश्मनी का जहर भूल गया मैं
आपदा सर पै आई तो जाना।

शक्ति मुझमें अथाह है 'अक्षय'
आपदा सर पै आई तो जाना।

दो

पूरे वन में अकेला शजर देखिए
उग रहे हैं मकां ये नगर देखिए।

शिशु बड़ों से भी होते बड़े आजकल
टी.वी. का कैसा ये भी असर देखिए।

आज हर वस्तु जग में ग्लोबल बनी
फ्लू का यूँ विश्वव्यापी असर देखिए।

ध्यान मत दीजिए मीठे-से बोल पर
सामने वाले की बस नजर देखिए।

दौड़ने में लगे हैं कई बिन पता
जिंदगी को कभी तो ठहर देखिए।

कब रुका सिलसिला हादसों का यहाँ
जीने को हौसलों का सफर देखिए।

लक्ष्य तो अपने आप मिल जाएगा
दृष्टि से सिर्फ अपनी डगर देखिए।

नाम लेते जनता की मांगों का फिर
ढाते हैं वे उसी पर कहर देखिए।

भोग की ये चकाचौंध तो है क्या गजब
भक्ति-उन्माद भी इस कदर देखिए।

अक्षय गोजा
- चाँदपोल गेट के पास,
जोधपुर 342001

आपका प्रिय पाक्षिक

अणुव्रत

हर बार नयी सज्जा-सामग्री के साथ आपके पास पहुँच रहा है। आपकी राय हमारे लिए सर्वोपरि है।

आने वाले अंकों में हमारे विशेष विषय होंगेः

जनवरी I, 2012	स्वामी विवेकानन्द, नववर्ष
जनवरी II, 2012	लोकतन्त्र, चुनाव शुद्धि
फरवरी I, 2012	अनुशासन एवं मर्यादा
फरवरी II, 2012	अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव
मार्च I, 2012	होली-वसंत, महिला सशक्तीकरण
अप्रेल I, 2012	नव संवत्सर महावीर जयन्ती, रामनवमी
मई I, 2012	महात्मा बुद्ध

और, इसी प्रकार अन्य पर्व-त्यौहारों पर रुचिकर रचनाएं

निवेदन

लेखकगण कृपया चयनित विषय पर अपनी मौलिक-अप्रकाशित रचनाएं कम से कम एक माह पूर्व भेजें।

रचनाएं पृष्ठ के एक तरफ साफ-सुथरी लिखी हुई अथवा टंकित हों।

विशेष :

अणुव्रत में उन्हीं समाचारों का प्रकाशन होता है जो जीवन-मूल्यों से जुड़े हों, संक्षिप्त और विशेष संदेश देने वाले हों। कृपया बासी और अन्य समाचार हमें नहीं भेजें।

— सम्पादक

राष्ट्र चिन्तन

केवल राजनीति नहीं विकास की राजनीति करें

पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम ने विधायकों को केवल राजनीति करने की बजाय विकास की राजनीति करने का मूल मंत्र दिया है। उसे यदि अपना लिया जाए तो देश में बहुत-सी समस्याओं का हल निकल सकता है। कलाम ने बिहार विधानसभा के सभागार में विधायकों-विधान परिषद् सदस्यों को सम्बोधित करते हुए जो सलाह दी है वह सिर्फ बिहार के विधायकों पर ही नहीं, देश के सभी सांसदों-विधायकों पर लागू होती है। पिछले कुछ सालों से देश की राजनीति सत्ता के इर्द-गिर्द ही घूमती नजर आने लगी है और किसी भी राजनीतिक दल के सांसद-विधायक हों, विकास की बजाय राजनीतिक दांवपेच में ही उलझे रहते हैं। सामान्य तौर पर अब देखने में यही आने लगा है कि जनप्रतिनिधि चुनाव के समय ही विकास की लंबी-चौड़ी बातें करते हैं, लेकिन चुनाव जीतने के बाद सिर्फ राजनीतिक उठापटक में ही उलझकर रह जाते है।

विकास की राजनीति करने के लिए अपनी पार्टी की सरकार होना जरूरी नहीं है। सरकार किसी भी दल की क्यों न हो, जनप्रतिनिधि का मकसद क्षेत्र का विकास ही होना चाहिए।

अजीम प्रेमजी खोलेंगे १३०० आदर्श स्कूल

यह बड़ी खुशखबरी है कि भारत के अग्रणी उद्योगपति अजीम प्रेमजी ने देश के प्रत्येक जिलें में दो स्कूल खोलने का फैसला किया है इन स्कूलों में मुफ्त शिक्षा दी जायेगी। ये स्कूल बच्चों को न केवल मातृभाषा में शिक्षा देंगे, बल्कि ये उन इलाकों में खोले जाएंगे, जहां साक्षारता दर कम है। पहले कर्नाटक में दो स्कूल खुलेंगे। सबकुछ योजना के अनुरूप रहा, तो २०२५ तक पूरे देश में १३०० स्कूल खुल जाएंगे। २००१ से इस योजना पर काम कर रही अजीम प्रेमजी फाऊंडेशन इसके लिए ६००० करोड़ रुपये खर्च करेगी।

उम्मीद करनी चाहिए, अजीम प्रेमजी जो स्कूल खोलेंगे, उनमें वे शिक्षा में व्याप्त इन बीमारियों को कदापि जड़ नहीं जमाने देंगे। उनकी मंशा अच्छी है, वे अपने स्कूलों को ऐसे गुणवत्ता वाली शिक्षा का मंदिर बनाना चाहते हैं, जो दूसरे स्कूलों को भी प्रेरित करें।

बढ़ें संयम पथ पर

INDUSTRY • COMMERCE • WELFARE
Golchha Organisation

लोकमान्य गोल्छा
अध्यक्ष
गोल्छा ऑर्गेनाइजेशन
एवं
समस्त गोल्छा परिवार

गोल्छा हाउस, काठमांडो (नेपाल)
फोन नं. : 4250001/4249939 (D)
फैक्स : 00977-1-4249723

आचार्य महाश्रमण ने केलवा में कहा–

आचार्य तुलसी एवं महाप्रज्ञ का शिक्षा जगत को महान् अवदान : जीवन विज्ञान

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण स्कूली बच्चों एवं जनमेदिनी का अभिवादन स्वीकरते हुए

केलवा, ८ नवम्बर। आचार्य महाप्रज्ञ को गुरुदेव तुलसी द्वारा 'महाप्रज्ञ' अलंकरण प्रदान करने के दिवस को धर्मसंघ में 'जीवनविज्ञान दिवस' के रूप में मनाया जाता है। इसी क्रम में जीवन विज्ञान दिवस पर प्रातः रैली निकाली गई, जिसमें विभिन्न स्कूलों के सैकड़ों विद्यार्थियों ने भाग लिया। जीवनविज्ञान दिवस के संदर्भ में मुनि नीरजकुमार ने गीत का संगान किया। समण सिद्धप्रज्ञ व मुनि किशनलाल ने जीवनविज्ञान की विस्तार से अवगति दी। प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष महेन्द्र कोठारी ने स्वागत भाषण दिया।

आचार्य महाश्रमण ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा--'जीवनविज्ञान आचार्य तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ का शिक्षा जगत को दिया गया एक महान अवदान है। विद्यार्थियों में ज्ञान का विकास हो, किन्तु उसके साथ अच्छे संस्कारों का पल्लवन हो, उनका भावात्मक विकास हो।' राजसमन्द के जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा जिले में जीवनविज्ञान दिवस मनाए जाने की विस्तृत जानकारी दी गई।

'जीवनविज्ञान सेवी' संबोधन

आचार्य महाश्रमण ने कुछ कार्यकर्ताओं की सेवाओं का मूल्यांकन करते हुए उन्हें 'जीवन विज्ञान सेवी' से संबोधित किया

१. प्रदीप लूंकड़	जलगांव
२. श्यामसुन्दर सोनी	उदयपुर
३. प्रेम मुणोत	मदुरै
४. अशोक बरमेचा	हैदराबाद
५. गौतम सेठिया	तिरुवन्नामलै
६. संतोष गुप्ता	भिवानी

मध्याह्न में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के उत्तरी क्षेत्र के पांच प्रान्तों के संघ प्रचारक डॉ. बजरंगलाल गुप्ता ने आचार्य महाश्रमण के दर्शन किए एवं विभिन्न सामाजिक विषयों पर विशद वार्तालाप किया।

पुरस्कार व सम्मान समर्पण समारोह

मध्याह्न में आचार्य महाश्रमण की सन्निधि में जैन विश्वभारती द्वारा संचालित एवं नेमचन्द जेसराज सेखानी चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा प्रायोजित पानादेवी सेखानी 'स्मृति संघ सेवा पुरस्कार' गंगापुर निवासी अणुव्रतसेवी देवेन्द्रकुमार हिरण को प्रदान किया गया। स्वागत भाषण जैविभा के संयुक्त मंत्री विजयसिंह चोरड़िया ने दिया। सम्मान पत्र का वाचन निदेशक राजेन्द्र खटेड़ ने किया। महासभा के अध्यक्ष चैनरूप चंडालिया ने सम्मान पत्र एवं विजयसिंह चोरड़िया व जेसराज लक्ष्मीपत सेखानी ने मेमेंटो के साथ सवा लाख की राशि का चैक देवेन्द्रकुमार हिरण को प्रदान किया। देवेन्द्र हिरण के सुपुत्र अरुण हिरण ने आभार ज्ञापित करते हुए पुरस्कार राशि में अपनी ओर से सवा लाख की राशि जोड़कर जैविभा को अनुदानस्वरूप प्रदान करने की घोषणा की।

अहिंसा प्रशिक्षण के क्षेत्र में नवसृजन एवं अन्य उल्लेखनीय कार्यों के लिए एम. जी. सरावगी फाउण्डेशन कोलकाता द्वारा प्रायोजित 'आचार्य महाप्रज्ञ अहिंसा प्रशिक्षण सम्मान' अहिंसा प्रशिक्षक सौरभ आचार्य एवं संजयभाई को संयुक्त रूप से प्रदान किया गया। जैविभा के पूर्व अध्यक्ष एवं मंत्री गुलाबचन्द चंडालिया ने सम्मान पत्र तथा शासनसेवी कन्हैयालाल छाजेड व अणुव्रतसेवी भीखमचन्द नखत ने मेमेंटो के साथ एक लाख इक्यावन हजार का चैक प्रदान किया। अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल ने प्रस्तुत संदर्भ में अपने विचार व्यक्त किए।

अणुव्रत अनुशास्ता ने कहा--'देवेन्द्रकुमार हिरण ने अणुव्रत और धर्मसंघ की उल्लेखनीय सेवा की है। सौरभ आचार्य और संजयभाई अहिंसा प्रशिक्षण के क्षेत्र में अच्छा कार्य कर रहे हैं। दोनों पुरस्कारों के प्राप्तकर्ता अपना आध्यात्मिक विकास करते रहें।' कार्यक्रम का संचालन राजेश छाजेड़ ने किया।

शिक्षक संसद का १२वां अधिवेशन

९ नवम्बर। आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में समायोजित राष्ट्रीय अणुव्रत शिक्षक संसद संस्थान के त्रिदिवसीय राष्ट्रीय अधिवेशन का दूसरा दिन। प्रातःकालीन कार्यक्रम में राष्ट्रीय अणुव्रत शिक्षक संसद संस्थान की ओर से डॉ. हीरालाल श्रीमाली, साधुशरणसिंह सुमन, एम.आर. ठोमरे, गुलाबचन्द्र शर्मा, पी.सी. कोचर, डॉ. इस्लामअली फारूकी, डॉ. ललिता जोगड़, डॉ. पारसमल जैन एवं चन्द्रकान्तभाई व्यास ने अपने विचार व्यक्त किए। संस्थान के अध्यक्ष भीखमचन्द नखत ने अपनी विचाराभिव्यक्ति के पश्चात अपने साथियों के साथ पांच लाख पचास हजार व्यसनमुक्ति के संकल्प-पत्र पूज्यचरणों में समर्पित किए। अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल ने अपने सारगर्भित विचारों को अभिव्यक्ति दी। मंत्री मुनि का प्रेरक वक्तव्य हुआ।

आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'संयम व्यक्ति के जीवन का महत्त्वपूर्ण अंग होता है। जो पूर्णरूपेण संयम को अंगीकार कर लेता है, वह पंडित कहलाता है। गृहस्थ जीवन में पूर्णरूप से संयम को स्वीकार कर पाना संभव नहीं, किन्तु कुछ अंशों में तो संयम अवश्य रहना चाहिए। जो अणुव्रतों को स्वीकार कर लेता है, उसके जीवन में कुछ संयम स्वतः आ जाता है। अणुव्रत व्रत की चेतना को पुष्ट करनेवाला तत्त्व है।'

अधिवेशन के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--'अणुव्रत शिक्षक संसद एक महत्त्वपूर्ण संस्थान है। इसका अपना नेटवर्क है। इतनी बड़ी संख्या में शिक्षकों का अणुव्रत के साथ जुड़ना अपने आप में एक विशेष बात है। ये शिक्षक भले ही जैन न हों, किन्तु उनमें संतों के प्रति सम्मान, विनय, श्रद्धा और निष्ठा की भावना देखने को मिलती है। कुछ शिक्षक तो अपने व्यवहार से जैन श्रावक जैसे प्रतीत होते हैं। संस्थान के अध्यक्ष भीखमचन्द नखत ने तो जैसे हमारे प्रवास स्थल को ही अपना घर और हेडक्वार्टर बना लिया है। इनको तो हम यहीं का व्यक्ति मान लें। स्वास्थ्य अनुकूल हो अथवा नहीं, किन्तु अणुव्रत के लिए कार्य करते रहते हैं। श्रीमालीजी, धर्मचन्दजी, साधुशरण आदि कार्यकर्ता वर्ष में कितनी ही बार यहां आ जाते हैं। परिवार से कुछ दूर रहकर ये लोग अणुव्रत के कार्य में अपने श्रम और चिंतन का नियोजन कर रहे हैं। कार्यकर्ताओं में कार्य का उत्साह इसी प्रकार बना रहे।'

मंगल भावना समारोह एवं मंगल प्रस्थान

आचार्य महाश्रमण ने आगे कहा--'अभी बड़ी संख्या में नशामुक्ति के संकल्प-पत्र उपहृत किए गए। यों तो ये फॉर्म कागज के हैं, किन्तु इनकी आत्मा अणुव्रत है। अणुव्रत का यह एक कार्य ही कितना महत्त्वपूर्ण है। यह उपक्रम कितनों की जिन्दगी को सुरक्षित बना रहा है। अहिंसा प्रशिक्षण का कार्य भी यत्र-तत्र फैला हुआ है। हमारे कार्यकर्ता और शिक्षक अपना समय निकाल कर अपने ढंग से कार्य कर रहे हैं। अणुव्रत प्रवर्तक गुरुदेव तुलसी की जन्म-शताब्दी सन्निकट है। उस अवसर पर हमें अणुव्रत के कार्य को और अधिक व्यापक बनाना है।'

कार्यक्रम में उज्ज्वल कोठारी, खेड़ब्रह्मा से समागत सुरेशभाई पटेल एवं शंकरलाल जैन ने भी अपने भावों को अभिव्यक्ति दी।

'अणुव्रतसेवी' संबोधन

आचार्यश्री ने पांच कार्यकर्ताओं को 'अणुव्रतसेवी' से संबोधित किया

१.	डॉ. ललिता जोगड़	मुम्बई
२.	डॉ. पारसमल जैन	हुबली
३.	डॉ. खुशालचन्द व्यास	बीकानेर
४.	गुलाबचन्द शर्मा	कुचामनसिटी
५.	डॉ. इस्लामअली फारूकी	उत्तर प्रदेश

अधिवेशन में इक्कीस राज्यों से समागत २६९ शिक्षक संभागियों को आचार्यश्री के पाथेय के अतिरिक्त साध्वीप्रमुखा, मुख्यनियोजिका, अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल, सहप्रभारी मुनि अक्षयप्रकाश, मुनि किशनलाल, मुनि उदितकुमार, मुनि दिनेशकुमार, मुनि अशोककुमार, मुनि जितेन्द्र कुमार, मुनि जयंतकुमार, समण सिद्धप्रज्ञ से प्रेरणा प्राप्त हुई। अधिवेशन में विगत वर्ष के कार्यों की समीक्षा के साथ आगामी वर्ष के लिए कार्य-योजना निर्धारित की गई।

मंगल भावना समारोह एवं मंगल प्रस्थान

१० नवम्बर। तेरापंथ की जन्मभूमि केलवा में २०११ के ऐतिहासिक, प्रभावक और सफल चातुर्मासिक प्रवास का अन्तिम दिन। प्रातःकालीन कार्यक्रम में मंगलभावना समारोह का समायोजन। महिला मंडल की बहनों ने भावपूर्ण गीत का संगान किया। प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष महेन्द्र कोठारी ने इस चातुर्मास के कीर्तिमानों की चर्चा करते हुए आचार्य महाश्रमण की आगामी यात्रा के प्रति मंगलकामना व्यक्त की। इस अवसर पर व्यवस्था समिति के महामंत्री सुरेन्द्र कोठारी, स्वागताध्यक्ष परमेश्वर बोहरा, वरिष्ठ उपाध्यक्ष संपतमल मादरेचा, संयुक्त महामंत्री मूलचन्द कोठारी, मंत्री लवेश मादरेचा, तेयुप के मंत्री लक्की कोठारी, सभा के अध्यक्ष बाबूलाल कोठारी, महिला मंडल की मंत्री रत्ना कोठारी, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष मुकेश कोठारी, मेवाड़ कान्फ्रेंस के अध्यक्ष डा. बसंतीलाल बाबेल, राजेन्द्र कोठारी, महेन्द्र कोठारी (अपेक्स), राजकुमार कोठारी, प्रकाश चपलोत, तनसुख बोहरा एवं ललित बोहरा ने पूज्यवर के महान अनुग्रह के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए मंगलभाव प्रस्तुत किए।

केलवा के सरपंच दिग्विजयसिंह राठौड़ और पूर्व जिलाप्रमुख हरिओमसिंह राठौड़ ने केलवा-वासियों का परम सौभाग्य बताते हुए आचार्यश्री से केलवा में पुनः पधारने की प्रार्थना की।

मंत्री मुनि सुमेरमल जी ने अपने वक्तव्य में कहा--'रेगिस्तान में वर्ष भर में एक बार नदी आती है, किन्तु उसका पानी ग्रामीण लोग वर्षों तक पीते हैं। आचार्यवर तो अध्यात्म के महासमुद्र हैं। आपने चार माह तक केलवा को अमृत वाणी से सिंचित किया। केलवावासी उसे आत्मसात कर अपने जीवन को कृतार्थ करें।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने अपने अभिभाषण में कहा--'आचार्यश्री ने चार महीने तक केलवावासियों पर अनुग्रह वृष्टि की। इससे आप जितना लाभ उठा पाए हैं, वह आपके जीवन को सार्थक बनानेवाला होगा। इस चतुर्मास में लोग आचार्यवर के प्रवचन से तो लाभान्वित हुए ही हैं, साथ ही आचार्यवर ने घर-घर जाकर लोगों को उपकृत किया और उन्हें उपदेश दिया। आचार्यवर के श्रम की कहानी अकथ है, अनिर्वचनीय है। आपकी सुबह से शाम तक की दिनचर्या का सम्यक् आकलन किया जाए तो पता चलेगा कि इस महाश्रमिक के श्रम की कहानी बेजोड़ है। आचार्यवर की पुण्यवत्ता का ही परिणाम है कि चार महीनों तक परिषद इसी प्रकार जमी रही। यहां के कार्यकर्ताओं ने अपने दायित्व को निष्ठा के साथ निभाया।'

आचार्य महाश्रमण ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'हम लोग लगभग चार माह पूर्व महामना आचार्य भिक्षु के इस तपःस्थल में आए। मुझे आत्मतोष है कि परमपूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञ के मुखारविन्द से जो घोषणा हुई थी, उसे पूरा करने का प्रयास कर सका, यानी गुरुदेव के वचन को पूरा करने का मेरा जो लक्ष्य था, मैने यथाशीघ्र उसे पूरा करने का प्रयास किया और अब केलवा चातुर्मास संपन्न हो रहा है।

इस चातुर्मास में मैंने देखा--केलवा एक छोटा-सा कस्बा है। तेरापंथी परिवार भी सीमित हैं, थोड़े हैं। इस थोड़ी सामग्री में व्यवस्था और सेवा का जो क्रम बना, वह अपने आप में महत्त्वपूर्ण है। कार्यकर्ता तो मानो सेवा के लिए समर्पित हो गए थे। इनका व्यापार किस तरह चला, मुझे नहीं पता, किन्तु इन्होंने इसी को मानो अपना मुख्य धंधा मान लिया। चतुर्मास में ही नहीं, उससे पूर्व की तैयारी में भी अपना समय और श्रम लगाया। व्यवस्था में प्रौढ़ भी हैं, किन्तु युवा ज्यादा हैं। युवक व्यापार आदि कार्यों से जुड़े होते हैं, फिर भी उन्होंने कितना श्रम किया है, समय लगाया है। हमारे श्रावक कितने विनीत और श्रद्धावान हैं, कार्य के प्रति समर्पित हैं। किस प्रकार उन्होंने अपना कार्य किया। चतुर्मास के प्रति कार्यकर्ताओं में जो निष्ठा की भावना थी, वह अपने आप में विशेष बात है।

मंगल वेला में मंगल प्रस्थान

११ नवम्बर। आचार्य महाश्रमण ने प्रातः मंगल विहार से पूर्व राजा प्रदेशी और केशीस्वामी के संवाद का रोचक एवं मार्मिक विश्लेषण कर केलवावासियों को आध्यात्मिक विकास की प्रेरणा प्रदान की। तत्पश्चात इष्ट मंत्रों का जप कर लगभग ९.१५ बजे गगनभेदी जयनारों एवं मंगल घोषों के बीच महाप्रज्ञ भवन से मंगल प्रस्थान किया।

राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं महामंत्री की पंजाब संगठन-यात्रा

नई दिल्ली, 11 नवम्बर। पंजाब में संगठन को मजबूती देने एवं कार्यकर्ताओं की सार-संभाल हेतु अणुव्रत महासमिति के महामंत्री सम्पत सामसुखा भीलवाड़ा से 9-11-2011 को सायं 7.40 पर चेतक एक्सप्रेस से रवाना हुए। ट्रेन में सफर करते समय भुवनेश्वर के कर्मठ कार्यकर्ता मगरचंद बरड़िया मिल गये, अणुव्रत पर काफी चर्चा-चिंतन हुआ। व्यवधान के कारण सुबह 5 बजे दिल्ली पहुंचने वाली ट्रेन सायं 6 बजे दिल्ली स्टेशन पहुंची। अणुव्रत भवन में रात्रि विश्राम किया। प्रातः मुनि राकेशकुमारजी के दर्शन किये।

11 नवम्बर को महासमिति कार्यालय में कार्यालय-कर्मियों के साथ यात्रा की तैयारी व अन्य कार्य निपटाये महासमिति के पदाधिकारी रतनलाल सुराणा तथा प्रदीप संचेती से भावी योजनाओं पर चर्चा-चिंतन हुआ। अपराह्न 3.30 बजे महासमिति अध्यक्ष बाबूलाल गोलछा के साथ जगराओ (पंजाब) के लिए रवाना हुए।

जगराओ

जगराओ में लाला तिलकराज जैन के आवास पर रात्रि विश्राम किया। सुबह तेरापंथ भवन पहुंचे। जहां कार्यकर्ताओं की गोष्ठी रखी गयी। अणुव्रत महासमिति की शिक्षामंत्री रोजी गोयल ने संगोष्ठी का संचालन करते हुए पंजाब संगठन यात्रा के लक्ष्य पर प्रकाश डाला। महामंत्री सम्पत सामसुखा ने पंजाब में अणुव्रत के संगठन को खड़ा करने एवं कार्यकर्ताओं को एकजुट करने पर विस्तार से प्रकाश डाला।

महासमिति अध्यक्ष बाबूलाल गोलछा ने अणुव्रत संगठन यात्रा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए संस्कार-निर्माण की बात कही। लाला तिलकराजजी जैन, बालकृष्ण भंडारी, जगदीश भेरी एवं स्थानीय महिला मंडल की अध्यक्ष ने भी अपने विचार रखे।

संगोष्ठी संपन्न कर अध्यक्ष एवं महामंत्री साध्वी मधुस्मिता के दर्शन हेतु अशोक जैन-सभाध्यक्ष के आवास पर पहुंचे। उनसे अणुव्रत संगठन व कार्यक्रमों के बारे में चर्चा-मार्गदर्शन प्राप्त किया। पंजाब में अणुव्रत की अत्यधिक आवश्यकता है, नशामुक्ति पर विशेष बल देने की जरूरत बतायी। साध्वीश्री से मांगलिक सुनकर लाला तिलकराज जैन के स्कूल 'अणुव्रत पब्लिक हाई स्कूल' में पूर्व निर्धारित कार्यक्रम में भाग लिया।

स्कूल के विद्यार्थियों के मध्य कार्यक्रम रखा गया। रोजी गोयल ने विस्तार से अणुव्रत व उनसे जीवन में होने वाले लाभ पर प्रकाश डाला। स्कूल के चेयरमैन तिलकराज जैन, बी.के. बंसल, जगदीश भोरी ने भी अपने विचार रखे। महामंत्री सम्पत सामसुखा ने कहा विद्यार्थी अपने जीवन-व्यवहार को इस तरह से बनायें कि लोग कह सकें यह अणुव्रत स्कूल का छात्र है। यह प्रभाव आपकी जीवन शैली से अन्य लोगों पर भी पड़ना चाहिए। अध्यक्ष बाबूलाल गोलछा ने संस्कार निर्माण व अणुव्रत जीवन शैली पर जोर देते हुए कहा– बड़ों का, शिक्षकों का आदर करें। विद्यार्थियों को अणुव्रत नियमों का संकल्प कराया। कार्यक्रम सम्पन्न कर उषा जैन, पुत्रवधू तिलकराज जैन के स्कूल 'सेंट महाप्रज्ञ अकादमी' का अवलोकन कर उनके साथ रायकोट के लिए रवाना हुए।

रायकोट

राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं महामंत्री सायं चार बजे रायकोट पहुंचे। यहां महिला कार्यकर्ता ज्यादा संख्या में उपस्थित थीं। रोजी गोयल ने उपस्थित कार्यकर्ताओं के बीच पंजाब यात्रा का लक्ष्य बताया। संगठन को मजबूत बनाने की प्रेरणा दी। महामंत्री सम्पत सामसुखा ने अणुव्रत के कार्यक्रमों की विस्तार से जानकारी प्रस्तुत की। नशामुक्ति अभियान में महिलाओं की सहभागिता पर विशेष बल दिया। राष्ट्रीय अध्यक्ष बाबूलाल गोलछा ने अपने जीवन में अणुव्रत को अपनाने, बच्चों को संस्कारित बनाने में अभिभावकों की भूमिका पर विचार रखे।

उपस्थित सदस्यों ने अणुव्रत संकल्प धारण कर अणुव्रत समिति का गठन किया। अरविंदकुमार जैन को नवगठित समिति का सर्वसम्मति से अध्यक्ष मनोनीत किया गया। उपस्थित सदस्याओं ने अणुव्रत पत्रिका में भी रुचि ली व उसकी सदस्य बनीं। वहां से विदा लेकर मंडी गोविंदगढ़ के लिए प्रस्थान किया।

मंडी गोविन्दगढ़

मंडी गोविन्दगढ़ की सीमा में प्रवेश के साथ ही आदरणीय लक्ष्मी-सुरेन्द्रजी मित्तल की गाड़ी के साथ-साथ उनके निवास स्थान पर पहुंचे। यहां प्रातः 8 बजे कार्यक्रम रखा गया। सर्वप्रथम पंजाब की आगे की संगठन यात्रा की उपयोगिता पर चिंतन-मंथन हुआ। सुरेन्द्रजी मित्तल ने दूरभाष से सम्पर्क कर कार्यक्रमों का निर्धारण किया। शाम का भोजन मित्तलजी के साथ किया। रात्रि विश्राम भी यहीं रहा। तत्पश्चात मित्तल परिवार के साथ साध्वी उज्ज्वलकुमारी के सान्निध्य में आयोजित कार्यक्रम में भाग लिया।

सुरेन्द्रजी मित्तल एवं लक्ष्मीजी मित्तल ने अध्यक्ष एवं महामंत्री का स्वागत करते हुए पंजाब यात्रा का उद्देश्य बताया। महामंत्री सम्पत सामसुखा ने अणुव्रत संगठन, उसकी आवश्यकता, लक्ष्य व उपयोगिता की विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने इस बात पर चिन्ता व्यक्त की कि पंजाब में नशे का प्रभाव जिस तरह से सामाजिक जीवन को प्रभावित कर रहा है तथा इससे किसी भी समाज के परिवार अछूते नहीं हैं। विडम्बना तो यह है कि शादी व अन्य समारोहों में सार्वजनिक रूप से शराब परोसी जा रही है। स्थानीय अणुव्रत समिति के मंत्री प्रवीण कुमार जैन ने बताया कि उन्होंने अपने पुत्र के विवाह- समारोह में शराब के उपयोग के लिए इन्कार किया तो वह सम्बन्ध ही टूट गया। यहां पर अणुव्रत आंदोलन का कार्य करने की असीम संभावनाएं हैं। जहां पर समस्या ज्यादा है समाधान कार्य का महत्व और बढ़ जाता है। साध्वी लावण्ययशा ने महासभा की ओर इंगित करते हुए कहा केन्द्रीय संस्थाओं द्वारा पंजाब की सार-संभाल करना बहुत आवश्यक है। लेकिन यह काम नहीं हो पा रहा है, इसलिए हमें पंजाब के सभी क्षेत्रों से इसकी शिकायत मिली है। रमेशजी ने बातचीत के दौरान कहा अगर केन्द्रीय संस्थाओं द्वारा यहां ज्यादा समय दिया जाये तो नशे की समस्या को दूर किया जा सकता है।

महासमिति के अध्यक्ष बाबूलाल गोलछा ने कहा कि इस शिकायत पर हम अवश्य ध्यान देंगे एवं जितना समय आप हमारा लेना चाहें हम सदैव

देने के लिए तैयार हैं, परन्तु अणुव्रत का कार्य आगे बढ़े एवं समाज नशे से मुक्त हो।

लुधियाना

13 नवंबर को सुबह मंडी गोविन्दगढ़ से अणुव्रत महासमिति के पदाधिकारी सुरेन्द्रजी मित्तल एवं लक्ष्मीजी मित्तल के साथ लुधियाना सभा के अध्यक्ष रामचंद्र चोरडिया के निवास-स्थल पर गए और मुनि धर्मचंद पीयूष के सहयोगी संतों के दर्शन कर आशीर्वाद लिया।

पंजाब प्रांतीय सभाध्यक्ष मोहिन्द्र गुप्ता, महामंत्री कमल नोलखा भी उपस्थित थे। अणुव्रत संगठन को पंजाब में किस तरह खड़ा किया जाये, इस पर विस्तार से चिंतन-मंथन चला। पूर्व में यहां 19 अणुव्रत समितियां थीं परन्तु आज एक भी नहीं है। मंडी गोविन्दगढ़ अणुव्रत समिति के अंतर्गत ही यहां अणुव्रत भवन संचालित है, लेकिन अणुव्रत के कार्यों में गतिशीलता नहीं है। इस पर पंजाब प्रांतीय पदाधिकारियों के साथ गहन चिंतन-मंथन हुआ। सुरेन्द्रजी मित्तल प्रांतीय सभा के चेयरमेन हैं। पदाधिकारियों ने यथासंभव सहयोग करने का आश्वासन दिया।

मुनिश्री के सान्निध्य में गोष्ठी का आयोजन रखा गया। जिनमें पंजाब सभा के अध्यक्ष मोहिन्द्र गुप्ता, सुरेन्द्रजी मित्तल ने विचार रखे। महामंत्री सम्पत सामसुखा ने पंजाब में अणुव्रत समितियों के गठन में सभाओं के सहयोग हेतु निवेदन किया।

महासमिति के अध्यक्ष बाबूलाल गोलछा ने अणुव्रत पत्रिका व विभिन्न कार्यक्रमों की जानकारी दी। यहां से सभाध्यक्ष रायचंद चोरड़िया के आवास पर भोजन कर शेरपुर के लिए रवाना हुए।

शेरपुर

शेरपुर में नरेशकुमार गर्ग के आवास पर जलपान कर तेरापंथ सभा भवन पहुंचे। अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र के प्रभारी संजय भाई से मुलाकात हुई। यहां अहिंसा प्रशिक्षण का कार्य चल रहा है। अणुव्रत समिति के माध्यम से अणुव्रत के अन्य आयामों का भी यहां संचालन किया जा रहा है। उपस्थित कार्यकर्ताओं ने अणुव्रत समिति के गठन करने पर सहमति व्यक्त की व शीघ्र ही समिति गठित कर सूचित करने की बात कही। नरेशकुमार गर्ग, संजय भाई, महामंत्री सम्पत सामसुखा, राष्ट्रीय अध्यक्ष बाबूलाल गोलछा ने विचार रखे। शेरपुर से रवाना होकर धुरी पहुंचे।

धुरी

धुरी में मुनि विमलकुमार के सान्निध्य में कार्यक्रम आयोजित हुआ। वरिष्ठ श्रावक चौधरी रघुवीरजी थानेदार शा ने अपने विचार रखे एवं केन्द्रीय संस्थाओं को पंजाब की सार-संभाल तथा आत्मीय लगाव पैदा करने पर विशेष बल दिया। महामंत्री सम्पत सामसुखा ने अणुव्रत कार्यक्रमों की जानकारी देते हुए कहा पंजाब प्रांतीय सभा को एक प्रस्ताव पारित करना चाहिए कि जिन तेरापंथी परिवारों में शादी-समारोह या अन्य सार्वजनिक कार्यक्रम में शराब परोसी जाएगी उन समारोह में क्षमा मांगते हुए हम अपनी उपस्थिति की असमर्थता व्यक्त करते हुए उनमें शामिल नहीं होंगे। एक सामाजिक वातावरण इसके लिए बनाया जाये व पंजाब में यह पहचान बनायी जाये कि यह जैन अणुव्रती परिवार है। इनके समारोह में शराब पीना/पिलाना निषिद्ध है, तो हम समझते हैं अणुव्रत का बहुत बड़ा कार्य होगा। थानेदार शा, सुरेन्द्रजी मित्तल, लक्ष्मीजी मित्तल ने यह आश्वासन दिया कि हम इस बात को पंजाब सभा की बैठक में जरूर रखेंगे। मुनि विमलकुमार ने अणुव्रत की पृष्ठभूमि को बताते हुए इसे अपनाने व प्रचारित-प्रसारित करने की प्रेरणा दी।

राष्ट्रीय अध्यक्ष बाबूलाल गोलछा ने कहा अभिभावकों को अपने बच्चों के दैनिक जीवन के बारे में भी जानकारी रखनी चाहिए। अध्ययन के लिए हम बच्चों को बाहर भेज देते हैं एवं आवश्यक/अनावश्यक उनकी मांग को हम पूरा करते रहते हैं। बाद में कहते हैं बच्चा हमारे नियंत्रण में नहीं है। उनकी मित्रता, संगत, आवश्यकता आदि के बारे में उन्हें गहराई से समझाया जाये ताकि वे इधर-उधर न भटकें एवं गलत संगत में न पड़ें। यहां कार्यक्रम संपन्न कर संगरूर के लिए रवाना हुए।

संगरूर

संगरूर में साध्वी सुदर्शना के सान्निध्य में कार्यक्रम रखा गया। अणुव्रत के कार्यकर्ताओं ने कहा कि संगरूर में अणुव्रत के अनेक कार्यक्रम पूर्व में संपादित हुए हैं, जिनकी रिपोर्ट केन्द्रीय प्रभारी को भेजी गयी थी; परन्तु संगठन के स्तर पर अणुव्रत समिति का गठन नहीं किया गया था। पिछले दो वर्ष से कार्यक्रम संचालित नहीं हो पाए हैं। अभी हम यहां पर संगठन बनायेंगे व महासमिति के दिशा-निर्देशानुसार कार्यक्रम संपादित करेंगे।

महामंत्री सम्पत सामसुखा ने अणुव्रत समिति गठन की प्रक्रिया, अणुव्रत कार्यक्रमों की विस्तृत जानकारी देते हुए अणुव्रत को हर क्षेत्र में ले जानी की बात कही। राष्ट्रीय अध्यक्ष बाबूलाल गोलछा ने अणुव्रत को अपने जीवन में अपनाने व अणुव्रत कार्यकर्ता के रूप में प्रस्तुत करने की बात कही। राहुल कुमार जैन ने आतिथ्य व आवास की व्यवस्था की। संगरूर में रात्रि विश्राम कर सुरेन्द्रजी मित्तल व लक्ष्मीजी मित्तल विदा लेकर गोविन्दगढ़ के लिए रवाना हुए।

प्रातः 4.30 पर रवाना होकर हरियाणा धारसूता पहुंचकर मुनि कमलकुमार के दर्शन किये, प्रवचन में भाग लिया। यहां तेरापंथ भवन के निर्माण की नींव रखने का कार्यक्रम था, जिसमें आस-पास के गाँवों के काफी लोग उपस्थित थे। यहां राष्ट्रीय अध्यक्ष बाबूलाल गोलछा ने अणुव्रत की विस्तार से जानकारी दी। महामंत्री सम्पत सामसुखा ने नशामुक्ति अभियान चलाने का आग्रह किया तथा कहा– मुनिश्री की प्रेरणा से यह कार्य और गति पकड़ सकता है। मुनिश्री ने अपने प्रवचन में कहा धर्म सबसे बड़ा है। धन, मान, सम्मान से भी महत्वपूर्ण है धर्म की उपलब्धि। जो व्यक्ति अपने जीवन व्यवहार में धर्म को जीता है वही व्यक्ति शांति व आनन्द का अनुभव कर सकता है।

पंजाब संगठन यात्रा में श्री सुरेन्द्रजी मित्तल एवं लक्ष्मीजी मित्तल का तन-मन-धन से पूर्ण सहयोग मिला। अणुव्रत की संपूर्ण जिम्मेदारी संभालते हुए मित्तल परिवार अणुव्रत के प्रति समर्पित हो गया। श्रीमती रोजी गोयल एवं उषा जैन का भी सराहनीय सहयोग मिला।

प्रवचन समापन के बाद स्थानीय तेरापंथ भवन की नींव रखने का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। अनिल कुमार जैन ने नींव का पत्थर रखा। अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष बाबूलाल गोलछा एवं महामंत्री सम्पत सामसुखा ने नींव का पत्थर रखने में सहयोग किया एवं मुनि कमलकुमारजी से मंगल पाठ सुनकर दिल्ली के लिए प्रस्थान किया।

देश की तरक्की के लिए गैर-राजनैतिक प्रयत्न भी जरूरी

दिल्ली, 16 नवम्बर। कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव राहुल गांधी ने देश को तरक्की की ओर अग्रसर करने के लिए समाज एवं राष्ट्र का नेतृत्व करने वाले लोगों से अपेक्षा की कि वे समाज को तोड़ने की बजाय जोड़ने के प्रयत्न करें। वे अपने निवास 10, जनपथ पर प्रेक्षाप्रभारी मुनि जयकुमार के नेतृत्व में अणुव्रत प्रतिनिधि मंडल के साथ एक चर्चा में बोल रहे थे। राहुल गाँधी ने पंडित जवाहरलाल नेहरू, इंदिरा गांधी, राजीव गांधी एवं सोनिया गांधी के अणुव्रत आंदोलन व तेरापंथ से अनन्य संबंधों की जानकारी प्राप्त कर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि समाज एवं राष्ट्र में एकता और सौहार्द का वातावरण निर्मित करने की दृष्टि से कोरे राजनीतिक प्रयत्न पर्याप्त नहीं हैं। इसके लिए सभी एकजुट होकर प्रयास करें। अणुव्रत आंदोलन की आज विशेष प्रासंगिकता है।

राहुल गांधी ने इस वर्ष आचार्य महाश्रमण के अमृत महोत्सव समारोह एवं वर्ष 2014 में आयोजित होने वाले आचार्य तुलसी जन्म-शताब्दी वर्ष तथा वर्तमान में चल रही अहिंसा यात्रा की विस्तृत जानकारी दिये जाने पर कहा कि अहिंसा के माध्यम से ही समाज एवं राष्ट्र में व्याप्त समस्याओं का समाधान पा सकते हैं। महात्मा गांधी ने अहिंसा का जो आदर्श प्रस्तुत किया आचार्य महाश्रमण उसी आदर्श को आधुनिक समाज में प्रस्थापित करने के प्रयास में लगे हुए हैं।

इस अवसर पर मुनि जयकुमार ने कहा आज देश में हिंसा, आतंकवाद और भ्रष्टाचार का दौर चल रहा है, उससे समूचा राष्ट्र चिंतित है। राष्ट्र की एकता, शांति एवं सौहार्द के लिए अहिंसा की प्रतिस्थापना जरूरी है। इसके लिए शिक्षा एक सशक्त माध्यम है। भावी पीढ़ी का कल्याण कैसे हो और उसे अहिंसा का प्रशिक्षण समुचित ढंग से मिले, इस दृष्टि से जीवन विज्ञान की उपयोगिता है। मुनि जयकुमार ने भ्रष्टाचारमुक्त व्यवस्था के निर्माण एवं हिंसा को रोकने के लिए राजनैतिक प्रयत्नों के साथ-साथ गैर-राजनैतिक प्रयत्नों की जरूरत को उजागर करते हुए कहा कि जहां भी इस तरह के प्रयत्न हों शीर्ष राजनीति से जुड़े लोगों को इसमें भागीदारी करनी चाहिए। जब तक राष्ट्र में नैतिकता एवं चरित्र का विकास नहीं होगा, तब तक भारत हिंसा एवं भ्रष्टाचार की समस्या से मुक्त नहीं हो सकता। राजनीतिक दल अपनी कार्यशैली में अहिंसा को जोड़ लें तो अनेक समस्याओं का सहज ही निदान हो सकता है। हमारे आचार और विचार के बीच सामंजस्य जरूरी है। कथनी और करनी की समानता से ही हिंसा, नफरत, घृणा आदि से जूझ रहे राष्ट्र को निजात मिल सकेगी। समाज एवं राष्ट्र का नेतृत्व करने वाली शक्तियों को नैतिक एवं चरित्रवान बनना होगा। मुनि रोहितकुमार एवं मुनि मुदितकुमार ने प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान एवं अणुव्रत आंदोलन के नैतिक एवं चरित्रमूलक कार्यक्रमों की जानकारी राहुल गांधी को दी।

अणुव्रत प्रतिनिधि मंडल में सुखराज सेठिया, मुरली कांठेड, अरविंद गोठी, शीतल बरड़िया, सुशील कुहाड़, नीतिन दूगड़, बलराज स्वामी, वीरेन्द्र वशिष्ठ, हीरालाल गेलड़ा, अरविंद दूगड़ इत्यादि उपस्थित थे। प्रतिनिधि मंडल ने राहुल गांधी को आचार्य महाप्रज्ञ का साहित्य भेंट किया।

अणुव्रत प्रवक्ता एच.आर. दासेगौडा का निधन

दिल्ली। अणुव्रत आंदोलन के प्रारंभिक कार्यकर्ता प्रो. एच.आर. दासेगौडा का विगत 13 नवंबर 2011 को आकस्मिक देहवसान हो गया। स्वतंत्रता सेनानी दासेगौड़ा वर्तमान में गांधी स्मारक निधि, बैंगलोर के सचिव थे एवं एक लम्बे समय से अणुव्रत आंदोलन से जुड़े रहे। दासेगौड़ा महान शिक्षाविद् और समाजसेवी व्यक्तियों की श्रेणी में रहे। उन्होंने अनेक शिक्षण संस्थाओं के गठन में अपनी अहम भूमिका निभाई। साथ ही विश्व के अनेक देशों में भारतीय शिक्षा-प्रणाली पर भाषण दिए। उन्हें अपने जीवन काल में किए गए विशिष्ट कार्यों के लिए अनेक मानद संस्थाओं द्वारा सम्मानित भी किया गया।

अणुव्रत आंदोलन के प्रति उनकी गहरी निष्ठा रही। अणुव्रत अनुशास्ता द्वारा उन्हें 1999 में उनकी योग्यता एवं संघनिष्ठा को देखते हुए 'अणुव्रत प्रवक्ता' के संबोधन से संबोधित किया गया।

अणुव्रत परिवार दासेगौडा के देहावसान पर अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि व्यक्त करते हुए दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करता है।

अणुव्रत से व्यक्तित्व विकास

सिकंदराबाद, 16 नवंबर। मुनि जिनेशकुमार के सान्निध्य में निर्मला बैद ने गवर्नमेंट गर्ल्स कॉलेज मारेडपल्ली में छात्राओं को अणुव्रत व जीवन विज्ञान से किस प्रकार व्यक्तित्व विकास हो सकता है, इसकी विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने आगे कहा लड़की दो घरों की शोभा होती है और दो घरों को संवारती है, इसलिए उसमें विनम्रता, सहनशीलता, अनुशासन, आज्ञापालन की भावना होनी चाहिए। विद्यार्थियों को परीक्षा में ईमानदारी, मेहनत से पास होने से ज्ञान की वृद्धि होती है तथा भविष्य भी उज्ज्वल होता है। निर्मला बैद ने इस अवसर पर विद्यार्थियों को स्मरण शक्ति बढ़ाने के भी प्रयोग करवाये तथा आत्म-हत्या नहीं करने, नशामुक्त रहने, पर्यावरण संरक्षण आदि के संकल्प करवाये। अंत में विद्यार्थी अणुव्रत आचार संहिता के संकल्प करवाये। अणुव्रत आचार संहिता का फोल्डर कॉलेज के कार्यालय में लगवाया गया। कॉलेज के प्रिंसिपल हरिनाथ व हिन्दी की लेक्चरार का पूर्ण सहयोग रहा।

अहिंसा यात्रा का लक्ष्य

अनुकम्पा की चेतना का विकास

- साम्प्रदायिक सौमनस्य
- भ्रूणहत्या निरोध
- नशामुक्ति
- ईमानदारी का प्रयास

आचार्य महाश्रमण

राजभवन में गूंजा महावीर का संदेश

गुवाहाटी, 13 नवंबर। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण की कालजयी कृति 'सुखी बनो' को महामहिम राज्यपाल को उपहृत कर उसे असमवासियों तक पहुंचाने का कार्यक्रम राजभवन में रखा गया। राज्यपाल जे.बी. पटनायक के आमंत्रण पर साध्वी निर्वाणश्री राजभवन पधारीं। राज्यपाल ने साध्वीवृंद का भावपूर्ण स्वागत किया। उन्होंने भारतीय संस्कृति के संत-माहात्म्य की सुरक्षा करते हुए स्वयं साध्वीश्री को अतिथिगृह तक पहुंचाया।

कार्यक्रम का शुभारंभ ''चैत्य पुरुष जग जाए'' के समवेत स्वर से हुआ। राज्यपाल जे.बी. पटनायक ने साध्वीश्री का स्वागत करते हुए अपने भावों की संक्षिप्त अभिव्यक्ति दी। सभा के मंत्री निर्मल कोटेचा ने साध्वीश्री का परिचय दिया।

साध्वी निर्वाणश्री ने कहा सब सुख चाहते हैं। दुःख किसी को अच्छा नहीं लगता। सुख की खोज के लिए चार चरणों में आगे बढ़ना होगा। सुख का पहला रास्ता है सब प्राणियों के प्रति मैत्री। सुखी जीवन का स्वर्णिम सूत्र है गुणों की प्रति अनुराग। सुख का एक महान पथ है 'क्लिष्टेषु जीवेसु कृपा' दुखी जीवों के प्रति करुणा। चौथा महत्वपूर्ण तत्त्व है तटस्थता या माध्यस्थ भाव। इन पर मनन कर अभ्यास करने वाला सुखी हो सकता है।

साध्वी डॉ. योगक्षेमप्रभा ने अपने प्रेरक वक्तव्य में कहा सुख और दुःख जीवन के दो छोर हैं। व्यक्ति एक को चाहता है, दूसरे से छुटकारा पाना चाहता है। भगवद्गीता और उत्तराध्ययन ज्ञान के भंडार एवं आदर्श जीवन के प्रबंधन-ग्रंथ हैं। इनको पढ़कर जीवन में उतारकर व्यक्ति तनावमुक्त एवं स्वस्थ जीवन जी सकता है। साध्वीश्री ने उपस्थित संभागियों को प्रेक्षाध्यान के प्रयोग करवाये। जिज्ञासा समाधान के क्रम में प्रश्नों के समाधान साध्वीश्री ने दिये। मंच संचालन निर्मल कोटेचा ने किया। धन्यवाद ज्ञापन नयन भराली ने किया। कार्यक्रम की सम्यक् समायोजना में झंकार दुधोड़िया का सराहनीय श्रम रहा। इससे पूर्व साध्वीश्री उजान बाजार के कन्हैयालाल सुराणा के प्रवास स्थल से एक रैली के साथ राजभवन पधारीं। कार्यक्रम में तेयुप, महिला मंडल एवं सभाओं के कार्यकर्ताओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम की सफलता में सभा के कार्यकर्ताओं एवं पदाधिकारियों का सराहनीय श्रम रहा।

अणुविभा में बालदिवस

राजसमंद, 15 नवंबर। अणुव्रत विश्व भारती राजसमंद में जिला स्तरीय बाल दिवस का आयोजन गणेश कच्छारा की अध्यक्षता, जिला शिक्षा अधिकारी डॉ. राकेश तैलंग के मुख्य आतिथ्य व साहित्यकार एवं शिक्षाविद् डॉ. बालकृष्ण बालक के सान्निध्य में आयोजित हुआ। कार्यक्रम में 22 विद्यालयों के 151 बालक/बालिकाओं की सहभागिता रही। बालोदय निदेशक बालमुकुन्द सनाढ्य ने कार्यक्रम का विवरण प्रस्तुत किया।

मुख्य अतिथि डॉ. तैलंग ने कहा देश की बुनियाद व भविष्य बालकों पर आधारित होता है। बालकों के उन्नयन के लिए किया जाने वाला यह कार्य देश का सबसे महत्वपूर्ण पवित्र कार्य है। अणुव्रत विश्वभारती बालोदय के माध्यम से बालकों के उन्नयन का जो कार्य कर रही है वह अनुकरणीय है। हम इसके लिए संस्थापक मोहनभाई के आभारी हैं।

डॉ. बालकृष्ण 'बालक' ने चाचा नेहरू के जीवन चरित्र व संदेश को सशक्त सारगर्भित स्वरूप में प्रस्तुत किया। फतेहलाल 'अनोखा' ने आयोजित प्रतियोगिताओं पर अपनी समीक्षात्मक प्रस्तुति देते हुए कहा बालकों की सुप्त शक्ति के प्रस्फुटन के लिए यह आयोजन श्रेष्ठ अवसर है। विजेता बालक-बालिकाओं में प्रथम 'कविता' में रिया चौरड़िया व 'मुझे कुछ कहना है' खुला मंच में सुबंधु गोस्वामी ने अपनी प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम में संभागी बालक-बालिकाओं के साथ राजसमंद के शिक्षाविद् व रुचिशील महानुभावों के रूप में शंभुपुरी गोस्वामी, शिवनारायण शर्मा, कोशलेन्द्र गोस्वामी, लक्ष्मण शर्मा, सीमा नन्दवाणा, विभा शर्मा, दुर्गाशंकर यादव, आशा माण्डावत, उषा टेलर व अन्य महानुभाव सम्मिलित हुए। विजेताओं को पुरस्कृत किया गया एवं सहभागी बालकों को प्रमाण-पत्र वितरित किए गए। कार्यक्रम का संचालन बालोदय निदेशक बालमुकुन्द सनाढ्य ने एवं संयोजन चतुर कोठारी ने किया।

संस्कारी बालक देश का गौरव

कोटा, 1 नवम्बर। संस्कारी बालक देश का गौरव होते हैं। ज्ञानशाला की संस्कार निर्माण में महती भूमिका होती है। एक संस्कारवान बालक के निर्माण में अभिभावक, शिक्षक, शिक्षा व धर्मगरु सबके योगदान की अपेक्षा रहती है। शिविर में प्रशिक्षण प्राप्त करके बहनें बालकों के निर्माण में अपना श्रम नियोजित करेंगी। ये विचार मुनि रमेशकुमार ने प्रज्ञा-दीप भवन में आयोजित त्रिदिवसीय ज्ञानशाला प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर के समापन समारोह में शिविरार्थियों एवं धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किए।

मुनि चैतन्यकुमार 'अमन' ने कहा शिविर निर्माण की महती प्रयोगशाला होती है। व्यक्ति से समाज और समाज से राष्ट्र का निर्माण होता है। निर्मल नौलखा ने कहा जीवन विकास की तीन बड़ी बाधाएं हैं अज्ञान, आलस्य और कषाय। हम इनसे मुक्त होकर आध्यात्मिक ज्ञान चेतना का विकास करें।

कार्यक्रम में रतन जैन ने प्रशिक्षक निर्मल नौलखा का साहित्य द्वारा सम्मान किया। विनय दूगड़ ने अतिथियों को साहित्य भेंट किया। मीनाक्षी मेहता ने स्वागत भाषण दिया। शिविरार्थी शिखा बाफना, रचना सेठिया, कविता बाफना, शिमला जैन, हेमलता जैन, सुप्रिया हीरावत ने शिविर के अनुभवों को बांटते हुए समय वृद्धि की भावना रखी। संचालन प्रेमलता गोलछा ने किया।

मोहनलाल कठोतिया सेवा कोष

कठोतिया भवन, 1532, चन्द्रावल रोड़ दिल्ली-110007

दूरभाष : (011) 23853862, 9311053111

प्रेक्षा पुरस्कार - 2012

मोहनलाल कठोतिया सेवा कोष, दिल्ली द्वारा प्रत्येक वर्ष प्रेक्षाध्यान के एक विशिष्ट साधक एवं प्रशिक्षक को अक्षय तृतीया के अवसर पर 'प्रेक्षा पुरस्कार' प्रदान कर सम्मानित किया जाता है।

सन् 2012 के 'प्रेक्षा पुरस्कार' के लिए योग्य साधक का चयन संस्था की निर्वाचित समिति द्वारा किया जायेगा। उक्त निर्वाचित समिति द्वारा चयनित साधक के नाम की घोषणा मर्यादा महोत्सव के पुनीत अवसर पर आगामी 30 जनवरी 2012 सोमवार को आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में आमेट (राजस्थान) में की जाएगी।

जो भी व्यक्ति या संस्था योग्य साधक के नाम का सुझाव देना चाहें, वे उनके ध्यान-साधनामय जीवन का संक्षिप्त विवरण लिखकर हमारे कार्यालय में उपर्युक्त पते पर अतिशीघ्र भेजने का कष्ट करें।

बच्छराज कठोतिया, *अध्यक्ष*

अणुव्रत सिखाता है जीवन जीने की कला

सिवानीमंडी, 25 नवम्बर। अणुव्रत जीवन विज्ञान कार्यक्रम समाज के प्रत्येक तबके को जीवन जीने की कला सिखाता है। विद्यार्थी जीवन में ही इस कार्यक्रम से जुड़ने वाले विद्यार्थी को अपने भविष्य में बड़े से बड़े लक्ष्य को हासिल करने के लिए प्रेरित करता है। युवा वर्ग को इस कार्यक्रम से जुड़ना चाहिए। ये विचार अणुव्रत महासमिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष बाबूलाल गोलछा ने शहर के राजकीय वरिष्ठ कन्या माध्यमिक विद्यालय में आयोजित विद्यार्थी प्रशिक्षण शिविर को संबोधित करते हुए कहे। इस दौरान प्रदेश अणुव्रत समिति के अध्यक्ष प्रो.देवेंद्र कुमार जैन ने कहा कि नशा विद्यार्थियों का नाश करता है। इसलिए प्रत्येक विद्यार्थी को चाहिए कि वे अपने विद्यार्थी जीवन में ही नशे से दूर रहने का संकल्प ले और अपना जीवन आगे बढाएं। समिति के संरक्षक सुरेंद्र कुमार जैन ने विद्यार्थियों को अणुव्रत जीवन अपनाकर नैतिकता के पथ पर चलने का आह्वान किया। अणुव्रत जीवन विज्ञान कार्यक्रम के सिवानी के मुख्य प्रचारक होमसिंह अणुव्रती ने विद्यार्थियों को कुसंगत से दूर रहने का आह्वान किया तथा राष्ट्रीय अध्यक्ष का एक दिवसीय शिविर में पहुंचने पर आभार व्यक्त किया। स्कूल के प्राचार्य धूपसिंह श्योराण, सुरेंद्र जैन, सुनील कुमार जेई, सुभाष चंद्र, लाल सिंह सहित कई गण्यमान्य व्यक्ति व स्कूल-स्टाफ उपस्थित था।

अच्छा इंसान कैसे बनें?

जोधपुर, 16 नवंबर। साध्वी यशोधरा ने रा.उ.मा. विद्यालय मंडी एवं फूलचंद बालिका माध्यमिक विद्यालय, सिंहपोल में अणुव्रत समिति जोधपुर के तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम की शुरुआत करते हुए विद्यार्थियों को, 'जीवन में लक्ष्य निर्धारण एवं शिक्षित होने के साथ-साथ एक अच्छा इंसान कैसे बने?' विषय पर संबोधित किया। साध्वीश्री ने अणुव्रतों के छोटे-छोटे पांच संकल्पों के माध्यम से जीवन को सफल बनाने हेतु भी प्रेरित किया। उपस्थित विद्यार्थियों ने व्यसनमुक्ति के संकल्प लिये।

स्कूल की प्रधानाध्यापिका मधु दूगड़ ने साध्वीश्री के अपने विद्यालय आगमन पर आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन महेन्द्र मेहता ने किया।

अणुव्रत निबन्ध प्रतियोगिता

अहमदाबाद, 9 नवंबर। गुजरात राज्य अणुव्रत समिति द्वारा ''सदाचार की पुनः स्थापना कैसे?'' विषयक निबन्ध प्रतियोगिता आयोजित की गयी। डॉ. साध्वी पीयूषप्रभा ने कहा चारों तरफ शिक्षा, चिकित्सा में भ्रष्टाचार व खाद्य-पदार्थों में मिलावट से जनता बहुत परेशान है। भ्रष्टाचार की जड़ें इतने पांव जमा रही हैं कि वह अपने आप में शिष्टाचार का स्थान ले रही हैं। आचार्य तुलसी के शब्दों में 'सुधरे व्यक्ति समाज व्यक्ति से राष्ट्र स्वयं सुधरेगा।' की दृष्टि अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है साध्वीश्री ने आगे कहा आज आवश्यकता इस बात की है कि अच्छे आचरण, नैतिकता, संयम, अणुव्रत के प्रति जनचेतना जगाएं। सदाचार ही विकास का राजमार्ग प्रशस्त करता है। प्रतियोगिता में प्रथम नीलम राजपुरोहित, द्वितीय गजल जैन एवं तृतीय स्थान पर डिम्पल श्रीमाल रही।

गुजरात राज्य अणुव्रत समिति के अध्यक्ष जवेरीलाल संकलेचा, उपाध्यक्ष नानालाल कोठारी, कोषाध्यक्ष नटवर कोठारी तथा गजेन्द्र भंडारी ने गुजरात राज्य अणुव्रत समिति की तरफ से पुरस्कार वितरित किए। संयोजन गुजरात राज्य अणुव्रत समिति के मंत्री अशोक दूगड़ ने किया। कार्यक्रम की सफलता में छीतरमल मेहता का विशेष सहयोग रहा। राजस्थान स्कूल के प्रधानाचार्य का निबन्ध जांचने हेतु विशेष आभार प्रकट किया गया।

अणुव्रत नैतिकता का कल्पवृक्ष

लाडनूं, 10 नवंबर। अणुव्रत समिति के तत्वावधान में आयोजित अणुव्रत प्रतिभा सम्मान समारोह को संबोधित करते हुए साध्वी कमलश्री ने कहा अणुव्रत आंदोलन मानवीय चेतना का आंदोलन है। कल्पवृक्ष रूपी इस नैतिकता के आंदोलन में सहभागी बनकर व्यक्ति देश व समाज के स्वस्थ निर्माण में सहयोगी बन सकता है।

समिति के मंत्री डॉ. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी ने कहा अणुव्रत जीवन विकास का माध्यम है। अणुव्रत को धारण कर व्यक्ति जीवन में व्याप्त बुराइयों का शमन कर सकता है। साध्वी जिनरेखा ने कहा अणुव्रत से व्यक्ति का आंतरिक व बाह्य व्यक्तित्व मजबूत बनता है।

इस अवसर पर अणुव्रत समिति द्वारा आयोजित 'जन लोकपाल विधेयक की स्वीकार्यता' विषयक निबन्ध प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। साथ ही सांस्कृतिक कार्यक्रम में सुंदर प्रस्तुति के लिए प्रिया गुनेचा, पूजा बैद, चांदनी धारीवाल, खुशबू सुराना, शीतल डूंगरवाल, अंकिता सुराना व नेहा बैद को सम्मानित किया गया। अहिंसा एवं शांति विभाग की सहायक आचार्य डॉ. वंदना कुंडलिया को साहित्यिक सेवाओं के लिए विशेष रूप से सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम में विजय सिंह बरमेचा, सुशील दूगड़, जे.पी. सिंह, डॉ. गुगल दाधीच, पुष्पा मिश्रा, शरद जैन, नंदलाल वर्मा, राजेश नाहटा, राजकुमार सैनी, सीताराम टेलर, जगमोहन माथुर इत्यादि ने अपने विचार रखे। प्रारम्भ महिला मंडल की बहनों द्वारा मंगल संगान से हुआ। संचालन वीरेन्द्र भाटी मंगल ने किया।

व्यसनमुक्ति पर विशाल रैली

सायरा, 5 नवंबर। अणुव्रत समिति सायरा द्वारा अध्यक्ष मीठालाल भोगर की अगुवाई में राजकीय सीनियर उच्च माध्यमिक विद्यालय तथा रा.मा. बालिका विद्यालय लहरीदेवी भोगर राजकीय उच्च बालिका विद्यालय, आदर्श प्राथमिक विद्यालय सायरा के करीब तीन सौ छात्र-छात्राओं द्वारा विशाल नशा-मुक्ति रैली का आयोजन किया गया। सभा भवन से प्रारंभ हुई रैली महावीर मार्ग, सिंघवी की सेरी, महावीर भवन, सुयारों की सेरी, पुरानी बैंक से बस स्टैन्ड होते हुए सभा भवन में साध्वी लब्धिश्री के सान्निध्य में सभा के रूप में परिवर्तित हो गयी। साध्वीश्री ने व्यसनमुक्ति की जानकारी देते हुए संकल्प करवाये। मीठालाल भोगर, राजेन्द्र गोरवाडा ने भी सभा को संबोधित किया। सभी शिक्षकगण उपस्थित थे। रैली का संयोजन बाबूलाल कावडिया ने किया। 'अणुव्रत सेवी' जसराज जैन ने अणुव्रत पर विचार रखे।

अणुव्रत लेखक पुरस्कार-2010

दिल्ली। शासन भक्त स्व. हुकमचंद सेठिया जलगांव (श्रीडूंगरगढ़) की पुण्य स्मृति में सुपुत्र सर्वश्री ताराचंद, दीपचंद, ठाकरमल सेठिया के सौजन्य से अणुव्रत महासमिति द्वारा प्रतिवर्ष दिये जाने वाले अणुव्रत लेखक पुरस्कार की घोषणा के तहत अणुव्रत लेखक पुरस्कार-2010 हरियाणा के राजकवि 'साहित्य वाचस्पति' प्रो. उदयभानु हंस को अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में आयोजित आगामी कार्यक्रम के अवसर पर प्रदत्त किया जायेगा। प्रो. हंस को इससे पूर्व भी कई गणमान्य सम्मान मिल चुके हैं। अणुव्रत महासमिति परिवार की हार्दिक बधाई।

अणुव्रत अनुशास्ता के नीति-निर्देशों की हमें अनुपालना करनी है–

अणुव्रत अनुशास्ता तेरापंथ धर्मसंघ के अधिष्ठाता भी हैं। तेरापंथ अणुव्रत आन्दोलन का एक सबल वाहक है। अणुव्रत का मार्ग सहज-शालीनता और सादगी का है। धर्मसंघ के लिए विशेष प्रेरणा के रूप में अणुव्रत अनुशास्ता द्वारा घोषित, नीचे दिये गये नीति-निर्देशों की हम पूरी जागरूकता के साथ अनुपालना करें, यह अनिवार्य है :

"● स्वागत का कार्यक्रम जहां तक हो सके रात्रि में रहे तो अच्छा रहे। विहार कर पहुंचते हैं, फिर स्वागत और फिर व्याख्यान, काफी लंबा समय हो जाता है। स्वागत की रस्म यथा सम्भव रात्रि के समय हो, ताकि व्याख्यान की खुराक आपको ज्यादा मिल सके।

- हम तो सिम्पल आदमी रहना चाहते हैं। जुलूस होता है। कई बार लोग उत्साह में हाथी, घोड़ा, ऊंट आदि लाते हैं, हमारा स्वागत करते हैं। हम चाहते हैं कि हमारे जुलूस में आप हाथी, घोड़ा, ऊंट आदि नहीं लाएं। अन्य समाज के लोगों को भी आप इस दृष्टि से समझाएं। हमारे जुलूस के निमित्त उन जानवरों को भी कष्ट क्यों पड़े?
- हमारे स्वागत में बैण्ड-बाजा न लाएं और न उसके लिए किसी को प्रेरित करें। लोग आएं, मिलें, स्वागत में संभागी बनें, अणुव्रत की बात समझें और स्वीकारें, यह तो ठीक है; किन्तु बैण्ड-बाजा लाना उचित नहीं है।
- ठिकाणे में, पाण्डाल में, साध्वियों के प्रवास स्थल में छोटे-छोटे बल्ब जलाकर लाइटिंग की जाती है। उसकी भी अपेक्षा नहीं है। जरूरत हो तो आप लाख खर्च करें किन्तु जिसकी अपेक्षा नहीं है, हम जिसे महत्त्व भी नहीं देते हैं, उसके लिए आप अनावश्यक खर्च क्यों करें?
- एक बात हमने निर्णीत की है कि हमारे साधु-साध्वियां और समण-समणियां काम करते हैं, किन्तु उनके दैनन्दिन व्याख्यान की न्यूज समाचार पत्रों में प्रकाशित न हो। कार्यक्रम भी हो तो एक सप्ताह में एक से ज्यादा कार्यक्रम की न्यूज प्रकाशित नहीं होनी चाहिए।
- लोग इतने भक्तिमान हैं कि हम जाते हैं तो रास्ता अच्छा बनाने के लिए मार्ग में सचित्त मिट्टी बिछा देते हैं। हमारे लिए वह एक समस्या जैसी हो जाती है। आप लोग तो ऐसा भक्ति-भावना से करते हैं; किन्तु हम सचित्त मिट्टी पर जा नहीं सकते। पूर्व में अनेक बार कई जगह इस कारण से मैं जा नहीं सका; अतः सचित्त मिट्टी मार्ग में न बिछाएं।
- आप लोग प्रचार-प्रसार करते हैं। उसके लिए पोस्टर, बैनर, होर्डिंग आदि लगाते हैं। हमने यह निर्णय किया है कि किसी का कटआउट न हो, आचार्यों का भी खड़ा कटआउट न हो। आधा हो तो आपत्ति नहीं। साधु-साध्वियों का तो होना ही नहीं चाहिए। बैनर, पोस्टर, कार्ड आदि में यदा-कदा कहीं-कहीं भाषा आदि की त्रुटि हो जाती है। आपकी सुविधा के लिए ऐसी सामग्री छपाने से पूर्व आप संतों से परामर्श कर लिया करें।
- कई बार बहनें कलश लेकर आती हैं। किन्तु; सचित्त नारियल का प्रयोग नहीं होना चाहिए।
- विशेष कार्यक्रमों के अतिरिक्त टेबलों का मंच नहीं बने। हमें नीचे बैठने में कोई दिक्कत नहीं है, कोई संकोच नहीं है। आपका श्रम भी बचेगा और हमारे अनुकूलता रहेगी। सहज बना हुए बरामदा, चौकी आदि का मंच के रूप में उपयोग किया जा सकता है।

मूल बात यह है कि हमारी यात्रा में सादगी रहे। धार्मिक उत्साह तो अच्छा है; किन्तु अर्थ के अनावश्यक उपयोग से बचना चाहिए, अनावश्यक आडम्बर से भी बचना चाहिए। मैं तो चाहता हूं कि ज्यादा से ज्यादा त्याग और संयम बढ़े। बाह्य कार्यों में तो आवश्यक और अनावश्यक का विवेक हर घड़ी आवश्यक है।"

बाबूलाल गोलछा